आडम्बर

6



नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

आडम्बर

(मैथिली कथा-संग्रह)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

प्रकाशक

गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उफरदाहा

मो.-8986261756

Aadambar, Maithili Short Stories by **Nand Kumar Mishra 'Nand'**, Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, 2017, **₹ 150/-**

प्रकाशक : **गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच**
उफरदाहा, दरभंगा (बिहार)

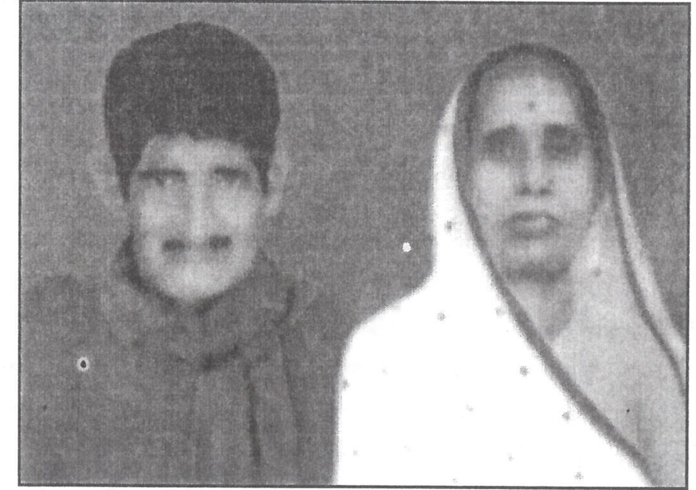
प्रथम संस्करण : वर्ष 2017

पोथी प्राप्ति स्थान : विद्यार्थी पुस्तक भंडार
सकरी, दरभंगा

सहयोग राशि : **₹ 150.00 (एक सय पचास टाका) मात्र**

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

समर्पण



पूज्यवर पिताजी **स्व. श्री बैद्यनाथ मिश्र**
एवं
पूजनीया माताजी **स्व. श्रीमती गोसाउनि देवीक**
चरण कमलमे
सादर समर्पित ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

दू शब्द

श्रीनन्द कुमार मिश्र अंग क्षेत्रमे मिथिला-मैथिल-मैथिलीक ध्वजवाहकक रूपमे प्रतिष्ठित छथि । मैथिलीक विकास-प्रकाशक हेतु निरन्तर चिन्तनशील ई मनीषी नहि केवल अपन आन्दोलनी व्यक्तित्वक कारणे प्रख्यात भेलाह अछि अपितु अपन स्वर्णलेखनीक द्वारा विविध विधामे साहित्य-सर्जनं करैत मैथिलीक भण्डारकेँ सम्पुष्ट करैत रहलाह अछि । गीत ओ गजलक संग मैथिली साहित्य क्षेत्रमे प्रविष्ट ई एकान्त साधक आधुनिक मैथिली गद्यक एक गोट सबल रचनाकारक रूपमे प्रस्तुत भेलाह अछि । हिनक तीन गोट उपन्यास क्रमशः **सुजाता, गुदड़ीक लाल** ओ **अनठीया कुकुर** प्रकाशित छनि । मैथिली कथाक क्षेत्रमे हिनक प्रारंभिक अवदान थिकनि **गाम-घर** कथा संग्रह । हिनक व्याख्यात्मक निबन्ध ग्रन्थ **महारानी कैकेयी** सेहो प्रकाशित भ' मिथकीय तथ्यक युगजीवनक अनुरूप विवेचन प्रस्तुत करैत अछि । सम्प्रति ई अपन दोसर कथा संग्रह **आडम्बर** लऽ कऽ प्रस्तुत भऽ रहल छथि जाहिमे हिनक रचनात्मक शक्तिक प्रौढ़ता ओ सामाजिक-राजनीतिक चेतना प्रखरताक संगहि मानवीय मूल्यक पक्षधरता ओ गंभीर मनोवैज्ञानिक दृष्टि प्रक्षेपित भेलनि अछि । एहि कथा संग्रहमे स्वातंत्र्योत्तर मिथिलाक लोकजीवनमे होइत परिवर्तनक विभिन्न कारक तत्त्वक संगहि विभिन्न विषय ओ परिस्थिति सभसँ सम्बद्ध, जीवनमे

घटित घटना सभकेँ यथार्थवादी दृष्टिकोणसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहि संग्रहक कथा सभमे सामाजिक-राजनीतिक सरोकारो अछि, बहुआयामी चिन्तन अछि, बौद्धिकताक पुट अछि, तार्किकता ओ स्वाभाविकताक संगहि मर्मस्पर्शी प्रतिबद्धता सेहो अछि ।

आचार्य मम्मट काव्यक प्रयोजनक व्याख्या करैत कहने छथि जे काव्य यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान, आत्मकल्याण ओ कान्तासम्मित उपदेशक योजना हेतु लिखल जाइत अछि । आडम्बर कथा-संग्रहक कथा सभमे एहि प्रयोजन सभक परितः सत्साहित्यक रचनाक हेतु कथाकार प्रवृत्त बुझना जाइत छथि । कथाकार अपन कथा सभमे वर्तमान समाजक विसंगति ओ विडम्बना सभकेँ उजागर करैत मानव जीवनकेँ नीकसँ नीक बनयबाक उत्कट इच्छा केँ शिरोधार्य कयने छथि आ ओहि समस्त वस्तुकेँ लांछित करबाक मार्गदर्शन कयने छथि जे विकृत अछि, अवांछित अछि आ प्रदूषित अछि ।

आडम्बर कथासंग्रहक कथा सभ हमरा लोकनिकेँ प्रत्येक अनुच्छेदमे सोचबाक हेतु प्रेरित करैत अछि । समय आ समाजसँ सोझ-सोझ संवाद करैत ई कथा सभ विकृत वास्तविकताक चित्रण तँ करैत अछि मुदा आदर्श मानवताक दिस उन्मुख होयबाक प्रेरणा सेहो दैत अछि । व्यापक एवं गंभीर संवेदना, कल्पनाशीलता ओ अनुभवजन्यताक कारणे हिनक कथा सभ विश्वसनीय एवं प्रभावी अछि आ पाठककेँ पुनः चिन्तनक हेतु प्रेरित करैत अछि ।

प्रस्तुत संग्रहमे बीस गोट कथा अनुगुम्फित भेल अछि । अधिकांश कथा सभ विभिन्न सामाजिक कुरीतिक दुष्परिणामक विरुद्ध सुधारवादी दृष्टिकोणसँ लिखल गेल अछि । आडम्बर जे संग्रहक पहिले कथा थिक आ रचनाकारक अनुसार संग्रहक प्रतिनिधि कथा सेहो थिक जकर आधार पर संग्रहक नामकरण भेल अछि, श्राद्धकर्ममे होइत अपव्यय पर व्यंग्यात्मक दृष्टिसँ लिखल गेल अछि । लोक अपन पूर्वजक श्राद्धमे तँ पर्याप्त खर्च कऽ कऽ समाजमे अपन सामर्थ्यक प्रदर्शन करैत छथि मुदा जीवितमे ओही पूर्वजक प्रति अनासक्त रहैत छथि । लोकजीवनमे भौतिकता ओ प्रदर्शन ततेक प्रभावी भ' गेल अछि जे अपन सुखक लेल लोक पारिवारिक

दायित्वबोधसँ च्युत भेल जा रहल छथि । एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार ई संदेश देबाक हेतु प्रतिबद्ध बुझना जाइत छथि जे वस्तुतः जीवनकालमे माता-पिताक प्रति कयल सेवे हुनक उद्धारक मानल जा सकैत अछि नहि कि श्राद्धकर्ममे व्ययपूर्वक कयल गेल धार्मिक अनुष्ठान ।

'रोपल गाछ बबूर' सेहो यैह शिक्षा प्रदान करैत अछि जे अशक्य माता-पिताक सेवा नहि कयने ओकर प्रभाव अगिला पीढ़ी पर यथावत् पड़ैत छैक आ अशक्य भेला पर ओहि पीढ़ीकेँ सेहो तेहने प्रतिदान भेटैत छैक ।

एही तरहें कथाकार कतहु दहेज प्रथाक कुप्रभावक परिणामक प्रदर्शन करैत छथि तँ कतहु पारिवारिक जीवनमे त्याग भावनाक वैशिष्ट्य केँ परिलक्षित करबैत छथि । कतहु ओ बेगारी प्रथा पर कशाघात करैत देखि पड़ैत छथि तँ कतहु दलित उत्पीड़नक विरुद्ध लोकचेतनाकेँ जगबैत देखि पड़ैत अछि । समग्रतामे हिनक सभटा कथा आदर्शोन्मुख यथार्थक बानगी सभकेँ प्रस्तुत करैत देखि पड़ैत अछि । हिनक कथा सभमे ग्राम्य जीवनक बहुरंगी चित्र सभ देखि पड़ैत अछि आ सामान्यतः हिनक पात्र ओ परिवेश, कथ्य ओ तथ्य ग्रामाञ्चलेसँ सम्बद्ध अछि ।

श्रीमिश्रजीक एहि संग्रहक अधिकांश कथा वर्णनात्मक शैलीमे लिखल गेल अछि । किछु कथा तँ स्पष्टतः गप्प शैलीमे प्रस्तुत भेल अछि मुदा सर्वत्र कथाकार अपन कथ्यक प्रामाणिकताक हेतु तार्किकताक संग उपस्थित बुझना जाइत छथि । वैचारिक वैशिष्ट्य ओ सामाजिक साहचर्य सँ पूर्ण हिनक कथा सभमे स्वस्थ जीवन-दृष्टि आ सामाजिक विवेकक प्रस्फुटन भेलनि अछि । सामाजिक सम्बन्धक प्रति कथाकार सभ ठाम सजग देखि पड़ैत छथि । औत्सुक्य हिनक कथा सभक अन्यतम विशिष्टता थिक जाहि कारणे समस्त कथा पठनीय, मननीय तँ अछिये, लोकरंजन ओ लोकशिक्षणक विशिष्ट साधन सेहो । कथाकारक एहि उत्कृष्ट संग्रहक हेतु हम हिनक सारस्वत सम्बर्द्धना-समभ्यर्चना करैत छियनि ।

योगानन्द झा

लेखकीय

प्रिय पाठक गण,

अपना समाजक एकटा विचित्र विडम्बना अछि । समाजक तथाकथित दबंग लोक कोनो नव काजक वा प्रगतिशील काजक विरोध ई कहि क' करैत छथि, जे एहिसँ हमरा पुरखाक मर्यादा नष्ट होइत अछि, अमुक काज अदौसँ होइत आबि रहल अछि आ अमुक नहि । तेँ एहिमे कोनो बदलाओ करब उचित नहि । जखन कि उचित तँ ई अछि जे कोनो काज करबासँ पहिने ओकर नीक आ अधलाह दुनू पक्ष पर विचार करबाक चाही । जाहि कार्यसँ वेशी लोककेँ लाभ होइछ ओकरा अनबाक चाही । मुदा ओ लोकनि एकरा अपना वर्चस्व पर खतरा बुझैत छथि । समाजक बीच अफवाह पसारैत छथि, जे जे काज हमर बाप-दादा नहि कयलन्हि, ओकरा हम अपना जिबैत नहि होम' देब । युग बदलैत अछि । ओकरा संगे बहुत किछु बदलैत अछि, यथा खान-पान, रहन-सहन, पहिरब-ओढ़ब आदि । लोककेँ ओकर सदुपयोग करबाक चाही । इएह समय केर आवश्यकता अछि । अवसर बेर-बेर नहि भेटैत छैक । मुदा लोक लकीरक फकीर बनल बैसल छथि । खासक' ई परिपाटी ग्रामीण क्षेत्रमे अधिक अछि । शहरमे बहुत बदलाओ भेल अछि । मुदा गाममे केओ बाजत ई काज तँ हमर बाप-दादा नहि कयलन्हि, तखन हम कोना करू । तखन अहाँ

चापाकलक जल किएक पीबैत छी ? टी.भी. किएक देखैत छी ? मोटर साइकिल वा कार पर किएक चढ़ैत छी ? अहाँक बाप-दादा तँ इनारक जल पिबैत छलाह, बैलगाड़ीक सबारी करैत छलाह, महँफा पर चढ़ैत छलाह । जहिना युगक संग सब किछु बदलि गेल तहिना हमरा सभक ओहिठाम जे आडम्बर अछि, ओकरोमे बदलाओ होयब आवश्यक अछि । यथा मुंडन उपनयन, विवाह, श्राद्ध आदिमे अनावश्यक खर्च कयल जाइत अछि । अनावश्यक एहि लेल जे जिनका सामर्थ्य छनि हुनका लेल तँ कोनो गप्प नहि, मुदा जिनका सामर्थ्य नहि छन्हि, ओहो देखाउँसमे वा समाजक दबाबमे एतेक वृहत् आयोजन करैत छथि जकर कोनो आवश्यकता नहि छैक । परम्पराक अनुसारे मुंडनमे भगवती वा कुल देवताकेँ पातरि देबाक विधान अछि । कतेक ठाम बिना कोनो दिन तकने साओन मासमे घड़ी पावनि केर अवसर पर रात्रिमे बच्चाक मुंडन करयबाक प्रचलन अछि । एहिमे कोनो प्रकारक ताम-झाम नहि होइछ । हमरा दृष्टिञे ई हमरा समाजक लेल अनुकरणीय होयबाक चाही । उपनयनमे आठ गोट ब्राह्मण आ श्राद्धमे ग्यारह गोट ब्राह्मणक भोजनसँ उद्धार भ' जाइत छैक, मुदा एकर पालन कयनिहार कतेक गोटे छथि ? परम्परागत उपनयनक मड़बामे मुञ्जक डोरीसँ चौबान्ह देब आवश्यक अछि । मुदा जाहि ठाम काँटी ठोकि क' मड़बा बनाओल जा रहल हो, तँ ओहि मड़बाक की औचित्य अछि ? एहिसँ नीक कोनो देव स्थानमे ई कार्य सम्पन्न कराओल जाय । ई कतेक गोटेक इच्छा सेहो छन्हि, मुदा समस्या अछि जे आगू बढ़त तँ के ? जे आगू बढ़त ओकर लोक एतेक ने खिधांश करत, जे ओहो उबियाक' भागि पड़ायत । ओना तँ विवाहमे तिलक लेब अनुचितक संग गैरकानूनी सेहो अछि मुदा ओ व्यक्ति जिनका पढ़लि-लिखनि आ कमौआ कनियाँ भेटैत छन्हि, हुनकहुँ तिलक चाही आ सेहो कमोवेश नहि, अहगर सँ । हम तँ कहब जे एहन कन्याक पिताकेँ तिलक लेबाक चाही वा एहन वरक विवाहक वहिष्कार कयल जयबाक चाही । आइ-काल्हि धिया-पूता सँ जे लोक अपेक्षा करैत अछि, से नहि भ' पबैत अछि । एहन ककरो अपना माय-बापक संग नहि करबाक चाही, मुदा एहि लेल केवल धिये-पूताक दोष देब उचित नहि । ओ जाहि पाठशालामे पढ़लक, ओकरे ने अनुसरण करत ।

उपरोक्त परिपेक्ष्यमे गाम-घरमे घटित घटनाक आधार पर कुल बीस गोट कथाक संकलन-एहि पोथीमे कयल गेल अछि । आशा करैत छी जे पाठक लोकनिकेँ एहिसँ किछु प्रेरणा भेटतन्हि आ ओ समाजमे बदलावक प्रयास करताह । कतेक लोक एहन करितहु छथि। कतेक तँ प्रयासमे विफल भ' गेला पर भागि पड़ाइत छथि आ कतेक गोटे बेर-बेर प्रयत्न करैत छथि । सफलता हुनके भेटितन्हि जे निरंतर प्रयासरत रहताह । कतेक कठिन काज छल, धरती पर गंगाक अवतरण करायब, मुदा निरंतर प्रयासे भगीरथ ओहिमे सफल भ' पओलन्हि । कदाचित् जँ एकाध बेर प्रयास क' क' छोड़ि दितथि तँ ई सम्भव नहि भ' पबैत । तेँ लोककेँ नीक काज करबामे प्रयासरत रहबाक चाहियनि । कहिओ ने कहिओ ओकर पारितोषिक भेटबे करनि ।

एहि पोथीक प्रकाशनमे रचनात्मक सहयोगक लेल अनुजवत मित्र डा. योगानन्द झा, पूर्व लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड आ प्रख्यात साहित्यकार, समीक्षकक संग डा. भुवनभूषण, अधिकारी, देना बैंक, हैदराबादकेँ सेहो धन्यवाद दैत छियन्हि । मार्गदर्शकक रूपमे प्रख्यात कथाकार डा. अमरनाथ, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर दर्शन शास्त्र, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक प्रति आभार व्यक्त करैत छियनि । संगहि गोसाउनि-बैद्यनाथ स्मृति मंच उफरदाहाक सभ सदस्यकेँ धन्यवाद दैत छियैन्हि, जनिक रचनात्मक-सृजनात्मक सुझाव, सुविचार हमरा एहि दिशामे आगू बढ़बाक लेल प्रेरित करैत रहल अछि। एहि पोथीमे घटना क्रम, पात्र एवं स्थान सब काल्पनिक अछि । कदाचित् जँ किनकहुँ घटनासँ पोथीक अंश मिलैत हो तँ एहि लेल क्षमाप्रार्थी छी ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'
दहौड़ा (सकरी) दरभंगा
अनन्त चतुर्दशी
मो.-8986261756

कथा-क्रम

●

आडम्बर

आइ साकेतक बाबाक श्राद्ध थिकन्हि । घाट-बाटक लेल फुलही थारी-लोटा, पैघ-पैघ बर्तन-बासन सेहो नीक कोटिक आ नव नव ओछाओन-बिछाओन, पलंग आदि कीनल गेल अछि । भोजक तँ गप्पे जुनि पुछू । सौजनक संग आठ गाम जयबार सेहो । सुधाकरजी सौजनमे अपन असमर्थता देखौने छलाह । ताहि पर माइञ्जन बाजल छलाह, "जँ अहाँ सनक लोक सौजन नहि नोतत तँ दोसर ककर सामर्थ्य छैक । एहने, एहने काजमे ने बाइसो गामक लोककेँ एक ठाम बैसिक' भोजन करबाक अवसर भेटैत छैक ।" सुधाकरजी किछु बजितथि, मुदा माइञ्जन पुनः बजलाह, "सुधाकर बाबू ! हम बुझैत छी अपनेक विवशता । अपनेकेँ हिआउ नहि भ' रहल अछि । अपनेक लेल ई प्रथम कार्य अछि । हम एहन-एहन कतेको कार्य करा चुकल छी । अपनेकेँ कनेको चिन्ता करबाक आवश्यकता नहि अछि । सबटा काज भ' जयतैक ।" ई दृश्य देखि साकेतक हृदय द्रवित भ' रहल छलैक । ओकरा आँखिसँ दहो-बहो नोर चूबि रहल छलैक । लोक सब बुझैत छलैक जे साकेत बाबाक व्यथामे कानि रहल अछि । सब केओ ओकरा सांत्वना द' रहल छलैक । जुनि कानह, ई तँ विधिक विधान थिक । ई तँ एक ने एक दिन सभक संगे होइतहिं छैक । किछु अंश धरि ई उचित सेहो छल । किएक तँ बाबा सबसँ

बेसी साकेतकेँ मानैत छलथिन । ओकर खोज-पुछारि बेसी करैत छलथिन आ करितथिन किएक नहि । साकेत हुनकर तेसर पीढ़ीक सबसँ पैघ उत्तराधिकारी छलनि । जखन साकेतक जन्म भेल छलैक, तँ बाबा सबसँ बेसी खुशीसँ नाचल छलाह । कतेक गोटेकेँ तँ किछु क्षणक लेल आशंका भ' गेलनि जे बाबा कदाचित पागल त' ने भ' गेलाह । साकेत सेहो जखन गाम अबैत छलाह, तँ बाबाक लेल किछु ने किछु अवश्य अनैत छलाह । से देखि बाबा अति प्रसन्न होइत छलथिन आ बजैत छलथिन, "एकर कोन आवश्यकता छलैक । तोरा लोकनिकेँ देखि ओहुना मन गद्‌गद्‌ भ' उठैत अछि ।" बाबाक एहन प्रेम छलनि साकेतक प्रति, मुदा साकेतक आँखिक नोर तँ काल्हि आर आजुक व्यवहार देखिक' बहि रहल छलैक । बाबा यावत्‌ जिबैत रहलाह, टिनही थारी आ लोटा लऽकऽ भोजन करैत रहलाह । ओहि थारीक कान कतेक ठाम फाटल छलैक से गनब संभव नहि आ लोटा, जँ भोजनमे कोनहु कारणसँ बिलंब भ' गेल तँ पुनः जलक याचना आवश्यक । भोज्य सामग्रीक थाह सेहो एहीसँ लागि गेल होयत । ओकर वर्णन करब उचित नहि । मुदा बाबाक ऊपर एकर कोनो असरि नहि । एकर दूटा कारण छलैक । पहिल ई जे बजलासँ भ' सकैत छलनि जे जे भेटैत छलनि, ताहू पर ने आफत आबि जाइनि । दोसर गप्प जे बाबाक आगाँमे जे किछु आबि जाइत छलन्हि, तकरा ओ भगवानक प्रसाद बूझि, प्रणाम क' पाबि लैत छलाह ।

लोक कतेक स्वार्थी होइत अछि । अपन कुकृत्यकेँ झँपबाक लेल कतेक तरहक आडम्बर करैत अछि । बाबाकेँ सुतबाक लेल तीन टांगक खाट देल गेल छलनि । एक दिस पौआक बदलामे चारिटा ईंट लगा देल गेल छलनि आ ओछाओनसँ विचित्र दुर्गन्ध बहराइत छलनि । साकेत आ ओकर छोटका कका राजेश बाबू जखन गाम अबैत छलथिन तँ सबसँ पहिने बाबाक ओछाओनकेँ सर्फमे धो क' सुखा दैत छलथिन। बाबा कहैत छलाह, "एतेक परिश्रम किएक करैत छह । हमरा तँ एहनेमे सुतबाक आदत पड़ि गेल अछि ।"

एक बेर साकेत आ राजेश बाबू दुनू मिलि क' बाबाकेँ एकटा खूब सुन्नर चौकी बनबा देलथिन आ नव ओछाओन सेहो कीनि क' देलथिन । से देखि सब देयादिनीक मन ललचाय लगलन्हि । ओना हुनका सबकेँ भगवान कोनो वस्तुक अभाव तँ नहि देने छलथिन्ह मुदा लोभक तँ कोनो सीमा होइछ नहि । बाबासँ ओ नवका ओछाओन हासिल करबाक कोनो तँ बहन्ना चाही । केओ ने केओ तँ ओकरा हथिया लेबे करितनि । तेँ सब गोटे प्रयासमे लागि गेलीह । सब भगवानसँ मनाबए लगलीह जे पहिने हमर पाहुन आबथि तँ पहिने हमर ।

बाबाकेँ आठो दिन ओहि ओछाओन पर सुतला नहि भेल छलनि कि एक दिन साकेतक मझिली काकी रामपुर बालीकेँ एकटा पाहुन आबि गेलथिन्ह । पाहुन तँ छलाह लगे-पासक, चाहितथि तँ भेट-घाँट क' आपस सेहो जा' सकैत छलाह, मुदा बाबाक चौकी हथिअयबाक दोसर अवसर भेटत वा नहि से जानि रामपुरवाली आग्रहपूर्वक ओहि पाहुनकेँ रोकि लेलनि । खूब नीक जकाँ भानस-भात कयलनि । रंग-बिरंगक तीमन-तरकारी बनल । पाहुनकेँ भोजन कराओल गेलनि । आइ रामपुरवाली अत्यंत हर्षोल्लसित छथि । आइ ओ सब देयादिनीकेँ पछारि देलनि । जखन सुतबाक बेर भेलैक तँ रामपुरवाली बाबाक लग गेलीह आ कहलथिन, ''बाबूजी ! घरमे एकटा पाहुन आयल छथि । हुनका सुतबाक लेल ओछाओन साफ नहि अछि । जँ बढ़ियाँ ओछाओन नहि देबनि तँ ओहिसँ घरक बदनामी होयत । तें जँ ई अपनवला ओछाओन दू दिनक खातिर दितथि तँ ओहि पर पाहुनकेँ सुता दितयनि ।" बाबा सहर्ष तैयार भ' गेलाह जेना कि ओहो एकरे प्रतीक्षा क' रहल होथि । बाबाक लेल तुरंत ओएह तीन टांगबला खाट आ ओएह गेन्हायल केथरी आबि गेलनि जकर उपयोग करबाक बाबा अभ्यस्त छलाह । एकर आभास बाबाकेँ भोजनहि बेरमे भ' गेल छलनि । नीक-नीक तीमन-तरकारीक स्वादेसँ बुझा गेल छलनि । बाबाक संगे ई कोनो पहिल घटना नहि भेल छल । एहिसँ पूर्वहु एहन कतेको बेर भ' चुकल छलनि । मुदा बाबा सेहो कहिओ एकर प्रतिकार नहि कयलनि । ओ बजैत छलाह, ''सब दिन होत न एक समाना'' आ ''जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए'' ।

साकेत आ राजेश ई दृश्य देखि अचंभित छलाह । यावत् बाबा जिबैत छलाह केओ हालो-चाल पुछनिहार नहि छलन्हि । मुदा आइ हुनकर श्राद्धक इन्तजाम कतेक श्रद्धापूर्वक कयल जा रहल अछि । साकेत आ राजेश दुनू गोटे आपसमे विचार कयलनि । श्राद्ध कर्म तँ केराक डमखोइया पर सेहो होइत अछि । तखन ककरहुँ पितरिया तँ ककरहु फुलही थारी-लोटा देबाक की प्रयोजन ? ई सब किछु फूसिक बड़ाइ लेल कयल जाइत अछि । साकेत श्राद्धक विरोधी नहि छथि, मुदा ओ एहि आडम्बरक घोर विरोधी छथि । हुनका विचारें एहिमे कमसँ कम खर्चा कयल जयबाक चाही । एहिमे यथासाध्य दरिद्रनारायणकेँ भोजन करयबाक चाही । ओहन लोककेँ भोजन करयबाक चाही जे अहाँके कहिओ भोजन नहि करा सकथि । मुदा एहि ठाम तँ लोक ओकरहि खोआबैत अछि, जकर सब दिनसँ खा आयल अछि । वा ई बुझू जे एक तरहें पैंच सधा रहल अछि। देखाउँसमे लोक एहि परम्पराकेँ बहुत बढ़ा-चढ़ा देलक अछि ।

ओही गाममे एक व्यक्ति छलाह । नाम छलनि यदुनंदन । यदुनंदन केर माय चारि वर्षसँ खाट पकड़ने छलथिन्ह । यदुनंदन दुनू प्राणी हुनक खूब सेवा कयलथिन । बुझू जे मायकेँ तरहत्थी पर रखने छलाह । हुनक एक आवाज पर दुनू प्राणी ठाढ़ भ' जाइत छलाह । दवाइ-वीरोमे सेहो कोनो कोताही नहि कयलथिन । गामक लोक खास क' स्त्रीगण लोकनि यदुनंदन दुनू प्राणीक खूब बड़ाइ करैत छलीह । सौंसे गाममे यैह चर्चा होइत छल जे बेटा-पुतहु हो तँ यदुनंदन सनक । जखन बूढ़ी स्वर्गीय भ' गेलीह, तखन हुनकर दाह-संस्कारोपरान्त यदुनंदन गामक लोकक बैसार कयलनि आ पुछलथिन, "एहिमे कोना की कयल जयबाक चाही । हमर स्थिति देखिक' विचार देल जाओ'' । ग्रामीण जे सलाह देलथिन, ताहिमे यदुनंदन सक्षम नहि छलाह । ओ अपन स्थिति स्पष्ट कयलथिन । ओ बजलाह, ''हमरा मायक सेवा-सुश्रूषा आ दवाइ-वीरोमे ओकातिसँ फाजिल खर्च भेल अछि । तें हम श्राद्धमे बेसी खर्च नहि क' सकैत छी । किछु लोक यदुनंदनक समर्थन कयलनि आ किछु विरोध सेहो । बूढ़ीक श्राद्ध कर्म एकदम सादा-सादी भेलनि । ने बेसी भोजे-भात आ ने बेसी दाने-दक्षिणा ।

गामक किछु लोक तँ यदुनंदनक मखौल उड़ौलन्हि मुदा यदुनंदन पर एकर कोनो असरि नहि भेलनि । ओ बजैत छलाह, ''हम जिबैतमे अपना सक भरि मायक खूब सेवा कयलियनि । मुइलाक बाद के देखैत अछि जे ककरा की भेटलैक ? हम एहि बाहरी आडम्बर पर विश्वास नहि करैत छी । लोक जिबैतमे माय-बापकेँ मल-मूत्र पर सुताबैत अछि आ मुइलाक बाद श्राद्धमे लाखों टाका खर्च क' वाहवाही लैत अछि । की एहिसँ ओ स्वर्ग चलि जयथिन ? से के देखलक अछि ? जिबैतमे नर्कक भोग आ मुइला पर स्वर्ग । स्वर्ग-नर्क तँ लोकक अपन कयल कृत्य पर निर्धारित होइत अछि, नहि कि श्राद्धमे लुटौलासँ । ओहि दिनसँ यदुनंदन गाममे श्राद्धक भोजो खायब छोड़ि देलनि ।

अंततः साकेत आ राजेश एहि निष्कर्ष पर अयलाह जे ई सभ किछु आडम्बर थिक । एकरा बिना सेहो काज चलि सकैत अछि । यदुनंदन केर मायक श्राद्ध कोना भेलनि । मुदा हमरा सभक गप्प तँ केओ मानत नहि । बाजब तँ लोक पागले कहत आ नहि बाजब तँ एकर अंत होयत कोना ? कोनो एहेन युक्ति लगाओल जयबाक चाही जाहिसँ लोक बुझबो नहि करय आ काजो भ' जाय । संगहि एहि परम्पराक सेहो अंत भ' सकय । एहि परम्पराक निर्वाहमे कतेको घर बर्बाद भ' गेल आ सूदखोर सभक चानी भ' गेलैक । साकेत आ राजेश दुनू मिलि क' योजना बनौलन्हि आ योजनाक अनुसार राजेश जा' क' सूति रहलाह, सेहो ओहि ठाम जतए विशेष लोकक जमघट लागल छलैक । दस मिनट केर बाद राजेश चिचियाइत उठलाह । सब केओ हड़बड़ा गेल । जे जतहि छल, ओतहि ठमकि गेल । सब केओ राजेशकेँ पूछब शुरु कयलकनि, ''औ जी! की भेल'' । राजेशक देह थरथरा रहल छलनि । जखन बहुत लोक सभ पुछलकनि, तखन राजेश बजलाह, ''औ जी ! एकटा गड़बड़ भ' गेल ।'' सब केओ पुछलकनि, ''की गड़बड़ भ' गेल ?''

ओ बजलाह, ''हमर बाबूजी सपनामे आयल छलाह आ कहैत छलाह जे एतेक विधान करबाक कोन आवश्यकता छलैक । तखन जे किछु कयलहुँ ठीके अछि मुदा...।" सभ केओ बाजि उठलाह, "मुदा...

मुदा... की...?" राजेश बजलाह, ''मुदा जूता जे एक जोड़ देल अछि से कतेक दिन चलत ?"

भीड़सँ केओ बाजल, ''एहिमे की लगैत छैक, दू-चारि जोड़ आर द' देल जाइनि ।" राजेश बजलाह, ''तैयो समस्याक समाधान नहि होयत । बाबूजीक इच्छा छन्हि जे एकटा खूब मजगूत लोहाक नाल पंडितजीक पयरमे ठोकबा देल जाइनि । तखन ओ हमरा पयरमे आबि जायत आ हम स्वच्छंद भ' यत्र-तत्र घुमैत रहब'' । किछु लोक बजलाह, "जखन बाबा सपनामे आबि कहलन्हि, तखन तँ से होयबाके चाही ।'' मुदा किछु लोक एकर पुरजोर विरोध सेहो कयलनि । ओही बीचसँ शिवजी बाबू बजलाह, ''पंडितेजीकेँ किएक ? की एहि व्यवस्थाक लेल पंडितजी दोषी छथि ? नहि, कथमपि नहि । एकरा लेल दोषी हमरालोकनि छी, हमर समाज अछि । जे एहि प्रथा वा आडम्बरक समर्थन करैत अछि । लोक देखाउँसमे एकसँ एक सामग्री बढ़बैत जा रहल अछि आ आगू चलिक' ओएह रेबाज बनि जाइत छैक । हमरा ओहि ठाम तँ प्रचलित छल वृषोत्सर्ग श्राद्ध, तखन पंचदान किएक ? वृषोत्सर्ग श्राद्धमे साँढ़ दागब अभिशाप भ' गेल अछि । दागल साँढ़केँ पगहा लगायब अनुचित मानल जाइत अछि । ओ साँढ़ लोकक जजाति चरि जाइत छैक । कतेको तँ एतेक मरखाह होइत अछि जे जकरा-तकरा उठा क' पटकि दैत छैक आ लोक साँढ़ दगनिहारकेँ खूब गरियबैत अछि । तेँ अधिकांश लोक एकरा बन्न क' पंचदानकेँ अपनौलन्हि । जँ समाज चाहत तँ एहि विधानकेँ सरलसँ सरल बनाओल जा सकैत अछि, जे सभक लेल अनुकरणीय होमए । जँ नाल ठोकल जयबाक चाही तँ समाजक ओहि व्यक्तिकेँ जे एकर समर्थक छथि, जे एकरा परम्परा बूझैत छथि । हमरा विचारे तँ एहन आडम्बरक जतेक भर्त्सना कयल जाय, थोड़ होयत ।" सब केओ निरुत्तर भ' गेलाह । जतेक लोक ओहि ठाम बैसल छलाह, सब धीरे-धीरे ससरि गेलाह । साकेत अपना विजय पर मुस्कुरा रहल छल ।

●

रोपल गाछ बबूर

भानू आ हुनकर कनियाँ रीता दुनू प्राणी घरसँ बाहर क' देल गेलीह । भानू तीन दिनसँ गामक लोकक खुशामद क' रहल छलाह, मुदा केओ हुनकर मदति करबाक लेल आगू नहि अयलनि । केओ हुनका बालक राकेशकेँ किछु कहबाक लेल तैयार नहि भेल । राकेश निर्भीक लोक छल आ संगहि हाजिरजबाब सेहो । ओ ककरहुसँ डेराइत नहि छल । उचित गप्प बजबामे चुकैत नहि छल । ओ सत्य संभाषण करैत छल आ ककरहु कुकृत्यक बखिया उघारबामे कनेको संकोच नहि करैत छल । तेँ केओ ओकरासँ गप्प करबाक साहस नहि करैत छलाह । भानूक बहुत कहला-सुनलाक बाद रामानुज बाबू कनेक साहस कयलनि । एक दिन ओ राकेशक ओहिठाम गेलाह । राकेश आंगनमे कोनो काज क' रहल छल । ओ रामानुज बाबूक आवाज सुनि दलान पर आयल आ बाजल, ''रामानुज कका ! आइ भगवान भास्कर पश्चिममे कोना उगलाह ? आइ भोरे-भोरे अहाँक दर्शन भ' रहल अछि । की बात थिकैक ?"

रामानुज बजलाह, ''गप्प तँ कोनो नव नहि अछि । भानू भाइ कए दिनसँ कहैत छलाह, तेँ अहींक ओहि ठाम आयल छी । अहाँ जे हुनका संग कयल अछि, से उचित वा अनुचित ई तँ नहि कहब मुदा अहाँ सनक लोकसँ एहेन अपेक्षा नहि छल ।'' अपना भरि तँ रामानुज बाबू गप्पकेँ

मिलाक बड़ सुन्दर ढंगसँ रखलनि मुदा राकेश हुनकर मनक भाव बूझि गेल आ बाजल, ''रामानुज कका ! अपेक्षा की अछि आ की नहि, से तँ बादक गप्प भेल । पहिने ई कहू जे बबूरक गाछ रोपलासँ आमक आशा कयल जा सकैत अछि ? आइसँ बीस वर्ष पहिने अहाँ अपना मायकेँ घरसँ निकालने छलहुँ । सेहो ओहि अवस्थामे जखन हुनकर पयर टूटल छलनि । ओहि समयमे हुनका पयरमे पट्टीक आवश्यकता छलनि । सेवा-सुश्रूषाक जरुरति छलनि । सहानुभूतिक अपेक्षा छलनि । मुदा अहाँ सब देलियनि की ? गरदनि पर हाथ, गारि-फज्झति । की, एही लेल माय-बाप धिया-पुताक पालन-पोषण करैत अछि ? काल्हि जँ अहाँक बेटा एकर पुनरावृत्ति करत तँ कोन अनर्गल करत ? ओ तँ जएह देखत, सएह ने सीखत ।'' रामानुजक तँ मनक गप्प मनेमे रहि गेलनि । ई तँ ओ सोचि क' आयले छलाह जे राकेश एतेक सुलभतासँ नहि मानत, मुदा एहन रोड़ा सनक जबाब देत, तकर आशा नहि छलनि । पुनः साहस बटोरि क' बजलाह, ''राकेश ! ई हमरा प्रश्नक उत्तर नहि भेल । हम पूछलहुँ किछु आर आ अहाँ उत्तर देल किछु आर ।'' राकेश बाजल, ''हम अहाँक प्रश्नक समुचित उत्तर देल अछि । अहाँके बुझबामे नहि आयल वा अहाँ बूझिक' अनठाबैत छी, तँ एहिमे हमर कोन कसूर ? तखन एकटा काज करू, किनकहुँ जा' क' पुछियन्हु, ओ बुझा देताह । और हँ, जखन आबिए गेल छी, तँ एकटा हमरो सलाह लेने जाऊ ।''

रामानुज बजलाह, ''केहन सलाह ?''

राकेश बाजल, ''बहुत जल्दी ई पराभव अहूँक संग होम'वला अछि । एकरहु लेल अहाँ एखनहि पंच ताकि क' राखि लिअ' । कोन ठेकान ओतेक अवसर भेटए वा नहि ?'' रामानुज बाबू मुँह लटकौने चल गेलाह । हुनकर स्थिति हारल जुआरी सन लागि रहल छलनि । से देखिक' फूदनकेँ नहि रहल गेलनि । ओ राकेशसँ पूछलथिन, ''राकेश, की भेलनि रामानुज भाइकेँ । भोरे-भोरे मुँह लटकौने गेल छथि ।''

राकेश बाजल, ''लोककेँ दोसराक छेद तुरंत देखबामे आबि जाइत छैक मुदा अपन भोकन्नरो नहि सुझैत छैक । रामानुज कका आयल

छलाह, हमरा उचित-अनुचित केर पाठ पढ़यबाक लेल ।''

फूदन बजलाह, ''ई कोनो नव गप्प छैक । जौं अपन टेटर लोक देख' लागत, तखन तँ समाजक रूपे-रंग बदलि जयतैक । इएह तँ कमी अछि हमरा समाजमे । परोपदेशे पाण्डित्यं । मुदा ओ भोरे-भोरे आयल कत' छलाह ?''

राकेश बाजल, ''ओ आयल छलाह हमर पंचैती करबाक लेल । हम कहलियनि जे हमर पंचैती बादमे करब । पहिने अहाँ अपन इन्तजाम क' लिअ' । अहूँक समय आबिये गेल अछि । आब बेसी देरी नहि अछि ।''

फूदन बजलाह, ''ठीक कहलियनि, चालनि दुसलनि सूपकेँ जनिका अपनहि बहत्तरि गोट छेद ।''

भानू सीतापुरक एक मध्यमवर्गीय परिवारक सदस्य छलाह । परिवारमे हुनक पत्नी रीता आ हुनक माय छलथिन । कतेक दिनक बाद भानूकेँ एकटा बालक भेलनि, जकर नाम राकेश पड़ल । भानू दुनू प्राणी आ हुनक माय राकेशकेँ बड़ मानैत छलथिन । धीरे-धीरे राकेश पैघ भेलाह । राकेशक शिक्षा-दीक्षा गामहि केर हाइ स्कूलमे भेलनि । हुनक विवाह सीमासँ भेलनि । रीता सब दिनहिसँ झगड़ाहु स्वभावक छलीह । बेसी काल ककरहु ने ककरहुसँ लड़िते रहैत छलीह । एक दिन कोनो कारणवश रीता आ सीमामे खूब झगड़ा भेलनि । टोल-परोसक लोक जमा भ' गेल । ओहि क्षण गाम पर ने भानू छलाह आ ने राकेश । दुनू जखन गाम पर अयलाह, तँ घरमे भानस-भात किछु नहि भेल छलनि । रीता आ सीमा दुनू गोटे दूटा कोनमे ठुनकि रहल छलीह । दुनू गोटेकेँ अपन-अपन कनियाँ कानि-खीजि क' आ खूब लगा-बझाक' अपन दुःख-दर्द सुनौलथिन । दुनूक हृदय धधकिये रहल छलनि, तावत् लालकाकी ओहिमे घी ढारि देलथिन । ओ भानूकेँ कहलथिन, ''बौआ ! एहन नटिन पुतहु नहि देखल अछि । कहू तँ एको रत्ती लाज-धाख नहि । कोना क' सासुकेँ झोँट पकड़िक' सौसे आंगन लिड़ी-बीड़ी कयलक आ ई बेचारी निमूधन जकाँ सबटा सहैत रहलनि ।'' कनेक कालक बाद लालकाकी पुनः राकेश लग

गेलीह आ बजलीह, ''बच्चा ! तोहर माय एकदम कसाइ छौक । कनियाँ-मनियाँ किछु नहि बुझैत अछि । लहकैत जारनिसँ कनियाँकेँ मारबाक लेल दौड़लि छलीह । ओ तँ भगवान भला करथुन्ह मेकनावालीक, जे दौड़िक' आबि पकड़ि लेलकनि । नहि तँ एकटा केओ ने केओ अस्पतालमे रहितथि ।" दुनू बाप-बेटाक देहमे आगि लागि गेलनि । तथापि राकेश अपनाकेँ संयमित कयलक आ सीमाकेँ बोल-भरोस द' क' शांत कयलक । ओ लालकाकीक चरित्रसँ परिचित छल । ओ बुझैत छल जे लालकाकी एहिमे कतेक नोन-मिरचाइ लगौने होयतीह । मुदा ओ अपना मायक किरदानी सेहो बुझैत छल । तथापि राकेश तँ कहुना बर्दास्त कयलक मुदा भानू राकेशकेँ बहुत फज्झति कयलथिन । ओ राकेश पर दबाब बनयबाक कोशिश कयलनि जाहिसँ राकेश सीमाकेँ किछु कहथि । मुदा राकेश ककरो किछु नहि कहलक । किछु दिन तँ राकेश अपनाकेँ रोकि क' रखलक मुदा जखन बुझयलैक जे पानि कंठसँ उपर भ' रहल अछि, तखन एक दिन राकेश लाठी उठौलक आ भाँजब शुरु कयलक । ओ भानूसँ बाजल, "अहाँ दुनू गोटे एखन घरसँ बाहर भ' जाउ, नहि तँ हमरा हाथे अनर्थ भ' जायत ।" राकेशक ओ ताण्डवीय रूप देखि डरसँ भानू आ रीता घरसँ बहार भ' गेलीह ।

राकेशकेँ मन पड़ैत छैक जे कोना ओकर दादी माँकेँ घरसँ निकालल गेल छलनि । रीता आ दादी माँक बीच बेसी काल झगड़ा-झंझटि होइत रहैत छलनि । दादी माँ रीताकेँ फूटली आँखिये नहि सोहाइत छलथिन । हुनका नीको गप्प पर रीता गारि-फज्झतिसँ तर क' दैत छलथिन । भानू सेहो रीताक बचाओ करैत अपना माइये पर बरसि पड़ैत छलाह । रीताकें किछु कहबाक साहसो तँ हुनकामे नहि छलनि । एक दिन राकेश घरहिमे क्रिकेट खेलि रहल छल । बॉल उछटि क' ऊपर छतसँ लटकल झूमरमे लागि गेलैक आ झूमर टुटि क' छिड़िया गेलैक । भानू जखन झूमरकेँ छिरिआयल देखलनि तँ ओ बूझि गेलाह जे ई राकेशक बदमाशी थिक । ओ राकेश पर बिगड़लाह । एहि बीच हुनक माँ आबि क' बजलीह, "बेटा ! बौआकेँ किएक डाँटैत छियैक, ई तँ हमरेसँ टूटल अछि ।"

भानू पुछलथिन, "से कोना ?"

माँ बजलीह, "हम झारनिसँ झोल झाड़ैत छलहुँ कि ओहीमे लागि गेल आ ओ टुटि गेल । एहिमे राकेशक कोनहु दोष नहि छैक ।" बस आब भानू तँ कम-बेस मुदा रीता जे दूरसँ देखि रहल छलीह, से आव देखलनि ने ताव, अलंकारक पेटी खोलि सासु पर उझीलि देलथिन्ह । बुढ़ी बेचारी चुप-चाप सुनैत रहलीह । रीताकेँ एहूसँ मोन नहि भरलनि तँ ओ भानूकेँ कहलथिन, "एहि बुढ़ियाकेँ हमरा सोझाँसँ हटाउ । एकरा देखितहि हमरा देहमे धधरा उठैत अछि । एहि घरमे आब केओ एके गोटे रहत । जँ ई बुढ़िया घरमे रहत तँ हम जहर-माहुर खा' क' प्राण त्यागि देब ।" ई दृश्य देखि राकेशक हृदय चीत्कार क' उठलैक । ओ एखन आठे-नौ वर्षक छल मुदा एतेक बुझैत छल । एहि लेल दोषी तँ ओएह अछि । दादी माँक हृदय कतेक विशाल छनि । ओ हमर दोष अपना ऊपर ल' लेलनि आ एतेक फज्झति सहि रहल छथि । ओ माँ-पापासँ बाजल, "ई झूमर हमरासँ टूटल अछि । दादी माँ हमरा बचयबाक लेल सबटा दोष अपना ऊपर ल' लेलनि ।" एहि पर रीता आर भड़कि गेलीह । ओ बजलीह, "ई बुढ़िया हमरा बेटाकेँ झूठ बाजब सेहो सिखा देलक । ई एहि ठाम रहत तँ हमरा बेटाकेँ खराब क' देत ।'' ओहि समयमे घनघोर वर्षा भ' रहल छलैक । रातिक आठ बाजि रहल छलैक । जे केओ घरसँ बाहर छल ओ घर अयबाक लेल तड़पि रहल छल । सबटा आवागमन अवरुद्ध भ' गेल छलैक । बाट पर दूर-दूर धरि केओ नजरि नहि आबि रहल छलैक । मेघक गरजब आ बिजुरीक चमकबसँ हृदय दहलि उठैत छल । हाथकेँ हाथ नहि सूझैत छलैक । एहन समयमे भानू आ रीता दादी माँकेँ घरसँ निकालि देलथिन । राकेश सिसकैत रहि गेल । ई सब किछु तँ ओकरहि कारण भेल छलैक । ने ओ झूमर तोड़ैत आ ने दादी माँकेँ सजा भेटितनि । ओकर मन दुखित भ' गेलैक, मुदा ओ क'ओ की सकैत छल । जँ किछु आर बजैत तँ भ' सकैत छलैक जे तकरहु दण्ड दादीये माँकेँ भेटितनि । ओ निश्चय कयलक जे जखन ओ पैघ भ' जायत आ अपना पयर पर ठाढ़ भ' जायत तखन ओहो माँ-बाबूजीकेँ घरसँ निकालि दादी माँक बदला लेत । ओकर

दादी माँ बृंदावन चल गेलथिन । ओहि ठाम एकटा संस्था छैक जे बूढ़ लोकक ताकछेम करैत छैक । ओहिमे दादी माँ सेहो रहि गेलीह आ ओही ठाम साकेतबिहारीक मंदिरक बाहर भिक्षाटन क' जीवन-यापन कर' लगलीह जेना कि गामक लोक सब बजैत छल । जतेक बूढ़ा-बूढ़ी घरसँ निकालल गेल छलीह, सब ओतहि रहि रहल छलीह । जखन राकेश भानू आ रीताकेँ घरसँ निकालि देलकनि तखन ओहो सब ओतहि चलि गेलाह । एक दिन अचानक भानूकेँ अपना मायसँ भेट भ' गेलनि । ओ लाजे अपना मायसँ आँखि नहि मिला सकलाह । ओ दोसर बाट ध' लेलनि । मुदा भानूक माय भानूकेँ देखि लेलथिन आ हुनका लग जा' क' एहि स्थितिक कारण पुछलथिन । भानू एके साँसमे सबटा वृत्तांत कहि सुनौलथिन । माय हुनका माथ पर हाथ फेरैत सांत्वना देलथिन आ तीनू गोटे एकहि आश्रममे रहए लगलीह । किछु दिनक बाद राकेश वृंदावन गेल । ओहि ठाम साकेतबिहारीक मंदिरसँ पूजा-पाठ क' बाहर होइतहि भिखमंगाक पाँतीमे भानू आ रीताकेँ देखलक । ओ आगू बढ़ि गेल । कनेक आगू बढ़लाक बाद ओकर नजरि दादी माँ पर पड़ल । ओ बाजल, "दादी माँ !" राकेश तँ अपना दादी माँके चीन्हि गेल मुदा दादी माँ अपना राकेशकेँ नहि चीन्हि सकलीह । ओ तँ ओकरा बच्चेमे देखने छलथिन । ओहि समयक राकेशमे आ एखनुक राकेशमे बड़ बदलाओ भ' गेल छलैक मुदा आवाज परिचित बुझयलन्हि । ओ बजलीह, "के थिकहुँ बौआ, अहाँ ?'' राकेश दादी माँक गरदनिमे लेपटा गेल आ बाजल, "दादी माँ हम राकेश छी, अहींक पोंता राकेश ।"

दादी माँ ओकरा खूब आशीर्वाद देलथिन आ पुछलथिन, "ई के थिकीह ?"

राकेश बाजल, "ई हमर कनियाँ सीमा थिकीह ।" आ सीमाकेँ दादी माँकेँ गोड़ लगबाक लेल इशारा कयलक । सीमा दादी माँकेँ पयर छुबिक' गोड़ लगलथिन । दादी माँ दुनूकेँ खूब आशीर्वाद देलथिन आ किछु खयबाक आग्रह कयलथिन ।

राकेश बाजल, "आइ अहाँकेँ हमरा संगे होटलमे भोजन कर' पड़त ।" दादी माँ होटल जयबामे सकपका रहल छलीह । ओ नहि चाहैत छलीह जे एहि ठामक लोक हमरा संगे हमरा पोंता के जानए । एहि ठाम

हुनक पहचान एकटा भिखमंगनीक रूपमे छलनि मुदा राकेशक आग्रह हुनका विवश क' देलकनि आ सब केओ एकटा नीक होटलमे भोजन करबाक लेल गेलाह । ओहि ठाम भोजनक क्रममे गाम-घरक हाल-चालक संग किछु एम्हर-ओम्हरक सेहो गप्प-सप्प भ' रहल छलैक ।

दादी माँ बजलीह, "राकेश ! हम अहाँ पर बड़ तमसायल छी । हम अहाँसँ ई आशा नहि करैत छलहुँ ।"

राकेश बाजल, "की भेल दादी माँ ! हमरा सँ कोन अपराध भ' गेल ?''

दादी माँ बजलीह, "अहाँ बड़ पैघ अपराध कयल अछि । दुनियाँ अहाँकेँ एकरा लेल जे कहए मुदा हम कहिओ अहाँकेँ माफ नहि करब ।" राकेश ई गप्प सुनि अकचका गेल आ बाजल, "दादी माँ, हम किछु बुझलहुँ नहि । हमरा कनेक स्पष्ट कहू । एना बुझौअलि नहि बुझाउ ।"

दादी माँ बजलीह, "अहाँ हमरा बेटा-पुतहुके किएक घरसँ बाहर निकालि देलहुँ ।"

राकेश बाजल, "अहाँक बेटा-पुतहु... । ओहि दिन अहाँक बेटा-पुतहु नहि छलीह जाहि दिन घनघोर वर्षामे अहाँकेँ घरसँ निकालि देने छलीह । ओहि मायकेँ जे बेटाकेँ नौ मास धरि उदरमे राखि ओकर सृजन करैत अछि, अपन चिंता छोड़ि बच्चाक चिंता करैत अछि, बच्चाक दुःखसँ दुःखी आ सुखसँ सुखी होइत अछि । जे माय-बापक दुःख-दर्द नहि बुझलक, से बेटा थीक ? एहन लोककेँ अहाँ अपन बेटा-पुतहु कहैत छी । एहन बेटाकेँ तँ जन्म होइतहि नोन चटा क' मारि देबाक चाही । मुदा से कोना करब ? बेटा तँ कुल-दीपक होइत अछि । ओकरा पर आश टांगल रहैत छैक । बुढ़ारीक लाठी बनत, कुलक उद्धार करत, गया जा' क' पिण्डदान करत । मुदा बेटा करैत अछि की ? माय-बापकेँ जिबितहिमे पिण्डदान क' दैत अछि । ओकर जीयब कष्टकर क' दैत अछि । मूड़ी मारू एहन बेटाकेँ । एहिसँ नीक तँ ओ अछि जे बाँझ वा निपुत्र अछि । जखन दोसरेक आसरा ताकब तखन बेटाक कोन प्रयोजन ? एहिसँ नीक जे एकटा कुकुर

पोसि लिअ', जत' जायब पछोर धयने रहत ।"

दादी माँ बजलीह, "वाह ! हमर राकेश तँ आब बड़ बुधियार भ' गेल छथि । एतेक पैघ-पैघ गप्प तँ हम आइ धरि सुननहुँ नहि छलहुँ। आब अहाँ सभक सोझाँ हमरा सभक कोन मोजर ?"

राकेश बाजल, "नहि, नहि, दादी माँ, एहन गप्प नहि छैक । हम तँ केवल यथार्थक वर्णन कयल अछि । एहन काज केवल हमरहि माँ-बाबूजी कयलनि अछि, से गप्प नहि छैक । सौंसे गाममे एकाधेटा एहन घर होयत, जे एहि तरहक काज नहि कयने अछि । हमर बाबूजी सौंसे गाम घुमि गेलाह मुदा एकहुटा पंच नहि भेटलथिन । एहि लेल जे एहिसँ अछूत केओ नहि छथि । फूदन कका तँ एतेक धरि कहि देलथिन्ह, 'बौआ फिफिऔने किछु नहि होएतह, जखन रोपलह बबूर, तँ आम कत'सँ भेटतह । एक दिन रामानुज कका सेहो आयल छलाह । हुनका तँ हम तेहन गप्प कहलियनि जे लोहछले पड़यलाह ।"

दादी माँ बजलीह, "हमर एकटा गप्प मानबह ?"

राकेश बाजल, "अहाँक गप्प नहि मानब तँ ककर मानबै । अहाँ कहि क' तँ देखू ।"

दादी माँ बजलीह, "पहिने हमरा वचन दयह ।"

राकेश बाजल, "वचन दिअ' ! अहाँकेँ हमरा पर विश्वास नहि अछि की ?"

दादी माँ बजलीह, "विश्वास तँ अछि मुदा गप्पे तेहन अछि जे भ' सकैत अछि, सुनलाक बाद तों नहि मानह ।" राकेशकेँ संदेह भेलैक जे भ' सकैत अछि दादी माँ, माँ-बाबूजीक विषयमे तँ ने किछु कह' चाहैत छथि । ओ बाजल, "दादी माँ, हम वचन दैत छी जे अहाँक गप्प मानि लेब जँ ओ हमरा माँ-बाबूजीक विषयमे नहि होयत, तखन ।" दादी माँ चुप रहि गेलीह ।

राकेश पुनः बाजल, "दादी माँ ! चलू ने आइ हमरहि सभक संगे होटलमे रहब आ राति भरि खूब गप्प-सप्प करब ।"

दादी माँ बजलीह, "अहाँ कनियाँक संगे जाउ । हमरा आश्रममे हाजरी देब आवश्यक अछि । नहि जायब तँ हुनकालोकनिकेँ अंदेशा होयतन्हि ।"

राकेश, "ठीक छैक, तखन काल्हि प्रातःकाल पुनः भेट होयतैक ।"

दोसर दिन प्रातःकाल सात बजे राकेश आ रीता साकेतबिहारीक मंदिरसँ पूजा क' क' बाहर अयलीह । बाटेमे दादी माँ भेटि गेलथिन्ह । काल्हुक दादी माँ आ आजुक दादी माँमे बड़ फर्क छलनि । आइ दादी माँ एकदम साफ वस्त्रमे छलीह । जेना लगैत छल जे एखनहि गामसँ आयल होथि । राकेश आ सीमा दुनू पयर छूबि क' गोड़ लगलकनि । दादी माँ खूब आशीर्वाद देलथिन ।

राकेश बाजल, "दादी माँ ! आब गाम चलू । बहुत तीर्थाटन कयलहुँ ।"

दादी माँ बजलीह, "आब हमरा गाममे नीक लागत ? एहि ठामक समाजमे एतेक ने घुलि-मिलि गेल छी जे एहि ठामसँ जयबाक इच्छे नहि होइत अछि । मुदा स्नेहवश अहाँक आग्रह ठुकराइयो तँ नहि सकैत छी । तखन गाम जयबामे हमरहु एकटा शर्त्त अछि ।"

राकेश, "अहाँक शर्त्त... अहाँक की शर्त्त अछि ?"

दादी माँ, "हमर यैह शर्त्त अछि जे हम एकसर गाम नहि जायब ।" राकेश बूझि गेल जे दादी माँ की कह' चाहैत छथि । भानू आ रीतासँ ओकरहु घृणा नहि छलैक । ओ तँ दादीये माँक कारणे आक्रोशित छल । तेँ एहि तरहक नाटक कयने छल जाहिसँ भानू आ रीताकेँ सद्बुद्धि आबि जाइनि । पता नहि हुनका सभकेँ सद्बुद्धि अयलन्हि वा नहि मुदा राकेश अपना दादी माँक आग्रह अस्वीकार नहि क' पओलक । राकेशक आँखि सजल भ' गेलैक । दादी माँक हृदय कतेक विशाल, कोमल, निश्छल आ पवित्र छनि । एतेक अपमानित भेलाक बादो हुनक चित्त बेटा-पुतहुसँ उखरल नहि छलनि । कुपुत्रो जायेत्...

●

पश्चात्ताप

राघव जखन गाम आयल तँ एहि ठामक स्थिति देखि ओकर माथा घुमि गेलैक । घर-आंगन सब ढहल-ढनमनायल आ ओहिमे रहनिहार सब निपत्ता । ओ कतेक आश लगाक' गाम आयल छल । कतेक सपना सजौने छल । मुदा सब बेकार भ' गेलैक । ओकर सपना माँटिक महल जकाँ ढहि गेलैक । ओ बहुत रास टाका अनने छल । सब भाय-बहिन लेल कपड़ा-लत्ता, मायक लेल साड़ी आ बापक लेल धोती-कुर्त्ता अनने छल । ओकर नेनपन बहुत अभावमे बीतल छलैक । ओ ओहि अभावकेँ दूर करबाक चेष्टा कयलक । ओकर बाट गलत छलैक । गलत बाट धयनिहार भने क्षणिक सुख प्राप्त क' लैत अछि मुदा ओकर जीवन सब दिन खतरेमे रहैत छैक । ओकरा गरदनि पर सदिखन तरुआरि लटकले रहैत छैक । आइ ओएह स्थिति राघवक अछि । ओ जतेक सामग्री अनने रहए, सबकेँ बेरा-बेरी निहारि रहल छल । ओकर उपयोग कयनिहार केओ नहि रहलैक । ओ अगल-बगलक लोकसँ एहि विषय पर जानकारी लेबाक प्रयास कयलक मुदा ओकरा देखितहि सब केओ मुँह फेरि लैत छलैक । ओकरा एकर कारण बुझबामे आबि गेलैक । ओ अपना कृत्य पर पछता रहल छल ।

राघवक जन्म एकटा गरीब परिवारमे भेल छलैक । ओकर पिता

मनमोहनजी साधारण गृहस्थ छलाह । राघव नेनपनेसँ अत्यन्त मेधावी छल । संगहि मृदुभाषी आ विनम्र सेहो । मनमोहनजीकेँ चारिटा बालक आ दूटा बालिका छलनि जाहिमे राघव सबसँ पैघ छल । राघव कोनो तरहेँ बी. ए. पास कयलक आ नोकरीक जोगाड़मे लागि गेल । ओना तँ ओकर इच्छा आर पढ़बाक छलैक मुदा छोट भाय-बहिनक पढ़ाइ आ पिताक आर्थिक स्थितिकेँ देखि ओ अपन इच्छाक दमन कयलक । दू वर्ष बीति गेलाक बादो राघवकेँ कतहु नौकरी नहि भेटलैक । ओ गामहिमे ट्यूशन पढ़ाक' माहमे आठ-नौ सय रुपैयाक जोगाड़ कर'लागल आ मनमोहनजीक बच्चा सभक पढ़ाइमे सहयोग कर' लागल । यद्यपि राघवक कमाइ मनमोहनजीक लेल "ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन" जकाँ छलनि मुदा कयलो की जा सकैत छलैक ? एहि पैरवी आ घूसक जमानामे नोकरी भेटब सभक बसक बात नहि छैक । राघव कतेको ठाम साक्षात्कारमे गेल मुदा नतीजा किछु नहि बहरयलैक । तैओ ओ हारि नहि मानलक ।

एही बीच ओकरा परिवारमे एकटा दुर्घटना भ' गेलैक । ओकर छोट भाय माधव, जे आइ. एस-सी.मे पढ़ैत छल तकरा केओ गोली मारि देलकैक । माधवक एहन चरित्र तँ नहि छलैक जाहि पर संदेह कयल जा सकैत छल आ ने ओकरा ककरोसँ झगड़ा छलैक । तखन तँ जतेक मुँह, ततेक बात । केओ बाजए, "पुलिस इनकाउन्टर क' देलकैक" तँ केओ बाजए, "आतंकवादी मारि देलकैक" । राघव थाना गेल आ दरोगाजीसँ गप्प कयलक । दरोगाजी बजलाह, "हम सभ एकर जाँच क' रहल छी । यावत् जाँच पूर्ण नहि होयत तावत् किछु नहि कहि सकैत छी ।" एहि जबाबसँ राघव संतुष्ट नहि भेल । ई घटना ओकरा झकझोरि देलकैक । ओ निर्णय नहि क' पाबि रहल छल जे की कयल जाय, की नहि । ओकरा पुलिसक निष्क्रियता पर बड़ क्षोभ भेलैक आ संगहि आक्रोश सेहो ।

एक दिन संध्या काल राघव पार्कमे बैसि एही विषय पर सोच-विचार क' रहल छल । रातिक आठ बाजि रहल छलैक । अधिकांश लोक पार्कसँ जा चुकल छलाह । मात्र किछुए लोक बाँचल छलाह । अनायास एकटा सज्जनक हाथ राघवक कनहा पर पड़लैक । एकर आभास होइतहि ओ मुँह

ऊपर उठौलक । देखलक, एकटा सत्तरि-बहत्तरि वर्षक लोक ठाढ़ छथि । हुनका ठाढ़ देखि राघव सेहो उठबाक प्रयास कयलक मुदा ओ व्यक्ति अपना इशारासँ राघवकेँ बैसा देलनि आ अपनहु बगलमे बैसि गेलाह । हुनक केश-दाढ़ी सब पाकल छलनि । तैओ मुँहक कान्ति चमकि रहल छलन्हि । ओ राघवसँ पुछलथिन, "अपनेक नाम की अछि" ?

राघव, "राघव ।"

ओ व्यक्ति बजलाह, "कोन ठामक रहनिहार थिकहुँ ?"

राघव, "रामपुरक ।"

ओ व्यक्ति, "अपने कोनो गहन चिंतामे छलियैक की ?"

राघव, "जी नहि, कोनो खास बात नहि छलैक ।"

ओ व्यक्ति, "अपने चिंतनमे तँ अवश्य छलहुँ । किएक तँ हम एहि ठाम कतेक कालसँ ठाढ़ छी । मुदा अहाँकेँ तकर कोनो आभास नहि भेल ।"

राघव, "ओहिना किछु घरैया गप्प छलैक ।"

ओ व्यक्ति, "अपने नहि कह' चाहैत छी तँ नहि कहू । एहि लेल कोनो बात नहि । हम एहि लेल अहाँकेँ दबाबो नहि द' सकैत छी मुदा हमर अनुमान गलत नहि भ' सकैत अछि ।"

राघव, "अपनेक अनुमान की कहैत अछि ?"

ओ व्यक्ति, "माधव अहींक परिवारक छलाह की ?"

राघव माधवक नाम सुनितहि हड़बड़ा क' उठि गेल आ बाजल, "हँ... हँ... माधव हमर छोट भाय छल । मुदा अपने माधवकेँ कोना जनैत छी ? आर की की जनैत छी माधवक विषयमे...?"

ओ व्यक्ति, "आइसँ चारि दिन पूर्व माधव पुलिस इनकाउन्टरमे मारल गेल । ई गप्प हमहीँटा नहि पूरा शहर जनैत अछि । तेँ हमहूँ माधवक विषयमे जनलहुँ । आर कोनो बात नहि ।"

राघव, "मुदा माधवकेँ पुलिससँ कोन दुश्मनी छलैक ? पुलिस ओकर इनकाउन्टर किएक करत ? हम तँ थाना सेहो गेल छलहुँ । थाना कहलक, हम जाँचमे लागल छी ।"

ओ व्यक्ति, "पुलिस आ सरकारक भाषा अहाँ सभ नहि बुझबैक । सरकार की क' रहल अछि ? हमरा देशक कतेको युवा बेकार अछि, ओकरा नौकरी नहि भेटि रहल छैक, ओकरा अपन पेट भरबाक कोनो साधन उपलब्ध नहि छैक । देशमे बहुराष्ट्रीय कम्पनी अयलासँ, छोट-छीन घरैया उद्योग-धंधा बन्द भ' गेल । संगहि नव तकनीक विकसित भेलासँ आ कम्प्यूटरीकरण भेलासँ रोजगारक अवसर सेहो कम भ' गेल अछि । एक दिस देशक आबादी जंगलक आगि जकाँ बढ़ि रहल अछि आ दोसर दिस रोजगारक अवसर कम भेल जा रहल अछि । महगी बढ़ि रहल अछि आ लोकक आमदनी घटि रहल छैक । एकरा लेल दोषी के ? जनता, की सरकार ? सरकार तँ दोषी अछिये, हमहूँ सभ ओकरा लेल कम दोषी नहि छी ।"

राघव, "एहिमे हमरा सभक की दोष अछि ? हम सब की क' सकैत छियैक ?"

ओ व्यक्ति, "हम सब अन्यायकेँ, भ्रष्टाचारकेँ चुप-चाप सहि लैत छी । ओकर विरोध नहि करैत छी जाहिसँ सरकार आ सरकारी लोक हमरा सभकेँ कादर आ डेरबुक बुझैत अछि । स्वार्थवश गलत व्यक्तिक चुनाव लोकसभा आ राज्यसभाक लेल करैत छी । हमरा समाजक किछु गोटे जन-बल आ धन-बलसँ अन्य लोककेँ विवश करैत छथि आ एकर दुष्परिणाम सम्पूर्ण समाजकेँ भोग' पड़ैत छैक । राज्यसँ केन्द्र धरि आ संतरीसँ मंत्री धरि सभ भ्रष्टाचारमे लिप्त अछि । देशक टाका विदेशी बैंकमे जा रहल छैक जाहिसँ दोसर देशक विकास भ' रहल अछि । राजनेता हमरा सभकेँ जाति-धर्मक नाम पर लड़बैत रहैत अछि । हम सभ ओकर मीठ-मीठ गप्पमे आबि अपन विवेक बिसरि जाइत छी, आन्हर भ' जाइत छी, अनुचित-उचित किछु नहि बुझैत छी आ अपनामे लड़ि जाइत छी । जे एकर विरोध करैत अछि, ओकरा आतंकवादीक संज्ञा देल जाइत छैक ।

एहिसँ लाभ राजनेता केँ होइत छैक ।"

राघव, "जखन देशमे नव तकनीक विकसित होयत, तखन तँ ई सब होयबे ने करत । एहिमे सरकारक कोन दोष ?"

ओ व्यक्ति बजलाह, "सरकार जखन कोनो नीति निर्धारित करैत अछि, तखन ओकरा दुनू पक्ष पर विचार करबाक चाही । एहिसँ कतेक लाभ वा नुकसान होयत । तखन ओकरा लागू करबाक चाही । जाहिमे लाभसँ बेसी नुकसान होइत हो, ओकरा लागू कयने की लाभ ? हमरा देशक जे शिक्षानीति अछि, सेहो एकरहि शिकार अछि । नव-नव संस्थान खूजल अछि । ओहिमे नीक शिक्षा सेहो भेटैत छैक मुदा ओहिमे प्रवेश पायब सभक बूताक बाहर छैक । देशक मात्र दस प्रतिशत लोक ओकर लाभ उठा रहल छथि । नब्बे प्रतिशत लोक ओहि सुविधासँ वंचित छथि । ओहि नब्बे प्रतिशत लेल सरकार सरकारी संस्थान बनौने अछि अवश्य, मुदा ओहिमे शिक्षाक अभाव छैक । ओ संस्थान सभ छात्रकेँ उपयुक्त शिक्षा प्रदान करबामे असफल अछि, जखन कि ओहि पर सरकारक अरबो रुपैया खर्च होइत अछि । हँ, एकटा काज अवश्य होइत अछि । छात्र लोकनिकेँ एक बेर खयबाक लेल खिचड़ी भेटि जाइत छैक । कतहु-कतहु तँ ओहि भोजनसँ कतेको छात्रक मृत्यु सेहो भ' जाइत छैक, मुदा आइ धरि एहि लेल ककरहु पर कोनो कारबाइ नहि भेलैक अछि । एहि लेल हम कोनो शिक्षकोकेँ दोषी मानब उचित नहि बुझैत छी किएक तँ ओहि बेचारेकेँ जनगणना वा मवेशी गणनासँ पलखति भेटनि तखन ने स्कूलकेँ देखताह । एखन वर्त्तमानमे प्राइवेट स्कूलक स्पर्धामे सरकारी स्कूलक छात्र किन्नहुँ नहि आबि सकैत अछि ।"

राघव, "ई तँ अपने ठीक कहि रहल छी, मुदा कयलो की जा सकैत छैक । रहबाक तँ एही ठाम अछि" ।

ओ व्यक्ति बाजल, "यैह सोच तँ कायरताक प्रतीक थिक ।"

राघव, "की, माने ?"

ओ व्यक्ति बाजल, "एखन अहाँ युवा छी । पढ़ल-लिखल छी । किछु करबाक सामर्थ रखैत छी । एना जँ हाथ पर हाथ ध' क' बैसि जायब तखन तँ भ' गेल एहि देशक उद्धार । जँ इएह गप्प आजादीक दीवाना सभ सोचितथि, तँ हमर देश कहिओ आजादो होइत ?"

राघव, "से तँ नहि होइत, मुदा एहिमे हम...।"

ओ व्यक्ति बाजल, "अहाँ एकर चिंता जुनि करू । एकरा लेल हम सभ एकटा संस्थाक निर्माण कयने छी । ओहिमे युवा पीढ़ीक लोकक भर्ती करैत छी आ यथासाध्य हुनका सभकेँ जीवन-यापन हेतु किछु मानदेय सेहो दैत छियनि । हमरा संस्थाक काज अछि, सरकारक गलत नीतिक विरोध करब । हमरा सभकेँ बीच-बीचमे पुलिसक संग झंझट सेहो होइत रहैत अछि । पुलिस अपन रोब जमयबाक लेल मनमानी करैत अछि, से हमर संस्था बर्दास्त नहि करैत अछि । तेँ अपन रक्षा आ मान-सम्मानक लेल हम सब अस्त्र-शस्त्रक प्रयोग सेहो करैत छी । जँ अहाँकेँ सरकारक नीतिक विरोध करबाक हो आ माधवक इनकाउन्टरक बदला पुलिससँ लेबाक हो तँ अहाँ हमरा संस्थामे आबि जाउ । हम सभ अहाँकेँ पूर्ण सहयोग करब ।" ओ व्यक्ति जेबीसँ एकटा हरियर पुर्जी बहार क' राघवक हाथमे दैत पुनः बाजल, "अहाँ लग राति भरिक समय अछि । गाम पर जा क' खूब नीक जकाँ सोच-विचार क' लिअ' । हम अहाँ पर कोनो दबाब नहि द' रहल छी । मात्र मानवताक नाते वस्तुस्थितिसँ अवगत कराब' चाहैत छी । जँ हमरा विचारसँ अहाँ सहमत होइ तँ काल्हि दस बजे एहि पता पर आबि जायब । ओकर आवाज गंभीर आ चेहराक भाव सागर जकाँ शांत छलैक । ओकर गप्प राघवकेँ बड़ प्रभावित कयलकैक । ओकरा मनमे होइत छलैक जे कतेक जल्दी माधवक बदला लेल जाय । ओ तड़पि उठल । ओकरा राति भरि निन्न नहि भेलैक । ओ सब बिन्दु पर विचार कयलक । ई गाँधीवादी व्यवस्था ओकरा की देलकैक ? बेकारी, बेरोजगारी आ तिल-तिल क' मरबाक लेल विवशता । एहि भ्रष्ट व्यवस्थामे ओकर जीयब कठिन छैक । की एकरे लेल ओकर माय-बाप ओकरा पढ़ौने-लिखौने छलैक ? की पढ़ियो-लिखिक ओ माय-बाप पर बोझ बनल रहत ? नहि, कथमपि नहि । ओ आब अवश्य किछु करत । अपनहुँ लेल, समाजोक

लेल आ देशक लेल सेहो । कौखन इहो सोचैत छल जे ई व्यक्ति अनचिन्हार अछि । एकरा संग हमर कोनो चिन्हा-परिचय नहि अछि । ई हमर मदति किएक कर' चाहैत अछि । एकरा हमरासँ कोनो स्वार्थ तँ नहि छैक ? एहिसँ एकरा की लाभ होयतैक ? भ' सकैत अछि जे ओ हमर उपयोग क' रहल हो । मुदा राघव, माधव केर दुर्घटनासँ एतेक मर्माहत छल जे ओ एहि सभ विषय पर दिमाग खपाएब निरर्थक बुझलक । एहि विषयमे विशेष सोच-विचार नहि कयलक । ओ पुर्जीमे दर्शाओल पता पर ठीक दस बजे पहुँचि गेल । ओहि ठाम कुर्सी पर ओएह व्यक्ति बैसल छलाह, जे रातिमे राघवकेँ भेटल छलाह । हुनका सोझाँ एकटा टेबुल छल, जाहि पर किछु मोट-मोट पोथी आ किछु कागत-पत्र राखल छलैक । सामने एकटा कुर्सी खाली छलैक, जाहि पर राघवकेँ बैसबाक इशारा कयलनि । ओहो जेना राघवेक प्रतीक्षा क' रहल छलाह । घड़ी देखलनि । ठीक दस बाजि रहल छलैक । ओ बजलाह, "आबि गेलहुँ ।"

राघव, "जी !"

ओ व्यक्ति, "वाह ! एकदम समय पर आयल छी । ने कनेको आगाँ आ ने कनेको पाछाँ । निश्चित रूपेँ अहाँ तरक्की करब । तखन काज शुरु कयल जाय ।"

राघव, "जी.............हँ ।" ओ व्यक्ति राघवकेँ भीतर ल' गेलाह आ अपन अन्य सहयोगी सभसँ परिचय करौलथिन ।

किछु दिन तँ मनमोहनजी एही गुन-धुनमे रहलाह जे राघव कत' गेल । ओ राघवक संगी सबसँ पुछलथिन, मुदा केओ किछु नहि कहलकनि । कर-कुटुम्बक ओहिठाम पता लगौलनि, मुदा सब बेकार । किछु दिनक बाद मनमोहनजीकेँ राघवक पठाओल दस हजार टाका भेटलनि । टाका मनिआर्डरसँ आयल छलैक मुदा ओहिमे ने कोनो संदेश आ ने अता-पता । ओकर बाद मासे-मास टाका आयब शुरु भ' गेलनि । मनमोहनजी खुशीपूर्वक अपना परिवारक भरण-पोषण करबामे लागि गेलाह । ओ ई बुझबाक प्रयास नहि कयलनि जे राघव कत' आ कोन काज करैत अछि । ओ काज नीक अछि वा अधलाह ? ओ एहि विषय पर विचार नहि कयलनि । हुनकहुँ संगे ओएह भेल, जेना निर्जन स्थानमे चाउर छीटल देखि पड़वाक समूह बिना किछु विचार कयने ओकरा खयबाक लेल उतरि गेल आ कुल सहित शिकारीक जालमे फँसि गेल । मनमोहनजीक परिवार नीक जकाँ चलि रहल छलनि । एकटा बेटीक विवाह सेहो नीक जकाँ कयलनि । एक दिन अचानक पुलिस आबि गेल । ओ राघवक विषयमे मनमोहनजीक संग बड़ी काल धरि गप्प कयलक । ओ बेर-बेर राघवक पता पुछैत छलनि, मुदा मनमोहनजी अपन अनभिज्ञता प्रकट कयलनि । सहीमे हुनका किछु बूझल नहि छलनि मुदा पुलिसकेँ संदेह भेलैक जे मनमोहनजी जानि-बूझिक अबूझ बनि रहलाह अछि । ओ हिनका बहुत तरहेँ डेरौलक-धमकौलक आ आठ दिनक समय देलकनि । जँ आठ दिनमे अहाँ राघवक विषयमे जानकारी नहि देब तँ अहूँ पर कानूनी कारबाइ कयल जायत । सौंसे गाममे फुस-फुस भ' रहल छलैक जे राघव आतंकवादी बनि गेल अछि, मुदा मनमोहनजीकेँ कहबाक साहस ककरो नहि भेलैक । ओ आब साधारण लोक नहि छलाह । एकटा कुख्यात आतंकवादीक पिता छलाह । आठ दिनक बाद पुनः पुलिस आयल । घरमे ताला लटकल भेटलैक । ओकरा संगमे सर्च वारंट छलैक । ओ बहुत पुछारि कयलक मुदा केओ किछु नहि कहलकैक । अंततः पुलिस पाँच गोटेक समक्ष ताला तोड़ि, सभटा सामान जप्त करैत, अपन कारबाइ पूर्ण कयलक । घरक लोक सभक कोनो अता-पता नहि छलैक । लोक आशंका व्यक्त क' रहल अछि जे ओकरा सभकेँ आतंकवादी मारि देलकैक वा पुलिस इनकाउन्टरमे मारल गेल वा अपन बचल-खुचल इज्जति बचयबाक लेल परिवार सहित कतहु भागि पड़ायल आ राघवकेँ पश्चात्ताप छोड़ि आर किछु हाथ नहि लगलैक ।

●

ओझा लेखें गाम बताह

आइ बहुत गर्मी छलैक आ कार्यालयमे छुट्टी रहबाक कारणे घरहिमे छलहुँ । भरि दिन तँ कहुना कटि गेल मुदा अकच्छ भ' गेलहुँ। बिजुरी पंखा चलि रहल छलैक, तैओ भीतरसँ मन उमसि रहल छल । पैजामा-कुर्त्ता पहिरलहुँ आ घरसँ बाहर भ' गेलहुँ । डेरासँ एक किलोमीटर पर एकटा पार्क अछि । पार्क बहुत पैघ तँ नहि अछि, मुदा ओहिमे रंग-बिरंगक फूल लगाओल गेल अछि । संध्याकाल ओहि ठाम हजारो लोक अबैत छथि आ घंटा दू घंटा व्यतीत क' चल जाइत छथि । पार्कक बीचमे एकटा झरना अछि जे अति मनमोहक अछि । झरनाक चारू कात हरियर-हरियर दूभि लगाओल गेल अछि जाहि पर लोक सब बैसि क' झरनाक अद्‌भुत आनन्द उठबैत अछि । हमरा पहुँचबासँ पूर्वहि सुधाकरजी पहुँचल छलाह । जेना ओ हमरहि बाट ताकि रहल होथि । जोर-जोरसँ हल्ला कर' लगलाह । हम तँ पहिने अकचकयलहुँ, फेर आवाजसँ चिन्हलहुँ जे सुधाकरेजी छथि । सुधाकरजी राजनीतिशास्त्रक व्याख्याता छथि आ गप्प-सप्प करबामे बड़ पटु । कोनहु विषय पर गप्प करबामे ओ पाछाँ नहि हटैत छलाह । हमरा पहुँचितहि बजलाह, "आउ...आउ... अहीं बिनु चौकड़ी सून छल ।" हमहूँ ओहिठाम जा' क' बैसि गेलहुँ आ गप्प-सप्प शुरू भेल । ओही क्रममे राजनीति पर सेहो गप्प होमए लागल ।

हम कहलियनि, "राजनीति पर सुधाकरजीसँ नीक के व्याख्यान द' सकैत अछि ?"

सुधाकरजी बजलाह, "राजनीति शास्त्र जे पढ़लहुँ, पढ़ाबैत छी आ एखन जे देशमे राजनीति चलि रहल अछि, दुनू एक दोसराक विपरीत अछि । अपना ओहि ठाम एकटा लोकोक्ति प्रचलित छैक 'ओझा लेखें गाम बताह आ गामक लेखे ओझा बताह ।' एहि लोकोक्तिक प्रचलन कोन परिपेक्ष्यमे भेल, से तँ नहि कहि सकैत छी, मुदा हमरा देशक राजनीति पर ई लोकोक्ति एकदम चरितार्थ भ' रहल अछि । हमर पूर्वज की एही स्वतंत्र भारतक सपना देखने छलाह । हमरा बुझने ई आजादी नहि, काला धन अर्जित करबाक, युवककेँ बेरोजगार बनयबाक, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आ बलात्कार करबाक लाइसेंस अछि; एकरा पर सरकारक कोनहुँ नियंत्रणे नहि छैक । बल्कि ई कहल जाय जे एहिमे विशेष क' सरकार आ सरकारी तंत्रक लोक संलिप्त छथि । एकरा लेल दोषी के ?" सुधाकरजी पुनः बजलाह, "समय बदलैत अछि, शासक बदलैत अछि मुदा समस्या जस के तस । किएक तँ शासन तंत्रमे कोनो बदलाव नहि होइत छैक । कानूनमे नम्यता छैक । टाका आ पैरवीक बल पर लोक कोनहुँ कुकर्मकेँ पचा जाइत अछि । राज्य सरकार आ केन्द्र सरकारक बीच उपयुक्त सामंजस्यक अभाव अछि । हमरा देशक लोक आजादी पयबाक लेल कतेक आन्दोलन कयलनि । हुनका सभकेँ कतेक यातना सहए पड़लनि ? किएक तँ सरकार विदेशी छल आ हम सभ छलहुँ ओकर गुलाम । मुदा आइ अपनहि सरकारक समक्ष भ्रष्टाचारक विरोध कयनिहारकेँ सरकारक मंत्री वा सरकारी तंत्रक लोक, पागल, ठग, पथभ्रष्ट, भगोड़ा सैनिक, स्वार्थी आदि कहि ओकर मखौल उड़बैत अछि । आंदोलन आ आंदोलनकारीक दमन कयल जाइत छैक। जँ केओ व्यक्ति सांसदक विरुद्ध बजैत अछि तँ ओकरा संसदक अवमानना मानल जाइत छैक मुदा आंदोलन केर दमन करब वा ओकर मखौल उड़ायब, की जनमानसक अनादर नहि थिक ? ओ ई बिसरि जाइत छथि जे पाँच वर्षक बाद हुनका पुनः जनताक बीच अयबाक छनि । की जनताक चुनल वा अपना देशक सरकारसँ हमरा सभकेँ इएह अपेक्षा

ओझा लेखें गाम बताह

आइ बहुत गर्मी छलैक आ कार्यालयमे छुट्टी रहबाक कारणे घरहिमे छलहुँ । भरि दिन तँ कहुना कटि गेल मुदा अकच्छ भ' गेलहुँ। बिजुरी पंखा चलि रहल छलैक, तैओ भीतरसँ मन उमसि रहल छल । पैजामा-कुर्त्ता पहिरलहुँ आ घरसँ बाहर भ' गेलहुँ । डेरासँ एक किलोमीटर पर एकटा पार्क अछि । पार्क बहुत पैघ तँ नहि अछि, मुदा ओहिमे रंग-बिरंगक फूल लगाओल गेल अछि । संध्याकाल ओहि ठाम हजारो लोक अबैत छथि आ घंटा दू घंटा व्यतीत क' चल जाइत छथि । पार्कक बीचमे एकटा झरना अछि जे अति मनमोहक अछि । झरनाक चारू कात हरियर-हरियर दूभि लगाओल गेल अछि जाहि पर लोक सब बैसि क' झरनाक अद्‌भुत आनन्द उठबैत अछि । हमरा पहुँचबासँ पूर्वहि सुधाकरजी पहुँचल छलाह । जेना ओ हमरहि बाट ताकि रहल होथि । जोर-जोरसँ हल्ला कर' लगलाह । हम तँ पहिने अकचकयलहुँ, फेर आवाजसँ चिन्हलहुँ जे सुधाकरेजी छथि । सुधाकरजी राजनीतिशास्त्रक व्याख्याता छथि आ गप्प-सप्प करबामे बड़ पटु । कोनहु विषय पर गप्प करबामे ओ पाछाँ नहि हटैत छलाह । हमरा पहुँचितहि बजलाह, "आउ...आउ... अहीं बिनु चौकड़ी सून छल ।" हमहूँ ओहिठाम जा' क' बैसि गेलहुँ आ गप्प-सप्प शुरू भेल । ओही क्रममे राजनीति पर सेहो गप्प होमए लागल ।

हम कहलियनि, "राजनीति पर सुधाकरजीसँ नीक के व्याख्यान द' सकैत अछि ?"

सुधाकरजी बजलाह, "राजनीति शास्त्र जे पढ़लहुँ, पढ़ाबैत छी आ एखन जे देशमे राजनीति चलि रहल अछि, दुनू एक दोसराक विपरीत अछि । अपना ओहि ठाम एकटा लोकोक्ति प्रचलित छैक 'ओझा लेखें गाम बताह आ गामक लेखे ओझा बताह ।' एहि लोकोक्तिक प्रचलन कोन परिपेक्ष्यमे भेल, से तँ नहि कहि सकैत छी, मुदा हमरा देशक राजनीति पर ई लोकोक्ति एकदम चरितार्थ भ' रहल अछि । हमर पूर्वज की एही स्वतंत्र भारतक सपना देखने छलाह । हमरा बुझने ई आजादी नहि, काला धन अर्जित करबाक, युवककेँ बेरोजगार बनयबाक, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आ बलात्कार करबाक लाइसेंस अछि; एकरा पर सरकारक कोनहुँ नियंत्रणे नहि छैक । बल्कि ई कहल जाय जे एहिमे विशेष क' सरकार आ सरकारी तंत्रक लोक संलिप्त छथि । एकरा लेल दोषी के ?" सुधाकरजी पुनः बजलाह, "समय बदलैत अछि, शासक बदलैत अछि मुदा समस्या जस के तस । किएक तँ शासन तंत्रमे कोनो बदलाव नहि होइत छैक । कानूनमे नम्यता छैक । टाका आ पैरवीक बल पर लोक कोनहुँ कुकर्मकेँ पचा जाइत अछि । राज्य सरकार आ केन्द्र सरकारक बीच उपयुक्त सामंजस्यक अभाव अछि । हमरा देशक लोक आजादी पयबाक लेल कतेक आन्दोलन कयलनि । हुनका सभकेँ कतेक यातना सहए पड़लनि ? किएक तँ सरकार विदेशी छल आ हम सभ छलहुँ ओकर गुलाम । मुदा आइ अपनहि सरकारक समक्ष भ्रष्टाचारक विरोध कयनिहारकेँ सरकारक मंत्री वा सरकारी तंत्रक लोक, पागल, ठग, पथभ्रष्ट, भगोड़ा सैनिक, स्वार्थी आदि कहि ओकर मखौल उड़बैत अछि । आंदोलन आ आंदोलनकारीक दमन कयल जाइत छैक । जँ केओ व्यक्ति सांसदक विरुद्ध बजैत अछि तँ ओकरा संसदक अवमानना मानल जाइत छैक मुदा आंदोलन केर दमन करब वा ओकर मखौल उड़ायब, की जनमानसक अनादर नहि थिक ? ओ ई बिसरि जाइत छथि जे पाँच वर्षक बाद हुनका पुनः जनताक बीच अयबाक छनि । की जनताक चुनल वा अपना देशक सरकारसँ हमरा सभकेँ इएह अपेक्षा

अछि ? तखन कालि्ह आ आइमे की फर्क रहल ? किएक लोक अपन सरकार आ अपन व्यवस्थाक लेल हजारो गोटेक प्राण उत्सर्ग कयलक ? केन्द्र होमए वा प्रदेश, आइ जे सत्ताधारी छथि, कालि्ह विपक्षमे छलाह । ओहो ओएह करैत छथि जे कालि्ह सत्ताधारी करैत छल । ओ विपक्षमे रहि ओकर जोरदार विरोध करैत छलाह । सत्तामे अयला पर विपक्षक आ विपक्षमे रहला पर सत्ताधारीक दुनूक भाषा बदलि जाइत अछि । हमरा तँ किछु बुझिये नहि पड़ैत अछि जे के जनताक हितमे सोचैत छथि आ के अहित मे ? जनिका जनता अपन हितैषी बुझैत अछि, ओकरा हितक लेल जे जोर-जोरसँ सदनमे हंगामा करैत छथि, सत्ताक कुर्सी पकड़ितहि हुनकहुँ सुर बदलि ज़ाइत छनि । हमरा बुझने एकर प्रमुख कारण अछि, राजनीति मे असामाजिक तत्व आ अपराधी छविक लोकक घुसपैठ । आब प्रश्न उठैत अछि जे असामाजिक तत्वक निर्धारण कोना होयत आ के करत ? असामाजिक तत्व तँ ओ भेल जे सामाजिक नहि होमए, जकर समाजमे कोनो मान्यता नहि होइक । समाजक लोक ओकरा कोनो तरहक मदति नहि करए । मुदा एखन समाजोमे तँ सभसँ बेशी ओकरे पैठ छैक । समाज ओकरे इशारा पर चलैत अछि, नहि कि ओ समाजक इशारा पर । तखन बाँचि गेल अपराधी छविक लोक, तँ ओकरहुँ इंगित करब आजुक परिपेक्ष्यमे कठिन कार्य अछि । ओकरा केवल न्यायालय इंगित क' सकैत अछि । मुदा न्यायालय केर निर्णय साक्ष्य आ गवाह पर निर्भर करैत अछि । साक्ष्य आ गवाहक अभावमे अपराधी टाका आ पैरवीक बल पर छूटि जाइत अछि आ निर्दोष बलिक बकरा बनि जाइत अछि । ओना तँ भ्रष्टाचारमे सभ केओ लिप्त छथि । केओ कम, केओ बेसी मुदा एहिसँ छुटल केओ नहि छथि । व्यापारी अपन कार्य शीघ्र करयबाक लेल वा गलत कार्य करयबाक लेल, किछु प्रलोभन द' क' कर्मचारीकेँ प्रभावित करैत छथि, तँ राजनेता वोटक खातिर जन-बल आ धन-बल केर प्रयोग करैत छथि । जाति, धर्म आ सम्प्रदायक झांसा द' क' निष्कपट जनताक शोषण करैत छथि । तिलक-दहेज पर लाखों रुपैया खर्च करब, ओहो तँ गैरकानूनी अछि । केओ व्यक्ति अपन शुद्ध कमाइसँ वा इमानदारीक कमाइ सँ एतेक खर्च नहि क' सकैत अछि । रेल, बस, हवाई यात्रा कयनिहार

लोक वा राशन प्राप्त कयनिहार लोक पाँतीमे नहि ठाढ़ भ' गलत आचरणसँ अपन टिकट वा राशन प्राप्त करैत छथि । की ओ भ्रष्टाचारक अंग नहि थीक ? देशक नीति निर्धारण उच्च पदस्थ अधिकारीक माध्यमे मंत्रीलोकनि करैत छथि । ओ ई नहि सोचैत छथि जे एहिसँ कतेक लोककेँ लाभ होयतैक आ कतेककेँ नोकसान । बस अपन स्वयं केर लाभ देखि बिल पास करैत छथि । जेना वित्त मंत्री कोनहु अर्थशास्त्रीकेँ बनाओल जाइत अछि । तहिना अन्य मंत्री सेहो ओहि विषयक जानकारकेँ बनयबाक चाही । राष्ट्रपति चुनावसँ पूर्व विपक्षी राज्य सरकारकेँ पैकेज बाँटब की वोटक खरीद बिक्री नहि मानल जयबाक चाही ? एहि पर चुनाव आयोगक कोनो प्रतिक्रिया किएक नहि भेल ? तत्कालीन प्रधानमंत्रीक घोषणानुसार सात हजार करोड़ खर्च क' क' छओ लाख गरीबी रेखासँ नीचाँ रहनिहारकेँ मोबाइल देबाक योजना की उचित अछि ? जकरा भोजनक अभाव छैक, वस्त्रक अभाव छैक, घरक अभाव छैक, ओकरा लग मोबाइलक की उपयोग छैक ? एहि राशिक उपयोग एहन योजना पर कयल जाइत जाहिसँ किछु गरीबकेँ रोजगारो भेटितैक । राजनेता जाहि स्टाइलमे अपन जन्म दिन मनाबैत छथि, की ओ राजतंत्रक परिचायक नहि अछि ? किछु दिन पूर्व मात्र एकेटा परिवारक देशमे परिवारवाद चलैत छल मुदा आइ दर्जनो नेता परिवारवाद केर बाट पर चलि रहल छथि । एहिसँ एहन प्रतीत होइछ जे नेता लोकनि जनताक आ जनता नेताक भाषा नहि बुझि रहल छथि । देशी मुर्गी आ विलायती बोल बला गप्प । हम सभ आइयो घुमा-फिराक' गुलामीयेक जीवन जीवि रहल छी । तेँ कहलहुँ अछि जे "ओझा लेखें गाम बताह आ गामक लेखें ओझा बताह" ।

हम पुछलियनि, "मुदा एहि सभक लेल दोषी के ?"

सुधाकरजी बजलाह, "कुल मिलाक' एहि सभक लेल दोषी हमहीं-अहाँ छी जे जाति, धर्म, सम्प्रदाय केर नाम पर गलत प्रतिनिधिक चुनाव करैत छी आ पाँच वर्ष धरि कनैत रहैत छी । तखन तँ 'जएह रोपब सएह ने काटब' वला गप्प भ' जाइत अछि । किछु दिन पूर्व एहि विषयमे एकटा मंत्रीसँ गप्प भेल । ओ बजलाह, 'औ जी ! हम सब की करबैक ।

संचिका अबैत अछि, ओहि पर दस्तखत क' दैत छियैक ।' एक बेर सचिवसँ कहलियनि, एहि संचिका पर आठ दिनक बाद दस्तखत करब । कनेक हम नीक जकाँ एहि विषय पर सोचि लैत छी । सचिव बजलाह, 'श्रीमान् अपनेक जखन इच्छा हो दस्तखत करी वा नहि करी, मुदा एहिमे देरी भेने प्रति दिन देशक एक करोड़क नोकसान होयत ।' आब कहू, हम ओहि कुर्सी पर देशक हित करयबाक लेल बैसल छी, आकि नोकसान करयबाक लेल ? हम तुरंत दस्तखत क' देलियैक । हमरा सब तँ बुझू मोहर थिकहुँ, जतए इच्छा हो लगा दिअ' । सबटा काज तँ अधिकारी लोकनि करैत छथि । एक तरहें बुझू तँ इहो नीके अछि आ दोसर रूपमे खराब सेहो । खराब एहि अर्थमे अछि जे हम सब चाहिओ क' किछु नहि क' सकैत छियैक । अधिकारी पढ़ि-लिखिक' आ उपयुक्त प्रशिक्षण ल' क' अबैत छथि आ हमरा सभमे कतेको अंगूठा छाप भेटताह ।"

हम पुछलियन्हि, "आ नीक कोन दृष्टियें अछि ।"

ओ बजलाह, "आइ-काल्हि जेहन-जेहन मंत्री होइत छथि जे जँ पाबंदी नहि लगाओल जाय तँ विधानमंडलकेँ अपनहि घर बूझि उपयोग करताह । सब किछु तहस-नहस क' देताह । देखिये रहल छी ने जे ने ककरहु बजबाक लूड़ि आ ने चलबाक ढंग । राति-दिन घोटाला पर घोटाला भ' रहल अछि ।"

हम पुछलियन्हि, "तखन अपने सभक रहबाक की प्रयोजन ?" मंत्रीजी बजलाह, "प्रयोजन अछि' हम सब अधिकारीकेँ नियंत्रणमे रखैत छी । ओहो बुझैत छथि जे हमरहुँ ऊपर केओ अछि । जत' कोनो नीक काजमे नियम बाधा बनैत अछि, तँ ओहि नियमकेँ बदलबाक काज करैत छी । एकर दुरुपयोग सेहो होइत अछि । तेँ एहिमे फँसितो ऑफीसरे छथि । जिनगी भरि जेलमे सड़ैत रहैत छथि । आ हम सब तँ कहुना ने कहुना बचिये जाइत छी ।" एहि रहस्योद्घाटनक लेल पूर्व मंत्रीजीकेँ धन्यवाद ज्ञापित कयलहुँ । गप्प खतम भेलाक बाद घड़ी देखलहुँ । दस बाजि रहल छलैक । हमहू सभ आपस अपना-अपना घर अयलहुँ ।

●

आरक्षण

पचकौड़ी लाल गामक साधारण लोक छलाह मुदा संघर्षशील आ जूझारू एतेक जे सीतापुर के कहए, ओकरा अगल-बगलक पचासो गामक लोक हुनका जनैत छलनि । कोनहुँ घटना होइक, नीक वा अधलाह, छोट वा पैघ, पचकौड़ीक कानमे पड़बाक चाहियनि । ओ तुरंत पीड़ितक मदति करबाक लेल पहुँचि जाइत छलाह । ओ परिणामक चिंता नहि करैत छलाह । एहन-एहन तर्क प्रस्तुत करैत छलाह, जकर काट ककरहु लग नहि भेटैत छल आ लोककेँ हुनक गप्प मानबाक लेल विवश होमए पड़ैत छलनि । सीतापुरमे एकटा सुमनजी नामक व्यक्ति छलाह । हुनकहु गिनती दबंग लोकमे होइत छलनि । नोकर-चाकर, गाड़ी-घोड़ा, बंगला आदिक स्वामी छलाह । ओ ककरो किछु नहि बुझैत छलाह । एक दिन ओ अपना नौकर टुनटुनमाकेँ बहुत मारि मारलनि आ खरिहानमे मेह लगा क' बान्हि देलथिन । जेठ मास छलैक आ ऊपरसँ प्रचण्ड पछबा बसात बहि रहल छलैक । गर्मीक कारण जन-जीवन अस्त-व्यस्त छलैक । जे घरमे छल ओकरो झड़क लागि रहल छलैक । एहनमे टुनटुनमाक की स्थिति होइतैक, अनुमान लगा सकैत छी । मुदा सुमनजीक लेल धनि सन । केओ पूछनि तँ कहथिन, "चोरी कयलक अछि । पुलिसकेँ बजौने छियैक । आबि क' थाना ल' जयतैक ।" एतेक ककरो साहस नहि जे फेर किछु पुछितन्हि आ

दोसराक लेल के अपना माथ पर झंझट लैत अछि । मनचनमा जखन सुनलक तँ दौड़ल आयल आ बेटाक हालति देखि ओकरा बकौर लागि गेलैक । ओ सुमनजीक बड़ नेहोरा कयलक मुदा सुमनजी नहि पसिझलाह । उनटे ओ मनचनमाकेँ सेहो पिटबाक धमकी द' देलथिन । मनचनमा कनैत-कनैत विदा भ' गेल आ सब बाबू-भैयाक खोशामद करऽ लागल मुदा सुमन जीकेँ कहबाक लेल केओ आगाँ नहि अयलाह । ओ हारि-थाकि पचकौड़ीक ओहि ठाम गेल । मनचनमाक सम्बन्ध पचकौड़ीक संग नीक नहि छलैक जकर कारण सेहो सुमनेजी छलाह । सुमनजीक कहला पर मनचनमा पचकौड़ीक संग किछु अभद्रता कयने छलनि । पचकौड़ी ओकरासँ रुष्ट छलाह । तेँ ओ ओकरा ओहिठाम जाय नहि चाहैत छल मुदा दोसर कोनो उपायो तँ नहि छलैक । मनचनमा पचकौड़ीक ओहिठाम गेल । पचकौड़ी गाम पर नहि छलाह । ओ कतहु गेल छलाह । जखन अयलाह तँ मनचनमाकेँ देखलनि । हुनक मनक टीस बढ़ि गेलनि । ओ मनचनमाकेँ देख' नहि चाहैत छलाह । मुदा सुमनजीक नाम सुनि ओ अपन दर्द बिसरि गेलाह आ सुमनजीसँ अपन पुरना कुन्नह सधयबाक लेल तैयार भ' गेलाह ।

पचकौड़ी पुछलथिन, "मनचनमा ! किएक सुमनजी तोरा बेटाकेँ बन्हने छथुन ?"

मनचनमा बाजल, "पचकौड़ी भाइ ! सत्य गप्प की छैक से तँ नहि बूझल अछि, मुदा कहैत छथि जे चोरी कयलक अछि ।"

पचकौड़ी पूछलथिन, "कथीक चोरी ?"

मनचनमा बाजल, "से तँ नहि बूझल अछि ।"

पचकौड़ी, "मारबो-पिटबो कयलथिन अछि ?"

मनचनमा, "बहुत मारि मारने छथिन । कतेको ठामसँ शोणित बहि रहल छैक आ दर्दसँ कुहरि रहल अछि ।"

पचकौड़ी, "तोरा मालिकके‌ँ बेटियो छौक ?"

मनचनमा, "हँ, बेटी तँ छैक ।"

पचकौड़ी, "ओ कतेक वयसक छैक ?"

मनचनमा, "करीब सोलह-सत्रह वर्षक होयतैक, मुदा से किएक पूछैत छी ।"

पचकौड़ी, "ई सब बात तोँ नहि बूझबें, चल ।" आ दुनू गोटे सुमनजीक ओहिठाम पहुँचलाह । मनचनमाक संग पचकौड़ीकेँ देखि सुमनजीक कान ठाढ़ भ' गेलनि । ओ जनैत छलाह जे पचकौड़ी बड़ तिकरमबाज अछि । ओकरा सोझाँ केहनो-केहनो चित्त भ' जाइत छथि । ओकरासँ मुँह लगौने अपनहि बेइज्जती होयत । तेँ ओ संयमित होइत बजलाह, "की पचकौड़ी, चोरकेँ छोड़यबाक लेल आयल छी ! अहाँकेँ बूझल अछि की नहि जे एहि मामिलामे हम किनको किछु नहि सुनैत छी। चोरकेँ बचौनिहार चोरे होइत अछि । तेँ जहिना आयल छी, तहिना चलि जाउ ।"

पचकौड़ी बजलाह, "सुमन बाबू ! हम चोरकेँ छोड़ाबए नहि आयल छी । चोरकेँ तँ चोरीक सजा भेटबाके चाही । ठीक कहल अपने, चोरकेँ बचौनिहार चोरे होइत अछि । हमहूँ एकर समर्थन करैत छी ।"

सुमनजी बजलाह, "तखन किएक आयल छी ?" मनचनमा दुनूक गप्प सुनि हक्का-बक्का भ' गेल । ई की भ' रहल अछि । हम तँ पचकौड़ीकेँ बेटाकेँ बचयबाक लेल अनने छलहुँ, मुदा ई तँ मालिकेक सुरमे सुर मिला रहल अछि । आब भगवाने मालिक छथि ।

पचकौड़ी बजलाह, "सुमन बाबू ! हम तँ अहाँकेँ बचाब' आयल छी ।"

सुमनजी बजलाह, "हमरा बचाबक लेल आयल छी, हम की कयलहुँ अछि ?"

पचकौड़ी बजलाह, "सुमन बाबू ! लोक दोसराक गलतीकेँ तुरंत देखि जाइत अछि, मुदा अपन गलतीक भान तावत् धरि नहि होइत छैक यावत् ओ अपनहि चक्रव्यूहमे फँसि नहि जाइत अछि । आ अहूँक संगे

किछु एहने भेल अछि ।"

सुमनजी, "हम बुझलहुँ नहि, अहाँ की कह' चाहैत छी ।"

पचकौड़ी, "सबसँ पहिने अहाँ टुनटुनमा के कतौ छाहरिमे द' दिऔक । जौं मरि जायत तँ जमानतो नहि होयत ।" आब सुमनजीक स्वर दबि गेलनि । टुनटुनमाकेँ रौदसँ छाहरिमे आनल गेल आ जल पिआओल गेल ।

पचकौड़ी पुनः बजलाह, "सुमन बाबू ! टुनटुनमा अहाँक की चोरौने छल ?"

सुमनजी, "से हम अहाँकेँ किएक कही । ई तँ पुलिस लग बयान देल जयतैक ।"

पचकौड़ी, "एहेन काजो नहि करब, जँ पुलिस आओत तँ अहाँ दुनू दिस सँ घेरा जायब ।"

सुमनजी, "हम किएक घेरा जायब ? हमरहि घरमे चोरी कयलक आ हमहीं घेरा जायब ।"

पचकौड़ी, "जी हँ, अहीं घेरा जायब किएक तँ अहाँकें सजा देबाक अधिकार नहि अछि ।"

सुमन जी, "हम कहाँ सजा देलियैक अछि ।"

पचकौड़ी, "अहाँ ओकरा मारलियैक अछि नहि ?"

सुमनजी, "ओ तँ यावत् हम दौड़ि क' अयलहुँ, तावत् धिया-पूता सब दू-चारि हाथ मारि देने छलैक ।"

पचकौड़ी, "ओकरा देहक चोट कहि रहल छैक जे ओकरा कतेक मारि लागल छैक । थाना सेहो अहाँकेँ पूछत आ मानवाधिकार आयोग तँ छोड़बो नहि करत । जँ एहि सबसँ बचिओ जायब तँ..."

सुमन जी, "तँ की...?"

पचकौड़ी, "घरक इज्जति निलाम भ' जायत । तें चुप-चाप किछु

द' ल' क' सोलह-सलोकति क' लिअ' ।" एतेक गप्प सुनैत देरी सुमनजी नरम पड़ि गेलाह । हुनक सब ठेसी बहार भ' गेलनि । ओ पचकौड़ीकेँ एकान्तमे ल' गेलाह । दुनू गोंटेमे विचार-विमर्श होमए लागल । कोना एहि मामिलाकेँ दबाओल जाय । बड़ी कालक घमर्थनक बाद टुनटुनमाक इलाजक खर्च आ दस हजार रुपैया ऊपरसँ देमए पड़लनि । तखन जा' क' पचकौड़ी मानलकनि । काल्हि धरि जे सुमनजी दोसर केर डाँड़ उतारैत छलाह, आइ हुनको पचकौड़ी लाल बिना हरड़े-फिटकीरीक डाँड़ उतारि देलकनि । टुनटुनमाकेँ ल' क' मनचनमा आ पचकौड़ी लाल विदा भ' गेलाह ।

सभक समय पूर्ण होइत छैक आ सबकेँ ई देह छोड़' पड़ैत छैक । सब एक ने एक दिन मृत्युक वरण करत, ई ध्रुव सत्य अछि । पचकौड़ी लाल सेहो मरणोपरान्त यमलोक पहुँचलाह । यमलोक पहुँचितहि पचकौड़ी लालकेँ फरमान सुनाओल गेल । अहाँ कहिओ मंदिर नहि गेलहुँ, कीर्तन-भजन नहि कयलहुँ, दान-पुण्य नहि कयलहुँ, अहाँ नरकमे वास करू ।

पचकौड़ी, "हम एहि फरमानकेँ नहि मानब । ई तँ सरासर अन्याय थीक । एहि ठाम कोनो कायदा-कानून वा संविधान छैक की नहि ?"

यमराज, "ई यमलोक थिकैक । एहि ठाम यमराजक आदेशे कानून होइत छैक । जँ सीधासँ नहि मानब तँ कोड़ाक प्रयोग कयल जायत ।"

पचकौड़ी, "ई सब आब नहि चलत । नर्कसँ स्वर्ग जयबामे पचास फीसदी आरक्षण चाही । एहि लेल हम आन्दोलन करब, नाराबाजी करब । यमलोककेँ हिलाक' राखि देब। पचकौड़ी नर्कक मुँह पर तँ आबिये गेल छल । जोरसँ हल्ला कयलक । हे नर्कवासी सभ जँ अहाँकेँ स्वर्ग जयबाक हो तँ जल्दी नर्कसँ बाहर आउ आ स्वर्गमे प्रवेश करू । सभ नर्कवासी नर्कसँ बहार भ' स्वर्गक द्वार पर आबि नाराबाजी शुरू क' देलक । एम्हर यमराज आ ओम्हर धर्मराज दुनूक आसन डोल' लगलनि । स्वर्ग आ नर्कमे हंगामा मचि गेल । आब की होयत ? ओ सब पचकौड़ीकेँ बजाक' वार्त्ता शुरू कयलनि ।

धर्मराज, "पचकौड़ी जी ! स्वर्ग आ नर्क तँ लोकक द्वारा कयल

कर्मक आधार पर निर्धारित होइत अछि । एहिमे हम सभ की क' सकैत छी । ई तँ विधिक विधान थीक । जँ एहिमे किछु हेर-फेर करब तँ सब किछु उनटा-पुनटा भ' जायत ।"

पचकौड़ी, "अहूँक ओहि ठाम घूस-घास आ पैरवी-पैगाम चलैत अछि की ?"

धर्मराज, "राम-राम, की बात करैत छी । एहि ठाम दूधक दूध आ पानिक पानि होइत छैक ।"

पचकौड़ी, "तखन ओ मोटका सेठ स्वर्ग कोना पहुँचल ? ओ तँ जिनगी भरि लोकक गरदनि कटलक । हरदम फूसि बाजल । एक के तीन वसूल कयलक । कतेक अबलाक जीयब दूभर क' देलक । कतेक विधवाक शील हरण कयलक ।"

धर्मराज, "ई जे अपने कहल अछि, सब ओकर अधलाह कृत्य छैक । एकरा लेल ओकरा नर्क जाय पड़तैक । मुदा ओ जे नीक कृत्य कयने अछि, यथा मंदिर निर्माण, दान-पुण्य, यज्ञ, भजन-कीर्त्तन, भागवत । एहि पुण्ये ओ एखन स्वर्गक आनंद उठा रहल अछि ।"

पचकौड़ी, "इहो तँ अन्याये थीक ने जे मोट-मोट सेठकेँ पहिने स्वर्ग आ गरीब-गुरबाकेँ पहिने नर्क । ई कोन विधान भेलैक । नियम एक रहबाक चाही ।"

धर्मराज, "ई तँ विकल्प भेल । पहिने अहाँ की चाहैत छी आ बाद मे की ?"

पचकौड़ी, "बस-बस, इएह तँ भ' गेल भारतीय संविधान आ दण्ड संहिता । ई सभ आब नहि चलत । खेत खाय गदहा आ मारि खाय जोलहा । आब जवाना बदलि गेलैक अछि । जे गलती कयलक ओएह सजा पाओत ।"

धर्मराज, "सैह तँ भ' रहल अछि । जकर जेहन कर्म कयल छैक, ओकरा ओहने भेटैत छैक ।"

पचकौड़ी तँ अपनहि मांजल खेलाड़ी छलाह । ओ तर्कमे ककरहुसँ हारि मान' बला नहि छलाह । ओ बजलाह, "एकटा गप्प कहू, अहाँ सब रामायणकेँ मानैत छियैक की नहि ?"

धर्मराज, "अवश्य मानैत छियैक । नहि कोना मानबैक ? ओ तँ हमरा सभक मूल धर्म ग्रंथ थिक । ओकरहि पर तँ ई विधान टिकल अछि ।"

पचकौड़ी, "ओहिमे लिखल छैक की नहि, 'परहित सरिस धरम नहि भाई' । तखन कहू जे हमरा सनक धर्मात्मा के ? हम सब दिन दोसरेक उपकार कयलहुँ । तखन हम नर्कमे किएक जायब ? एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे अहाँक सब लेखा-जोखा अशुद्ध अछि । कोनहु सी.ए. सँ एकर अंकेक्षण करायब उचित बुझाइत अछि । दोसर गप्प, भोले नाथ माँ पार्वतीसँ कहैत छथि, 'सुनहु उमा संसारमे ग्यानी मूढ़ न कोई । जब जैसी रघुपति कृपा तब तैसी बुधि होई' ।। तखन नीक काज वा अधलाह काज हम कोना कयलहुँ ? ओ तँ सब किछु भगवाने कयलनि । तेँ ई दण्ड तँ हुनकहि ने होएबाक चाहियनि ।"

धर्मराज, "मुदा कर्म तँ मानवे ने करैत छथि । तें कर्मफल तँ हुँनकहि ने भोग' पड़तनि ।"

पचकौड़ी बाजल, "श्रीमद्भगवद्गीताक अध्याय सात श्लोक दसमे भगवान श्रीकृष्ण कहैत छथि–

"बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।।''

अर्थात् ''कृष्ण समस्त वस्तुक बीज छथि । बुद्धिमानक बुद्धि आ तेजस्वी पुरुषक तेज ओएह छथि । तखन एहि लेल दोषी मानव किएक ?"

धर्मराज बजलाह, "एहि सभकेँ बनौनिहार तँ विधाता छथि । अहाँक प्रश्नक उत्तर तँ ओएह द' सकैत छथि । हम सब एहि विषयमे किछु नहि कहि सकैत छी ।"

पचकौड़ी, "ठीक छैक, तखन हुनके बजाओल जाय ।"

विधाता बजाओल गेलाह । सभटा वृत्तान्त सुनलनि । पचकौड़ीक तर्कक आगाँ ओहो निरुत्तर भ' गेलाह । मुदा समाधान तँ आवश्यके छल । विधाता कतबो बुझयबाक कोशिश कयलनि मुदा पचकौड़ी मानबाक लेल तैयार नहिं । अंततः विधाता बजलाह, "देखू एकरा लेल विधान बदलब आवश्यक अछि । ओना तँ समय केर अनुकूल विधानमे परिवर्त्तन होइत अछि मुदा एखन धरि एहन परिस्थिति नहि आयल छल, तेँ विधान परिवर्त्तन आवश्यक नहि बुझना गेल । आब हम सभ एहि विषय पर विचार करब । ई तुरंत सम्भव नहि अछि । एकरा लेल ब्रह्म सभाक बैसार आवश्यक अछि ।" दुनू पक्षमे खूब घोंघाउज भेल । अंततः पचकौड़ीकेँ दस प्रतिशत आरक्षण भेटलनि । पचकौड़ी संगे दस प्रतिशत नर्कक लोक स्वर्ग गेलाह । सभ नर्कवासी नारा लगौलक, "पचकौड़ी लाल-जिन्दाबाद", "जिन्दाबाद-जिन्दाबाद" ।

●

लोकतंत्र

पता नहि, आइ ककर मुँह देखि क' उठल छलहुँ । चौबट्टी पर जइतहिं ब्यंगकटेश बाबू पर नजरि पड़ि गेल । ओना ब्यंगकटेश बाबू कोनो अधलाह लोक नहि छथि । पढ़ल-लिखल सम्भ्रान्त लोक छथि । इतिहास सँ एम.ए. क' पी-एच.डी. सेहो कयने छथि । गंगापुर कालेजमे इतिहासक प्रोफेसर रहि चुकल छथि । एहि परोपट्टामे हुनका सनक विद्वान, वक्ता आ तपाकी दोसर केओ नहि छथि । हुनकासँ गप्प करबामे सब नहि ठठि सकैत अछि । केहनो लोककेँ बहसबाजीमे पाँच मिनटसँ बेसी टिक' नहि दैत छथि । मुदा हम हुनका गप्पकेँ ध्यानसँ सुनैत छलियनि । बेसी काट-छाँट नहि करैत छलियनि । मात्र जिज्ञासुक रूपमे उत्सुकतावश बीच-बीचमे कनेक टोनि अवश्य दैत छलियनि । से हुनकहु बड़ नीक लगैत छलनि । हुनका संग गप्पक क्रममे हम इहो बिसरि जाइत छलहुँ जे कोन काजसँ बजार आयल छलहुँ । जखन डेरा पहुँचैत छलहुँ तँ सभटा सामान नहि देखि कनियाँ पूछि दैत छलीह, "ब्यंगकटेश बाबू भेट नहि भेल छलाह की ?" तखन हम बुझैत छलहुँ जे अमुक सामग्री लायब बिसरि गेलहुँ आ कनियाँक व्याख्यान नीक बच्चा जकाँ चुप-चाप सुनि लैत छलहुँ ।

आइ पुनः ब्यंगकटेश बाबू भेटि गेलाह । कनियाँ बाजारक लेल

लम्बा फेहरिस्त देने छलीह । काल्हि जितिया पावनि थिकैक । एहि लेल बजार करबाक उद्‌देश्यसँ बहरायल छलहुँ । मुदा कखन डेरा आपस आयब आ की की बिसरब, कहि नहि सकैत छी । एक बेर तँ आँखि बचाक' दोसर बाट पकड़बाक कोशिश कयलहुँ मुदा ब्यंगकटेश बाबूक गृद्ध दृष्टिसँ बाँचि नहि पओलहुँ । ओ टोकि देलनि, "की बड़ा बाबू, नुका किएक रहल छी ?"

हम कहलियनि, "जी नहि श्रीमान् ! हम अपनेकेँ देखबे नहि कयलहुँ । कनेक जितियाक सामग्री लेबाक छलैक, तेँ हड़बड़ायल छी, गोड़ लगैत छी ।"

ब्यंगकटेश बाबू, "खूब मस्त रहू । कोनो बात नहि । देखैत नहि छियैक, कतेको लोक हमरासँ नुका कऽ भागऽ चाहैत छथि । तें हमरा भेल जे कदाचित अपनहुँ...।''

हम कहलियन्हि, "जी नहि श्रीमान् ! हमरा तँ अपनेसँ बहुत ज्ञानवर्द्धन होइत अछि । नव-नव जानकारी भेटैत अछि । तखन नुकायब किएक ?"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "तखन की कहल अपने, काल्हि जितिया थिकैक । आ... हा... हा...हा... । अपना ओहिठाम तँ जितिया पावनि बड़ अद्‌भुत होइत छैक । ओना तँ कतेक पावनि अछि, सभमे खयबा-पीबाक प्रचुर अवसर भेटैत छैक । जेना चौरचनकेँ लिअ', भरि दिन तैयारी करू आ साँझ होइते चानक दरशन करैत तपते-तपते खीर-पूरीक भोग लगाउ । फगुआमे खूब रंग खेलू आ गरम-गरम मालपूआ खाउ । खूब भांग पीबू आ जमि क' मौज-मस्ती करू । मुदा जितियाक तँ गप्पे किछु अलग अछि । एहिमे तँ ततेक ने विन्यास होइत छैक जकर वर्णनो करब दुर्लभ अछि । पावनि कयनिहारि तँ जे किछु हमरहुलोकनि आश लगौने रहैत छी जे कहिया ई पावनि आओत । एहि पावनिमे कमसँ कम एक्कैसटा तरकारी अवश्य होयबाक चाही । ऊपरसँ खम्हाउर, गेन्हारीक साग, मरुआक रोटी, संगहि माछ तँ आवश्यके बुझू । ताहूमे जँ पोठी

माछ होइक तँ ओकर बाते किछु अलग होइछ । अपने माछ खाइत छी की नहि ?"

हम कहलियनि, "जी नहि, हम माछ नहि खाइत छी ।"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "तखन तँ अपने एहि मामिलामे अभागल छी । औ, माछ सनक तँ कोनो पदार्थे नहि छैक । एकरा बिना तँ जीवन बेकारे बुझू । हँ, एकटा गप्प सुनि लिअ' । मरुआक चिक्कस जँ नहि भेटल हो तँ हमरा ओहिठामसँ अवश्य ल' आयब । कोनो तरहक संकोच नहि करब । बेसी तँ नहि, मुदा विध जोगरक अवश्य भेटि जायत। कतेको लोककेँ ने देमए पड़ैत छैक ।"

हम कहलियनि, "जी, ओकर जोगाड़ भ' गेल छैक। चौरचन पावनिमे गाम गेल छलहुँ, ओतहिसँ आनल अछि ।" ''बेस तखन बजारक काज करू । एत'सँ जायब तखन ने कोनो काज होयतैक । हमहूँ ओही लेल निकलल छी, तेँ आइ बेसी गप्प नहि करब,'' ब्यंगकटेश बाबू बजलाह ।

हम किछु बजितहुँ वा अपन बाट धरितहुँ, ताहिसँ पहिने पुनः बजलाह, "एकटा गप्प कहू...?"

हम कहलियनि, "जी, कहल जाओ" ।

ओ बजलाह, "सच पूछी तँ अहाँसँ गप्प करबामे मने नहि भरैत अछि । हमर गप्प तँ केओ बुझितहि नहि अछि । अहाँ जतेक ध्यानसँ सुनैत छी आ नव-नव जिज्ञासा प्रकट करैत छी, से दोसर कहाँ करैत अछि ? लोक सब तँ हमरा बताह बूझैत अछि । जत' जाइत छी, सब केओ पहिनहि मैदान छोड़ि पड़ा जाइत अछि । अहीं कहू तँ, हमर गप्प अनर्गल होइत अछि, बिना मतलबक होइत अछि ।"

हम मनमे सोचलहुँ । हमहूँ तँ धोखे-धाखीमे धरा जाइत छी । तखन हुनकर मन राखक लेल बजलहुँ, "श्रीमान् ! अपने जँ प्राइमरी स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़यबैक तँ ओ की बूझत ? अहाँक गप्प वा विषय

बुझबाक लेल ओतेक क्षमतो तँ होयबाक चाही । हमरा तँ अपनेक एक-एकटा गप्प डाक वचनामृत जकाँ बुझाइत अछि ।"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "हमरा एतेक ऊपर जुनि उठा दिअ' जे खसी तँ अतो-पता नहि रहए ।" आ एतेक कहि ओ अपन बाट धयलनि । हमहूँ तरकारी आदि कीन' लगलहुँ । आइ हमर जान सस्तेमे छुटि गेल । बुझाइत अछि ब्यंगकटेश बाबूकेँ हमरहुँसँ बेसी हड़बड़ी छलनि । नहि तँ ओ तीन-चारि घंटासँ कममे कहाँ छोड़ितथि । सब सामग्री फेहरिस्तसँ मिला-मिला क' लेलहुँ आ डेरा पहुँचलहुँ । कनियाँ पूछि देलन्हि, "आइ बड़ जल्दी आबि गेलहुँ । केओ भेटल नहि छलाह की ?"

हम कहलियन्हि, "भेटल तँ छलाह आ तेहने लोको भेटल छलाह । ई तँ भगवानेक कृपा बुझू जे सस्तेमे जान छुटि गेल । बुझाइत अछि जे आइ अहींक मुँह देखि क' उठल छलहुँ ।" "आ आन दिन की अपन मुँह देखि क' उठैत छलहुँ," कनियाँ बजलीह । सब सामग्री मिला क' कनियाँ पुनः बजलीह, "के भेटल छलाह, ब्यंगकटेश बाबू...?"

हम उत्तर देलियनि, "हँ ।"

कनियाँ बजलीह, "तखन तँ ठीके सस्तेमे छुटि गेलहुँ । हुनका कोनो काज-ताज नहि रहैत छन्हि की ? अनेरे सबकेँ घेरि क' गप्प करताह । हुनकर कनियोँ नहि किछु कहैत छथिन्ह की ?"

हम कहलियनि, "कनियाँ तँ खुशीये मनाबैत छथिन्ह जे ओतेक काल तँ हुनकर जान बचलन्हि आ ओहो सबकेँ थोड़े पकड़ैत छथिन्ह । ओ तँ केवल हमरे बाट तकैत रहैत छथि । हम कतबो कन्नी काटबाक कोशिश करैत छी, मुदा कतहु ने कतहु धराइये जाइत छी । आ जँ धरा गेलहुँ तखन तँ...।" "अहूँ तँ सिलाहे पुरुष छी । झारि क' किएक ने कहैत छियैन्हि जे हमरा एखन दोसर काज अछि । बादमे गप्प करब । मुदा अहूँ तँ बैसि जाइत होयब । दू-चारि कप चाहो भेटिये जाइत होयत," कनियाँ बजलीह ।

हम कहलियन्हि, "से गप्प नहि छैक । ओ छथि तँ बड़ विद्वान

मुदा एहि गाममे हुनक विद्वत्ता के बूझत ? जे किछु पढ़ल-लिखल लोक छलाह ओ तँ शहर पकड़ि लेलनि आ गाममे बाँचि गेलाह सोंटाचंदलोकनि । जिनका सभक काज छन्हि दिन भरि ताश खेलब आ एम्हर के ओम्हर लगायब । ओ सभ हिनकर फिलौसफी की बुझथिन ? तें सौसे गामक लोक हुनका बताह बुझैत छनि । हुनकर गप्प केओ सुनबोक लेल तैयार नहि होइत छनि । हमरा हुनकहु गप्पमे बड़ आनंद अबैत अछि । हुनकर गप्प बड़ तथ्यपूर्ण होइत छनि । हुनक गप्प जँ लोक मानि लिअए आ ओकर अनुसरण करए तँ समाजमे कोनो भेद-भाव नहि रहि जायत । केओ एक-दोसरसँ द्वेष नहि करत । सभ सुख-पूर्वक रहत । ओ समाजक लोककेँ नीमक पात खोआब' चाहैत छथिन जे खयबामे तीत तँ अवश्य होइत छैक मुदा देहक लेल बड़ उपयोगी होइत छैक । खून साफ भ' जाइत छैक । सब बियाधि भागि जाइत छैक । मुदा तीत होयबाक कारणे ओ नीमक पात ककरहु नहि अरघैत छैक ।"

एक दिन भोरे सात बजे ब्यंगकटेश बाबू हमरा ओहिठाम आबि गेलाह । हमरा कतेको काज छल । बाजार सेहो जयबाक छल, मुदा हुनका कोना क' ई बात कहिअनु । एकटा हमरहि ओहिठाम तँ ओ अबैत छथि आ सेहो कहिओ काल । हम बैसबाक लेल कुर्सी देलियनि । ओ बैसि गेलाह आ बजलाह, "बूझल कि ने, आइ भारत बंद अछि । एहि विपक्षी दल के कोनो आर काज तँ छैक नहि । किछु खरखरायल कि बिहार बंद, भारत बंद । सरकारकेँ एहि पर पाबंदी लगयबाक चाही ।"

हम कहलियन्हि, "ई तँ जनताक अधिकार छैक । लोकतंत्रमे सरकारक विरोध करबाक अधिकार तँ संविधानसम्मत अछि ।" तावत् चाह आ बिस्कुट आबि गेल । ब्यंगकटेश बाबू एकटा बिस्कुट मुँहमे लेलनि आ चाहक चुस्की लैत बजलाह, "सही कहल अपने, मुदा एकटा गप्प कहू । ई अधिकार ओकरहिटा छैक की हमरो सबकेँ ।" "जी नहि, ई अधिकार तँ भारतक सब नागरिककेँ छैक," हम कहलियन्हि ।

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "तखन अहाँ दोसराक संग बंदक समर्थन करबाक लेल जे मारि-पीट करैत छी, ओकर की औचित्य अछि ?

की ओ सही अछि ? लोक कतेको ज़रूरी काजसँ यात्रा करैत अछि । अहाँ रेल, बस वा अन्य सवारी रोकि दैत छी । सभक काज हरमाज भ' जाइत छैक । एहि लेल दोषी के ? अहाँक झगड़ा सरकारसँ अछि, मुदा अहाँ नोकसान तँ देशक क' रहल छी । अहाँ महगाइक विरोधमे बंद क' रहल छी, मुदा ओहि बंदसँ जे देशक नोकसान भेलैक, ओहिसँ महगाइ बढ़त की घटत ? देश तँ कोनो एक गोटेक नहि थीक आ ने सरकारक बापक थीक । देश तँ हमरा सभक थीक, जनताक थीक । एकर नफा वा नोकसान तँ जनताक भेल । सरकार तँ मात्र संचालक अछि । सरकारकेँ जे घाटा लगतैक, टैक्स बढ़ाक' ओकरा पूरा करत आ एहिसँ महगाइ आर बढ़त । हमरा बुझने महगाइ बढ़यबामे सरकारसँ बेसी हाथ विपक्षीक अछि ।"

हम पूछलियनि, "तखन विरोध कोना होयत ? सरकारक मनमानी चलैत रहत आ जनता हाथ पर हाथ धयने बैसल रहत ?"

ओ बजलाह, "नहि, कथमपि नहि, एकरा लेल विरोधक स्वरूपकेँ बदल' पड़त । विरोधक स्वरूप एहन हो जाहिसँ ने जनताकेँ कष्ट होइ आ ने राष्ट्रक नोकसान । तखनहि ने बनत हमर भारत महान ।"

हम पूछलियन्हि, "ई कोना सम्भव छैक जे मारबो करबैक आ चोटो नहि लगतैक ?"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, " सब किछु सम्भव छैक । ई बंद तँ केवल वर्चस्वक लड़ाइ थीक, दादागिरी थीक, ककरा लग कतेक गुण्डा छैक, तकर प्रदर्शन थीक । अहाँकेँ मोन अछि जखन हमरा देश पर विदेशी शासक शासन करैत छल तखन गाँधीजी कोना संघर्ष कयने छलाह ? कोनो संघर्ष वा विरोधक लेल जनताक समर्थन आवश्यक अछि आ से जोर-जबरदस्तीसँ नहि लेल जा सकैत अछि । ओकरा लेल जनताकेँ प्रेरित करबाक, उद्वेलित करबाक आवश्यकता छैक । ओकरा लेल मौन जुलुस करू, पर्चा बाँटू । ओ स्वतः अहाँक संग लागि जायत । अहाँक जन प्रतिनिधि जे लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभा वा विधान परिषद्मे छथि, ओ सभ एकर विरोध सभा पटल पर करथि । ओहि विषय पर बहस

करथि, नहि की सदन चलहि नहि देथि । सदन नहि चललासँ सेहो बहुत नोकसान होइत छैक । कतेको आवश्यक विषय पर विचार-विमर्श नहि भ' पबैत छैक । बंदक आह्वान क' सम्पूर्ण देशकेँ अस्त-व्यस्त करब, विपक्षी भूमिकाकेँ कलंकित करैत छैक ।''

हम कहलियन्हि, "आब एखनुक समयमे गाँधीजीक सिद्धान्त वा विचारधारा नहि चलि सकैत अछि । एक्कैसम सदीक लोककेँ परिणाम तुरंत चाही । ओ प्रतीक्षा नहि क' सकैत अछि ।''

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "खूब चलि सकैत अछि । आबहि तँ गाँधीजीक सिद्धान्त चलि सकैत अछि । अन्य देशक लोक सेहो एकर अनुसरण क' रहल अछि आ अपनहि देशक लोक एकरा बिसरि रहल अछि । आजादीक लड़ाइमे कतेको लोक छलाह । एकसँ बढ़ि क' एक नरम दल आ गरम दलक नेता छलाह, मुदा विजय गाँधीक सत्याग्रहक भेल । सत्याग्रह जाहिमे हिंसा नहि हो, ओकर स्थायित्व बेसी होइत अछि । निहत्था पर लाठी-बंदूक चलयबामे ककरो संकोच भ' सकैत छैक । हिंसा पर आधारित सत्याग्रह बेसी काल धरि नहि चलैछ । नेताजी सुभाष चन्द्र बोसक कृत्य किछु लोककेँ उद्वेलित अवश्य कयलक मुदा गाँधीक सत्याग्रह सम्पूर्ण देशवासीकेँ झकझोरि देलक । पूरा देशक लोक गाँधीजीक संग भ' गेल आ अंगरेजी सरकार एहि ठामसँ भागबाक लेल विवश भ' गेल । अंग्रेज तँ चल गेल । हमर देशो आजाद भ' गेल मुदा जखन लोककेँ बेसी भूख लागल रहैत छैक, तँ ओ ई नहि देखैत अछि जे पहिने की खयबाक चाही । ओकरा आगाँ जे सामग्री अबैत छैक, ओही पर टुटि पड़ैत अछि । तहिना आजादी भेटितहि हमरा देशक नेताक भेल । सब आपसमे छिन्न-भिन्न भ' गेलाह । देशक टुकड़ा भ' गेल । सभ नेता बंदरबाँट करब शुरू क' देलनि । सभ अपन-अपन तिजौरी भरबामे लागि गेलाह ।"

हम पुछलियन्हि, "एहिसँ बचबाक की उपाय छलैक ।"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "एहिसँ बचबाक एकेटा उपाय छलैक, त्याग ।" मुदा सभक धैर्यक बान्ह टुटि गेलैक । ओ जे गुलामीक डर

छलैक, से खतम भ' गेलैक । सब उच्छृंखल भ' गेल । ककरो पर नियंत्रण नहि रहल । अंग्रेजक फेकल पाशामे सब उलझि गेल । आजादीक लड़ाई तँ सब केओ मिलि क' लड़ल छलाह । ओहि मे ने कोनो जातिवाद छलैक आ ने सम्प्रदायवाद । मुदा आजादी भेटितहि पता नहि कत' सँ ई "वाद" आबि गेल, जेना-जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाइ-भतीजावाद, परिवारवाद, क्षेत्रीयतावाद आदि । हमरा तँ बुझाइत अछि जे आजादीक डोलीक संग दहेजमे ई सब आबि गेल ।''

हम कहलियन्हि, "दहेजमे नहि आयल अछि । ई तँ पहिनहि सँ देशक भीतर दम सधने पड़ल छल । सामंतक डरें मूड़ी नहि उठबैत छल । आजादी भेटितहि सब कुकुरमुत्ता जकाँ बिलसँ बहरा गेल ।"

ओ बजलाह, "किछु हद तक अहूँक कहब सत्य बुझाइत अछि, मुदा सबसँ पैघ कारण नेतालोकनिक स्वार्थ अछि ।"

हम पूछलियन्हि, "लोक सब तँ कहैत अछि जे सबसँ बेसी स्वार्थी नेहरूजी छलाह । हुनकहि कारण देशक बँटबारा भेल ।"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "लोकक मुँह तँ अहाँ बन्न नहि क' सकैत छी । जतेक लोक ततेक मुँह, मुदा जँ बहुमतकेँ मानैत छियैक तँ नेहरूजीकेँ प्रधानमंत्री बनब अनुचित नहि भेल । एहि देशकेँ नेहरूजी आ इन्दिराजी जे किछु देलनि से दोसर ने देलक आ ने देत । ई हमर व्यक्तिगत दृष्टिकोण अछि । तखन तँ सभक चश्मा एक रंगक नहि होइत छैक । सब अपना-अपना चश्मासँ देखैत अछि । आजादीक माने भेलैक जे बुनियादी सुविधा बिना कोनो भेद-भावक सबकेँ भेटि सकए । तकर सर्वत्र अभाव अछि । जे विपक्ष एखन सरकारक विरोध क' रहल अछि, काल्हि तँ ओएह सरकारमे छल । ओ की कयलक ? किएक जनता ओकरा नकारि देलकैक ? आब अहाँ ककरो ठकि नहि सकैत छी । ककरो मूर्ख नहि बना सकैत छी । सभ किछु इंटरनेट पर आबि जाइत छैक । विदेशमे बैंकमे गोपनीयता छैक मुदा अपना देशमे एकर अभाव अछि तें हमरा देशक टाका विदेश चल जाइत अछि । जँ एहि ठाम राखब तँ सरकारक खुफिया तंत्र

ओकर जाँचमे लागि जायत । ई उचित नहि । बैंकक गोपनीयता रहबाके चाही । कोनहुँ स्थितिमे ई सार्वजनिक नहि होयबाक चाही ।"

हम कहलियन्हि, "एहिसँ काला धनक पता लगैत अछि ।"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "अहाँ खूब काला धनक पता लगाबू आ तें अहाँक देशक टाका स्विश बैंकमे पहुँचि जाइत अछि । अहाँक टाकासँ दोसर मालदार भ' जाइत अछि आ अहाँ झालि बजबैत अर्थव्यवस्थासँ जूझैत रहैत छी । जँ बैंकक गोपनीयता कायम रहत तँ अपना देशक टाका अपनहि देशमे रहत आ ओहिसँ कतेको योजना चलत ।"

हम कहलियनि, "तखन कालाधन पर नियंत्रण कोना होयत ? लूट-खसोट आर बढ़ि जायत ।"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "जखन मने काला छैक तँ धन काला पर कतेक नियंत्रण करब । ई सब आब किताबी गप्प रहि गेल अछि । हमरा देशक जे नेता सभ छथि, जे देशक संविधान बनबैत छथि, नव-नव कानून पास करैत छथि, ओएह सभ सदनमे खराबसँ खराब आचरण करैत छथि । सभाध्यक्ष पर जूता-चप्पल फेकैत छथि । सबटा मर्यादाकेँ तोड़ि दैत छथि । हुनकासँ बेसी मन काला आ धन काला ककरहु नहि छैक । एकहुटा नेता करोड़पतिसँ कम नहि छथि । हमरा तँ डर होइत अछि, जँ इएह सिलसिला रहल तँ पुनः हमर देश गुलाम ने बनि जाय ।"

हम पूछलियनि, "ई गप्प अपने कोन आधार पर कहि रहल छी ।"

ब्यंगकटेश बाबू बजलाह, "एक दिस सरकार नक्सलवादक विरोध करैत अछि आ दोसर दिस ओकर प्रमुख सहयोगी बंदक आयोजनमे ओकर समर्थन प्राप्त करैत अछि । कहू ई कोन राजनीति भेलैक ? गाँधीजीक सपना की छलनि आ भ' की रहल अछि ? सरकारक मान्यता छलैक, केन्द्रसँ जे सहायता राशि गामकेँ भेटैत छलैक, ओहिमे मात्र पंद्रहसँ बीस फीसदी गाम धरि पहुँचैत अछि । ई गप्प एकटा निवर्त्तमान प्रधानमंत्री जनसभामे बाजल छलाह आ ओकरहि पूरा करबाक लेल मुखियाकेँ पूर्ण शक्ति प्रदान कयल गेल, मुदा भेल की ? सबटा टाका आ योजना मुखियाक

पेटमे चल गेल । गरीब, लाचार आ बेवश जहिनाक तहिना अछि। आजादीक अर्थ भेल सबके समान अधिकार होयबाक चाही मुदा गरीब वा दलितक बच्चा जाहि स्कूलमे पढ़ैत अछि, सरकार ओहि स्कूलक शिक्षकसँ छः मास जनगणना करबैत अछि । कहिओ बड़द-महींस तँ कहिओ भेंड़-बकरी गनबाबैत अछि । ओ बच्चा पढ़त की कपार, ओ तँ मात्र छात्रवृत्तिक लेल स्कूल धयने रहैत अछि । गरीबकेँ लालो कार्डक लेल मारामारी कर' पड़ैत छैक आ जँ भेटिओ गेलै तँ राशन डीलरक पेटसँ बहरायत तखन ने । गरीब के कम दाम पर राशन उपलब्ध करा ओकरा आर गरीब आ असहाय बनाओल जाइत छैक । ओकरा तँ ओ शक्ति प्रदान कयल जयबाक चाही, जाहिसँ ओहो सभक समक्ष मूड़ी उठा क' ठाढ़ भ' सकए ।" एहि गप्प-सप्पमे बारह बाजि गेल । ओ उठैत बजलाह, "फेर कहिओ...।"

●

रेल-यात्रा

तारीख आठ अगस्त छलैक । हमरा भागलपुरसँ नई दिल्ली जयबाक छल । जमायकेँ कहने छलियनि स्लीपर कोचमे आरक्षण करयबाक लेल मुदा ओ ए.सी.मे आरक्षण करौलन्हि । गाड़ी छलैक विक्रमशिला एक्सप्रेस आ खुजबाक समय छलैक ग्यारह पैंतीस । हम ग्यारह पचीसमे स्टेशन अयलहुँ किएक तँ हमरा आरक्षण छल । तेँ निश्चिन्त सँ स्टेशन अयलहुँ । जखन बौगी लग अयलहुँ तँ स्तब्ध रहि गेलहुँ । बौगी पहिनहिसँ खचाखच भरल छलैक । हम सब तीन गोटे छलहुँ आ सामान सेहो कम नहि छल । कहुना क' अपना सीट लग पहुँचलहुँ । तावत् गाड़ी खुजि गेल । सभटा सामानकेँ सीटक तरमे राखि जगहक प्रयासमे लागि गेलहुँ ।

जकरे पूछियैक से मुँह घुमा लैत छल । केओ सीट छोड़बाक लेल तैयार नहि । कहुना क' हमहूँ सभ ओहीमे घुसिअयलहुँ । मुदा स्थिति ओएह जे एकटा कैदीकेँ सेल घरमे होइत छैक । ने केम्हरो घुसुकि-फुसुकि सकैत छलहुँ आ ने हाथ-पायर सोझ क' सकैत छलहुँ। बीच-बीचमे ओकरा सभक गर्जनासँ कानक पर्दा अवश्य झनझना जाइत छल । एक सज्जनसँ पूछलियनि तँ कहलनि जे दिल्लीमे प्रदर्शन छैक । एहन स्थितिमे अपना कनियाँकेँ बैसल देखि हँसी सेहो लगैत छल । ओ जखन यात्रा

करैत छथि तँ अपना बर्थ पर ककरो नहि बैस' दैत छथिन । की तँ दू सीट पर पसरि क' बैसि जाइत छथि वा पूरे बर्थ पर ओंघरायल रहैत छथि । यात्री जकरा बैसबाक जगह नहि होइत छैक ओ अनाप-शनाप बाजि क' चलि जाइत अछि, मुदा ओहिसँ श्रीमतीजीक सेहत पर कोनो असरि नहि होइत छनि । हम सब उम्मीद करैत छलहुँ जे जमालपुर धरि टी. टी. बाबू अओताह आ हमरा सभक कष्ट दूर करताह, मुदा ओहो अलोपित भ' गेलाह वा भीड़मे भुतिया गेलाह । भीड़ आर बढ़िये रहल छलैक । सभटा स्टेशन पर किछु ने किछु लोक चढ़ितहि गेल । कहुना क' पटना पहुँचलहुँ । आशा करैत छलहुँ जे पटनामे किछु राहत भेटत, मुदा ओतहु सँ गाड़ी खुजि गेल । गाड़ी खुजितहि चेन घीचब शुरू भ' गेल । से कतेको बेर भेल । पता लागल जे चारि-पाँचटा विद्यार्थीक सेहो आरक्षण पटनासँ छलैक मुदा ओकरा सभकेँ सीट नहि भेटलैक । तें ओ सभ एहन क्रिया-कलाप क' रहल अछि । अंतत: टी.टी. बाबू अयलाह आ सभकेँ सीट दिआबैत आगू बढ़ि गेलाह । हमरा आरक्षण तँ तीन सीटक छल, मुदा दूटा भेटल । ओही पर संतोष कयल । एकटा पूर्ण सीट श्रीमतीजीकेँ प्राप्त भेलनि आ एकटा पर हम दू गोटे । कहुना क' हम दूनू गोटे एकटा बर्थ पर पड़ि रहलहुँ । टी. टी. बाबूक जइतहि चारि-पाँच गोटे तेना भ' क' सीट पर बैसि गेल जेना मुर्दाकेँ साबेक जौरसँ कसिक' बान्हि देल गेल हो । ने एम्हर हिलि सकैत छलहुँ आ ने ओम्हर । इएह स्थिति प्राय: आरक्षणवला सभटा यात्रीक छलनि । बीच-बीचमे हुनका सभक नेता भाषण दैत छलाह । अपने सब कोनो चिंता नहि करू । अपने सबकेँ कष्ट भेल, ताहि लेल हम क्षमायाचना करैत छी । हमहूँ सब जनतेकेँ अधिकार दिअएबाक लेल दिल्ली जा रहल छी । एहि भ्रष्ट सरकारक माथ पर हथौड़ी मारबाक लेल । जनता अन्न बिनु मरि रहल अछि आ सरकारी गोदाममे अन्न सड़ि रहल अछि । जनताकेँ जलक अभाव छैक, रहबाक लेल घर नहि छैक आ ई सरकार मुट्ठी भरि लोकक सुख-सुविधाक लेल कानून बनबैत अछि, संविधान संशोधन करैत अछि । एहि सरकारकेँ एको क्षण रहबाक अधिकार नहि छैक ।

हम पूछलियनि, ''नेताजी! एहिसँ पूर्व तँ अपनहि सरकारमे छलहुँ । ई सब काज किएक नहि कयलहुँ ।'' ।

नेताजी बिगड़ैत बजलाह, ''अहाँ सरकारी पक्षक लोक बुझा रहल छी । तें एहन गप्प बाजि रहल छी । हमर एकेटा इशारा पर फेका जायब । चुप-चाप अपन यात्रा करू ।''

एहि पर बटकूदन बाबूकेँ नहि रहल गेलनि । ओ नेताजीकेँ चुटकी लेलनि, ''नेताजी! जखन विपक्षमे एतेक ताव अछि, तखन कुर्सी पर कतेक ताव रहत ? की फर्क अछि अहाँमे आ वर्त्तमान सरकारमे ? हमरा बुझने तँ दुनू एके चट्टा-बट्टाक लोक छी ?"

नेताजी लजाइत बजलाह, "नहि, नहि, एहन गप्प नहि छैक । कोनो गप्पक सीमा होइत छैक । कोन गप्प कत' कयल जयबाक चाही, आ कत' नहि ?"

बटकूदन बजलाह, "एहिसँ नीक अवसर की भ' सकैत छैक ? एखन तँ मात्र समय काटबे उद्देश्य अछि । किछु चर्चो भ' जायत आ समय सेहो कटि जायत ।"

नेताजी, ''हँ, हँ, से तँ सत्ये कहल अछि ।''

बटकूदन बजलाह, ''एकटा गप्प कहू । एतेक कष्टमे जे सब केओ जा रहलहुँ अछि, से एकर विकल्प नहि छलैक ?"

नेताजी बजलाह, ''विकल्प तँ छलैक । हम ओकरा लेल प्रयासो कयलहुँ । रेलमंत्रीसँ एकटा रेलगाड़ी हावड़ासँ दिल्ली धरिक मँगलहुँ । मुदा ओ किएक देताह ? ओ सभ तँ चाहैत छथि जे जतेक कम लोक आबि सकए, ओतेक नीक । तखन तँ जे संसाधन उपलब्ध अछि, ओहीसँ काज चलाबए पड़त । किछु पयबाक लेल किछु गमाब' सेहो पड़ैत छैक ।''

बटकूदन बजलाह, ''नेताजी! अहाँ कहैत छी विकास नहि होइत छैक, मुदा हम सगरो विकासे-विकास देखि रहल छी । देश जखन आजाद भेल तखन हमरालोकनि अमेरिकाक गहूम पर निर्भर छलहुँ । आइ ततेक

उपजा भ' रहल अछि जे देशमे बाहरसँ अन्न मँगाब' नहि पड़ैत अछि। पहिने लोकके एक-एक कोस जलक लेल जाय पड़ैत छलैक। आब घरे-घरे चापाकल विद्यमान अछि। जन-बोनिहारकेँ भरि दिनक बोनिहारी चारि सेर अन्न छलैक। आइ दू सय पचास टाका भ' गेलैक अछि। मुदा जे काज चारि सेर अन्नमे होइत छलैक से आइ दू सय पचास टाकामे नहि होइत छैक। की एकरहु लेल सरकारे दोषी अछि ? ई तँ ओएह गप्प ने भेल जे दोसरक घेघ उघारै छी आ अपन झँपने छी।''

नेताजी, ''हम तँ ई नहि कहैत छी जे विकास नहि भेल अछि। विकास तँ भेल अछि, मुदा ओकर गति मंथर अछि। जतेक होयबाक चाही से नहि भेल अछि। भ्रष्टाचार बढ़ि रहल अछि, बेरोजगारी बढ़ि रहल अछि, महगाई बढ़ि रहल अछि। एकरा पर वर्त्तमान सरकारक कोनो अंकुश नहि अछि। जहिना पाकिस्तान सरकारक रिमोट आतंकवादीक हाथमे अछि, तहिना एहि सरकारक रिमोट विदेशक हाथमे अछि। हम सभ एहि रिमोटसँ सरकारकेँ आजाद कराब' चाहैत छी। एहने ज्वलंत मुद्दा पर काल्हि जंतर-मंतर पर हमरा सभक प्रदर्शन अछि।''

एकटा यात्री बजलाह, ''नेताजी, एकरा लेल दोषी के अछि ?''

नेताजी, ''एकरा लेल दोषी तँ सरकारे ने अछि। ओकर नीति स्पष्ट नहि छैक। बाजत किछु आ करत किछु।''

दोसर यात्री, ''कथमपि नहि, सरकारक दोष देबाक मतलब भेल कायरता। सरकार तँ कोनो एक व्यक्ति नहि अछि। ओ तँ समूह अछि। ओकर कोनो मंत्री वा अधिकारी दोषी भ' सकैत छैक। अहाँ ओकर नाम डरे व कोनो अन्य कारणे नहि लेमए चाहैत छी। तें सबटा दोष सरकार पर द' क' अपन जबाबदेही पूर्ण करैत छी। जकर सब अंगे बिगड़ि जयतैक से कोन-कोन अंगक इलाज कराओत ? सरकार बैंक वा अन्य प्रतिष्ठानकेँ अधिग्रहण क' निजी क्षेत्रसँ सार्वजनिक क्षेत्रमे अनलक, मुदा की फायदा भेलैक ? अधिकांश प्रतिष्ठान घाटामे चलि रहल छैक। ओहिमे कार्य कयनिहार कर्मचारी वा पदाधिकारी तँ विदेशसँ नहि आयल छथि। सब केओ अपनहि देशक छथि मुदा केओ काजे नहि करताह आ सब मिलि ओकरा लुटबे करताह, तँ की ओ प्रतिष्ठान धँसत नहि ?"

नेताजी, ''एकरहु पर तँ सरकारे के ने कारबाइ करबाक चाही। मुदा ओ हाथ पर हाथ धयने बैसल रहत तँ कारबाइ कोना होयत।''

बटकूदन बजलाह, ''ठीके कहलहुँ, सरकार कारबाइ कयलक तँ ओ मजदूर-किसानक विरोधी अछि। कारबाइ नहि कयलक तँ निष्क्रिय अछि। सरकारक स्थिति तँ सांप-छुछुन्नरिवला भेल अछि। एकटा कवि कहने छथि:-'दिल बदलल, दिलदार ने बदलल, यार बदलि क' की करतै। जौं देशक लोक बदलतै नहि, सरकार बदलि क' की करतै।।" सरकार जँ बदलिओ जायत, लोक तँ ओएह रहत। कर्मचारी-अधिकारी तँ इएह रहत। ओकर कार्य-प्रणाली तँ एहने रहतै। तें एकरा लेल मात्र सरकारक दोष लगायब उचित नहि।"

नेताजी, ''घरक कोनो गड़बड़ीक लेल घरक मुखियाकेँ दोषी मानल जाइत छैक वा नहि ? तें ई तँ सरकारेक कमजोरी अछि जे ओ कारबाइ नहि करैत अछि। जँ ओ देश चलयबामे सक्षम नहि अछि तँ ओकरा कुर्सी छोड़ि देबाक चाही। दोसर दलकेँ अवसर देबाक चाही।"।

एकटा यात्री बाजल, ''ई तँ ओएह ने भेल जे सजमनि चक्कू पर खसए वा चक्कू सजमनि पर, सभ हालतिमे कटतैक तँ सजमनिञे। घरमे जखन सब बैसिये क' खयनिहार रहत, तखन घरक मुखिया कत'सँ पूरा करत। एहि परिस्थितिमे जे केओ आओत से ओएह करत। अहूँकेँ तँ अवसर भेटले छल, की की कयलहुँ ?''

नेताजी, ''हमरा पार्टीकेँ तँ बहुत कम दिनक अवसर भेटलैक। यावत् सब किछु बुझलक-गमलक तावत् सरकारे खसि पड़लैक।" एतेक कहि नेताजी दोसर कोठलीमे चलि गेलाह। बटकूदन एकटा यात्रीसँ पुछलथिन, ''की यौ भाइ साहेब! अपने हिनकहि पार्टीक लोक छी ?''

ओ बजलाह, ''जी नहि, हम कोनो पार्टी-तार्टीक लोक नहि छी।"

बटकूदन, ''तखन अहाँ एहि रैलीमे कोना जा रहल छी ?''

ओ बाजल, ''हम तँ फ्रीमे दिल्ली घुमबाक लेल जा रहल छी। हमरा सबकेँ सएह कहि क' नेताजी ल' जा रहल छथि। ओत' भोजन आ दू-दू सय टाका ऊपरसँ भेटत।"

बटकूदन, ''ओत' जँ प्रदर्शनमे गोली चलि जाय आ अहाँमे सँ ककरो गोली लागि जाइ, तखन की करबैक ?"

ओ यात्री बाजल, ''ओत' गोलिओ चलि सकैत छैक ?"

बटकूदन, ''चलिओ सकैत छैक आ नहिओं चलि सकैत छैक। ई तँ वातावरण पर निर्भर करैत छैक। जँ भीड़ उत्तेजक होयत तँ किछु भ' सकैत छैक।"

ओ यात्री बाजल, ''तखन हम स्टेशनेपर रहि जायब। आगाँ नहि जायब।'' हमरा सभक संग भोजन-जल उपलब्ध छल, मुदा परिवेश अनुकूल नहि रहलाक कारणे ओकर उपयोग नहि भेल। भीड़मे झोड़ा कोना बहार करब, हाथ कोना धोअब आ जँ कदाचित लघुशंका जयबाक हो तँ कोना जायब ? एतेक समस्याक समाधानार्थ अन्न-जल ग्रहण नहि कयलहुँ। हमरा कबीरक एकटा पाँती मन पड़ि गेल-'धोबिया जल बिच मरत पिआसा'। रातिमे एक बेर लघुशंका लागल। उठिक' चारू दिस देखलहुँ। कतहु पयर धरबाक जगह नहि। सीटक चारू कात एना ने यात्री सभ पड़ल छलैक जेना कुरुक्षेत्रमे लाश। बाथरूम जायब सम्भव नहि छलैक। तें लघुशंकाकेँ दबाब' पड़ल। जीवनमे एहन यात्रा एखन धरि नहि कयने छलहुँ। ई हमरा जीवनक अविस्मरणीय रेल-यात्रा छल।

●

एतेक जाति किएक ?

ओना तँ जातिक विभाजन कर्म केर आधार पर कयल गेल, मुदा आइ हमर समाज एतेक रास जाति-पाँतिमे बँटि गेल अछि जकर वर्णन करब कठिन बुझना जाइत अछि। हम सभ मनु महाराजक संतान छी। मनु महाराज कोन जातिक वा कोन सम्प्रदायक लोक छलाह, से तँ कहब कठिन अछि, मुदां ई अवश्य सत्य अछि जे ओ कोनहु एके जातिक आं एके सम्प्रदाय केर होयताह। कारण एक व्यक्ति कोनो एके जातिक वा एके धर्मक भ' सकैत अछि। हुनका बादे भेल अछि कर्मक आधार पर जातिक बँटवारा। जखन जातिक बँटबारा भेलैक तँ मात्र चारि भागमे समूहकेँ बाँटल गेलैक। बुझि लिअ' जेना एखन सरकार चलयबाक लेल विभिन्न मंत्रालय वा मंत्री बनाओल जाइत अछि, तहिना सामाजिक कार्य-प्रणालीकेँ सुचारु रूपें संचालन हेतु एकर निर्माण भेल। एक तरहें वा आजुक भाषामे मंत्रालय केर संरचना कयल गेल। एकर प्रकार छल, शिक्षा, प्रतिरक्षा, खाद्यान्न आ परिवहन। शिक्षा मंत्रालय केर भार जिनका देल गेल से ब्राह्मण कहौलन्हि। हिंनक कार्य, पूजा-पाठ, यज्ञ-जाप, पठन-पाठन आ आध्यात्मिक विकास करब निर्धारित कयल गेल। प्रतिरक्षाक भार जाहि मनुसंतानकेँ देल गेलनि से क्षत्रिय कहौलन्हि। हिनक कार्य आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा करब निर्धारित कयल गेल।

वैश्यकेँ खेती-बाड़ी, व्यवसाय आ पैदावारक आयात-निर्यात करबाक कार्य देल गेलनि । परिवहन अर्थात् कतहु आयब-जायब, खेत जोतब, धान रोपब, धान काटब आदि सेवा कार्य शूद्रकेँ देल गेलनि । एहि तरहेँ सम्पूर्ण समाजकेँ चारि भागमे विभक्त कयल गेल ।

अध्यात्मक अनुसार ई मानव देह सेहो चारि भागमे विभक्त अछि । मस्तिष्क ब्राह्मण, भुजा क्षत्रिय, पेट वैश्य आ चरण शूद्र अछि । एहि तरहेँ सभटा मनुष्यक देहमे सेहो चारिटा जाति विद्यमान अछि ।

आगू चलिक' सामाजिक दण्ड विधानक कारणेँ एहि जातिक स्वरूपमे कतेको परिवर्त्तन भेल । उपर्युक्त तीनू जाति यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्य तँ स्थिरे रहलाह मुदा शूद्र जातिमे दिनानुदिन वृद्धि होइतहि रहल । जेना डोम, चमार, हलखोड़, मलाह, धानुक, केवट, कहार, हजाम, हलुआइ, दुसाध आदि । एकर प्रमुख कारण छल सामाजिक दण्ड विधान । सब जातिमे एकटा प्रमुख होइत छल जकरा मेट वा माइन्जन कहल जाइत छलैक । एकर निर्णय ओहि जातिक लोक सभकेँ मान्य होइत छलनि । कोनो व्यक्ति कोनो अधलाह काज कयने, समाजक मुख्य धारासँ बहिष्कृत क' देल जाइत छल आ ओ एक नव जातिक रूपमे समाजसँ अलग-थलग रह' लागैत छल । डा. योगानन्दझाजी अपन पोथी ''लोक जीवन आ लोक साहित्य'' मे उद्धृत करैत छथि जे डोम जातिक उत्पत्ति ब्राह्मण जातिसँ भेल अछि (डोम जातिक सामाजिक स्वरूप पृष्ठ सं. 16) । हुनका अनुसारेँ एकटा ब्राह्मण छलाह । ओ चारि भाय छलाह । ओ सभ गोटे नित्य पोखरिमे स्नान कर' जाइत छलाह । एक दिन पोखरिक घाट पर एकटा गाय मरल पड़ल छलैक । ओकरा हटयबाक लेल सभसँ छोट भायकेँ बाध्य कयल गेलैक । कहबीओ छैक जे बाभनक छोट आ राड़क मोट । जखन ओ छोटका भाय गायकेँ हटा, घाट साफ क' घर आपस अयलाह, तँ हुनका घरमे प्रवेश नहि कर' देल गेलनि । पता लगलनि जे हुनका जातिसँ बारि देल गेलनि जखन कि ओ जेठ भायक आज्ञाक पालन कयने छलाह । सम्भवतः एतहिसँ जातीय विभाजन शुरु भेल होमए ।

चमार जातिक उत्पत्तिमे सेहो किछु एहने किम्वदन्ति प्रचलित अछि । मिला-जुलाक, सभ जातिक उत्पत्ति एही चारू जातिसँ भेल अछि । एक-दोसर जातिक बीच वैवाहिक प्रसंगक कारणे सेहो नव जाति बनैत रहल । कारण ओकरा विवाहक मान्यता दुनू जातिमे सँ केओ नहि देलक आ एकटा नव जाति बनि गेल । सामाजिक परिपेक्ष्यमे एक दोसर केँ जातिसँ बारबाक लेल कतेको कारण अछि । केवल अधलाहे काज कयने बारल जाय, से कोनो आवश्यक नहि । अपन स्वार्थक पूर्तिक लेल वा अपन बात मनयबाक लेल सेहो लोक बारल जाइत रहल छल । डा. महेन्द्र राम, पूर्व अध्यक्ष मैथिली अकादमी, पटना अपन पोथी ''गहबर'' केर एकटा कथा 'कारण' मे उल्लेख करैत छथि जे अमरेशसँ हुनका समाजक लोक कमलपुरमे सलहेसक गहबर बनयबाक लेल नीक धन राशि चन्दा स्वरूप लेलनि । गहबर बनल, सलहेसक पूजा भेल, मुदा अमरेशकेँ हकारो धरि नहि देल गेलनि । बादमे अमरेशकेँ पता लगलनि जे गाममे एकटा दियादकेँ कन्ट्रोलक दुकान खोलबाक लेल पाँच हजार टाकासँ आर्थिक मदति कयने रहथि आ अधिक दिन भ' गेलाक बाद ओकर तकादा कयने रहथि । ताहि क्रोधसँ सब मिलि क' हुनका बारि देलक आ तेँ पूजाक हकारो नहि देल गेल छलनि । अंततः पंच लोकनि निर्णय लेलनि जे जँ अमरेश ओहि टाकाक आधा छोड़ि देथि, तँ हुनका पुनः जातिमे राखल जा सकैत छनि । आ अमरेशकेँ ओ निर्णय मान' पड़लनि । कइओ की सकैत छलाह ? तखन तँ 'अरध तजहि बुध सरबस जाता ।'

मनु स्मृतिक अनुसार जन्मसँ सब केओ शूद्र अछि आ जनेउ संस्कारक बाद द्विज, वेदाभ्यासक बाद विप्र आ ब्रह्मकेँ जनलाक बाद ब्राह्मण होइत अछि । तखन अन्य जातिक संग ई प्रक्रिया किएक नहि कयल जाइत अछि? एहिसँ सम्पूर्ण देशमे वर्ण विहीन समाजक स्थापना भ' सकैत अछि, मुदा एहि विषय पर सामाजिक कार्यकर्त्ता, राजनेता एवं अन्य प्रबुद्ध वर्गक ध्यान नहि छनि । कारण जँ एहि देशमे वर्ण विहीन समाज बनि जायत तँ हुनकर राजनीति कोना चलतनि ? अगड़ा-पिछड़ा,

हिन्दू-मुसलमान, धर्म-सम्प्रदाय केर नारा खतम भ' जायत । तखन लोक कर्मठ व्यक्तिकेँ अपन नेता चुनत । जाति तँ रहतैक नहि जे जातिवाद करत, मुदा तखन ई मंगनू-ढोढ़ाइ नेता नहि होयताह । जखन विद्वान आ निर्विकार लोक संसदमे जयताह आ हुनका द्वारा नीति निर्धारित कयल जायत, तँ निश्चित रूपेँ देशक स्वरूप किछु आर होयत ।

एहि दिशामे प्रज्ञा समिति, हरिद्वार, गायत्री यज्ञक माध्यमे सामूहिक रूपें विभिन्न जातिक लोकके‍ँ उपनयन संस्कार करबा क' जनेउ पहिरौलक आ एहि तरहें हुनका सभकेँ द्विजक रूप देलक । वेद पठन-पाठनक अधिकारी बनौलक । वेद पठन-पाठनक अधिकार शूद्रकेँ नहि छन्हि । एहि लेल शूद्रक द्वारा कतेको प्रतिक्रिया भेल अछि मुदा ओ प्रतिक्रिया सभ निरर्थक अछि । बिना जनेउ धारण कयने उपनयनसँ पूर्व ब्राह्मणोक बच्चाकेँ वेद पठन-पाठनक अधिकार नहि छन्हि । किएक तँ उपनयनसँ पहिने ओहो शूद्रेक कोटिमे गनल जाइत छथि । प्रज्ञा समितिक ई काज एहि दिशामे एकटा नीक प्रयास कहल जा सकैत अछि । एहिसँ समाजक बीच जे दूरी अछि से कम भ' सकैत अछि आ समरसताक भाव बढ़ि सकैत अछि ।

हमरा लोकनिक जे वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था अछि, ओकरा मादे जातीय व्यवस्थाकेँ जन्मक आधार पर मानल जाइत अछि । केओ छोट जातिक लोक महापंडित किएक ने भ' जयताह, हुनका ब्राह्मणक रूप मे मान्यता नहि देल जायत । कारण ओ पंडित भेलाक बादो अपन जातीय गुणकेँ नहि छोड़ैत छथि । जखन मुनि विश्वामित्र क्षत्रिय भ' क' अपना तप बलें ब्रह्मर्षिक उपाधि प्राप्त क' सकैत छथि, तँ अन्यकेँ ओ उपाधि किएक नहि भेटत ? तखन एकटा बात आर जे कतबो तपस्या कयलासँ मुनि वशिष्ठ विश्वामित्रकेँ ताधरि ब्रह्मर्षिक उपाधि नहि देलथिन, जाधरि हुनका हाथमे क्षत्रिय जातिक प्रतीक फरसा छलनि । एकरा लेल मुनि वशिष्ठकेँ अपन एक सय बेटाकेँ गमाब' पड़लनि, मुदा फरसा हाथसँ फेकैत देरी ओ राजर्षिसँ ब्रह्मर्षि भ' गेलाह । रावण ब्राह्मण कुलमे जन्म लेने, महापंडित होइतहुँ, राक्षसक कोटिमे गनायल । कारण ओकर

आचार-विचार, क्रिया-कलाप ब्राह्मणक विपरीत छलैक । अन्य जातिक लेल सेहो ई आवश्यक छनि जे ओ अपना कर्म वा संस्कारक माध्यमे जाहि जातिक स्वरूप ग्रहण कर' चाहैत छथि, ओकर आचरण आ व्यवहार सेहो ग्रहण करथि । तैखन ओ ओहि जातिक भ' सकैत छथि चाहे केओ हुनका मान्यता दैन्हि वा नहि । ओ अपन आचार-विचार बनौने रहथि । मुदा होइत अछि उनटा । ओ जनेउ ग्रहण क' अपनाकेँ ब्राह्मण बुझ' लगैत छथि मुदा आचार-विचारमे कोनहुँ बदलाओ नहि अनैत छथि । अपना अहंकार आ दर्पमे चूर रहैत छथि आ मान्यता नहि भेटला पर प्रतिक्रियावादी भ' जाइत छथि । ओ ओहि समाज आ जातिक निंदा करैत छथि जकरा ग्रहण करबाक हुनक प्रबल इच्छा रहैत छन्हि । जकर परिणाम होइत अछि जे ने ओ अपना जातिमे रहैत छथि आ ने ओहि जातिमे, जकर ओ परिकल्पना करैत छथि । एकटा तेसर जाति बनि क' रहि जाइत छथि ।

गुरु शुक्राचार्य सभ ऋषिसँ अधिक विज्ञ रहितहुँ अपना आचार-विचार आ विद्याक गलत उपयोग करबाक कारण दैत्य गुरु बनि क' रहि गेलाह वा बुझू तँ अन्य ऋषि लोकनिसँ बहिष्कृत भ' गेलाह । जखन कि हुनका संजीवनी विद्याक ज्ञान सेहो छलनि जे अन्य ऋषिकेँ नहि छलनि । सब जातिक लोक अपनासँ ऊपरवला जातिक संग मिल' चाहैत अछि मुदा अपनासँ नीचाँक जातिकेँ अपनामे मिलाब' नहि चाहैत अछि । एहि सम्बन्धमे एकटा घटना उल्लिखित अछि-

एक बेर मधुबनी जिलामे एकटा एस.डी.ओ., सदर आयल छलाह । ओ जाति-पाति मान'वलाक घोर विरोधी छलाह । एक दिन चारिटा चमार हुनका दरबारमे गेल आ बाजल, ''सरकार ! एहि ठाम एकटा ब्राह्मण केर होटल अछि, जाहिमे हम सब भोजन करबाक लेल गेल छलहुँ । ओ पंडितजी हमरा सबकेँ अपमानित कयलनि आ भोजनो नहि देलनि ।'' एस.डी.ओ., सदर दक्षिण भारत केर छलाह आ बड़ कड़गर लोक । ओ हुनका सबसँ होटलक पता ल' क' बजलाह, ''ठीक छै, अहाँ सब ओहि होटल पुनः चलू आ हम आबि रहल छी ।'' ओ अपना संगे एकटा

मेहतरकेँ ल' क' घटना स्थल पर पहुँचि गेलाह आ होटल मालिकसँ पुछलन्हि, "अहाँ हिनका लोकनिकेँ भोजन किएक नहि देलियनि ?" होटल मालिक बजलाह, "सरकार, जखन ई सब आयल छलाह तखन भीतरमे जगह नहि छलैक । हम कहलियन्हि जे कनेक काल बैसू वा विशेष हड़बड़ी होमए तँ बाहरमे भोजन द' दैत छी । ताहि पर ई लोकनि हमरहि गारि-फज्भति दैत चल गेलाह ।"

एस.डी.ओ. बजलाह, "पंडित जी ! अहाँ जनैत छी जे ई सब कोन जातिक छथि ?" पंडित जी बजलाह, "सरकार ! हम तँ व्यवसाय क' रहल छी । हमरा जाति आ पातिसँ कोन सरोकार । हम तँ एकेटा जाति बूझैत छियैक, ग्राहक । जे केओ ग्राहक अबैत छथि, हम हुनका भोजन दैत छियैन्हि आ ओकर उचित दाम लैत छी ।" एस.डी.ओ. साहेब प्रसन्न होइत बजलाह, "ठीक छै, अहाँ पाँचटा थारीमे भोजन परोसू ।" पंडितजी तुरंत पाँचटा थारी लगा देलथिन । दुनू दिसुक दुनू थारीमे चारू चमारकेँ बैसा देल गेल । ओलोकनि भोजन करब शुरु कयलनि । तावत् एस.डी.ओ. साहेबक इशारा पर बीचवला थारीमे ओ मेहतर बैसि गेल, जकरा एस.डी.ओ. साहेब अपना संगे अनने छलाह । ओकरा बैसितहि चारू गोटे भोजन करब बन्न क' देलक आ बाजल, "हम सब एहि मेहतरक संग भोजन कोना करब ?" एहि पर एस.डी.ओ.साहेब बजलाह, "जखन अहाँ सब मेहतरक संग भोजन नहि क' सकैत छी, तँ अहाँक संग सवर्ण कोना भोजन करत । ककरो पर दोषारोपण करबासँ पूर्व अपन मन टोबि लेबाक चाही । आ ई कहि ओहि चारूकेँ मारि-पीटि क' भगा देलथिन ।

हमर एकटा मित्र एकटा मुसलमान संगीक ओहि ठाम बरोबरि खाइत-पीबैत छलाह । कतबो समाजक लोक हुनका मना कयलक मुदा ओ नहि मानलनि । हुनक आँखि तखन खुजल, जखन हुनकहि बेटीक विवाहमे ओ मित्र हुनका ओहि ठामक रान्हल मासु नहि खयलक । ओ कतबो प्रयत्न कयलन्हि, मुदा ओ नहि मानलक आ बाजल, "हम सब हिन्दूक रान्हल मांस नहि खा' सकैत छी । ई हमरा सभक धर्मक विरुद्ध

अछि । कहबाक भाव ई जे जखन अहाँ दोसरकेँ झुकाब' चाहैत छी, तँ अपनहुँ सतत झुकबाक लेल तैयार रहू । अन्यथा ओएह गप्प भेल जे, "पंचक गप्प माथ पर मुदा खुट्टा गाड़ब एही ठाम" ।

कबीर पंथमे एकटा विशेषता देखल गेल अछि । ओहिमे जतेक शिष्य छथि, हुनका बीच भोजन करबामे कोनो जातीय बंधन नहि छन्हि । तकर एकटा आर कारण अछि जे ओ लोकनि निरामिष भोजन करैत छथि, मुदा विवाह आदिमे जातियेक भ' क' रहैत छथि । तथापि आंशिक रूपें ई परिपाटी सराहनीय आ अनुकरणीय अछि ।

दिनांक 16.07.2005 क टी.भी. पर समाचार आयल जे पिछड़ा आयोग द्वारा सरकारकेँ प्रस्ताव देल गेल अछि जे जतेक धार्मिक ग्रंथ, मनु स्मृति, रामायण, वेद, पुराणमे शूद्र शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि, ओकरा हटा क' नव ग्रंथ तैयार कराओल जाय । संगहि हिन्दूमहा सभा ओकर पुरजोर विरोध कयलक । एहिसँ एकटा बात तँ अवश्य दृष्टिगोचर होइत अछि जे एहिसँ समाजक सब जातिक लोक परस्पर लड़त, मरत आ कटत, मुदा एहिसँ ककरो कोनो फायदा नहि भ' सकैत छैक । हमर कहबाक तात्पर्य ई जे अहाँ अपनाकेँ शूद्र किएक मानैत छी ? अहाँ अपन आचार-विचार आ व्यवहारमे बदलाव आनू । लोकक कहला पर ध्यान जुनि दिअ' । लोक तँ नीकहुँ लोककेँ पागल बना दैत अछि । तेँ की ओ पागल भ' जायत ? अहाँ क्रोध आ दंभमे जे कर' चाहैत छी, से जुनि करू । ओहिसँ नुकसान अहींक होयत । रावण सेहो तँ सएह कयलक । ओ ब्राह्मणकेँ सतओलक; पूजा-पाठ, हवन-यज्ञकेँ विध्वंस कयलक । धरती पर कोनो सत्कर्म नहि होमए देलक । ओहिसँ ककर नोकसान भेलैक, से तँ अहाँ सब जनितहि छी ।

हमर एकटा मित्र छथि, पाण्डेयजी । पाण्डेयजी लखनऊमे दवाइक दोकान करैत छथि आ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ केर कट्टर समर्थक छथि । हुनका संग समय-समय पर वाद-विवाद होइत रहैत अछि । पाण्डेयजी तीन पुस्तसँ आर. एस. एस. केर समर्थक छथि । हिनक बाबूजी आ दादाजी सेहो अति सक्रिय रहलाह । कतेको बेर जेल सेहो गेलाह ।

एक दिन पाण्डेयजी हमरासँ पुछलनि, ''जातीय व्यवस्थाक विषयमे अहाँक की ध्येय अछि ?"

हम कहलियनि, ''ई सब सामाजिक विकृति थीक । एक-दोसर केँ नीचाँ देखयबाक लेल बनाओल गेल अछि आ एहिसँ समाजक जे दबंग लोक छथि से नाजायज लाभ उठबैत छथि ।"

पाण्डेयजी बजलाह, ''मुदा हम तँ एकरा मानैत छी । हम जाहि समाजमे रहैत छी, ओकरा लेल ई मानब आवश्यक अछि ।"

हम, ''तखन अपने आर.एस.एस.केँ धोखा दैत छियैक ।"

पाण्डेय जी, ''से कोना''?

हम, ''आर.एस.एस. केर की उद्देश्य अछि'' ?

पाण्डेय जी, ''आर.एस.एस. केर उद्देश्य अछि, पूर्ण हिन्दुत्व स्थापित करब ।"

हम, ''आ जखन हिन्दुएसँ दूर रहब, तखन हिन्दुत्व कोना ? तेँ आवश्यक अछि ओकर एकीकरण'' ।

पाण्डेय जी, ''से तँ छैक, मुदा हमरा ओहि ठाम एकटा घटना घटित भेल अछि । तेँ हम सभ विवश छी ।"

हम, ''केहन घटना ?" पाण्डेयजी कहैत छथि, ''घटना लगभग हजार वर्ष पूर्वक अछि । एकर उल्लेख उन्नाव समाहरणालयक गजटमे सेहो अछि । उन्नाव जिला लखनऊ जनपदमे अछि । ओहि समयमे कन्नौजक राजा महाराज जयचंद छलाह । ओ बड़ प्रतापी छलाह । हुनका राजमे एकटा कबीला आबि क' बसि गेल । ओ सब बड़ उत्पाती आ लड़ाकू छल । ओकर कतेको शिकायत राजाकेँ भेटि चुकल छलनि । राजाक सिपाही सभ सेहो ओकरासँ कर नहि ल' पबैत छल । राजा जयचंद सेहो असमंजसमे छलाह कारण ओ सभ उपद्रवी छल आ अकारण प्रजाकेँ नोकसान पहुँचा सकैत छलैक । एही बीच एकटा आर घटना घटित भेलैक । कबीलाक सरदार एकटा ब्राह्मण परिवारक कन्याक

अपहरण क' लेलक आ ओकरासँ अपना बेटाक विवाह करयबाक योजना बनौलक । जखन ओहि ब्राह्मणकेँ एकर पता लगलनि तखन ओ कबीलाक सरदार लग गेलाह आ बजलाह, ''अहाँ हमरा बेटीक अपहरण कयल अछि आ अपना बेटाक संग ओकर विवाह कराब' चाहैत छी । एहिमे हमरा कोनो आपत्ति नहि अछि किएक तँ हम ओकरा अहाँसँ छोड़यबामे समर्थ नहि छी, मुदा हम चाहैत छी जे विवाह हमरा रीति-रेबाजसँ होमए ।'' कबीलाक सरदार मानि गेल आ एहि तरहें शुभ लग्नक अनुसार विवाह होयब एक मासक बाद तय भेल । एहि तरहें ब्राह्मणकेँ एक मासक समय भेटि गेलनि । ओ राजा जयचंदक दरबारमे गेलाह आ अपन फरियाद सुनौलनि । राजा तँ पहिनहिसँ कबीलाक सरदार पर बिगड़ल छलाह । ओ दरबारमे घोषण्ा कयलन्हि, ''जे केओ हमरा राजकेँ कबीला मुक्त करत, ओकरा हम मुँह मांगा पुरस्कारसँ पुरस्कृत करब । समूचा दरबार स्तब्ध भ' गेल । केओ किछु नहि बाजल । अपन प्राण ककरा प्रिय नहि होइत छैक । सिंहक माँदसँ बचि क' चलि आयब सम्भव छलैक, मुदा कबीलासँ बचि क' आयब सम्भव नहि छलैक । एकटा पाण्डेयजी सेहो ओहि दरबारमे छलाह । ओ तीन भाइ छलाह । तीनू बड़ बहादुर छलाह । ओ सब एकसर दस गोटे पर भारी पड़ैत छलाह । हुनका लोकनिकेँ कोनो डर-भय नहि होइत छलन्हि । ओ उठिक' बजलाह, ''सरकार ! जँ आदेश भेटए, तँ हम ई काज क' सकैत छी ।"

राजा बजलाह, ''अहाँकेँ जतेक सिपाही आ धनक अवश्यकता हो से बाजू ।"

पाण्डेय जी, ''हमरा पाँच सय सिपाही आ एक मासक ओकर रसदक जे खर्च हो से देल जाय ।" पाण्डेयजीकेँ पाँच सय सिपाही आ राजकोषसँ एक हजार स्वर्ण मुद्रा देल गेलनि । पाण्डेयजी अपन योजना बनौलनि आ ठीक विवाहक दिन, जखन पूरा कबीलाक लोक विवाहक वातावरणमे शराब पीबि क' झूमि रहल छल, अपना दलक संग चढ़ाइ क' देलथिन । कबीलाक प्रायः सब सदस्य मारल गेल । करीब पचासटा सिपाही सेहो घायल भेल । पाण्डेय बंधु सेहो घायल छलाह मुदा जानक

बाजी लगाक' ओहि ब्राह्मण कन्या आ जयचंदक राजकेँ कबीलाक हाथसँ मुक्त करौलन्हि । पाण्डेय बंधु ई शुभ समाचार ल' क' राज दरबार गेलाह, एहि आशासँ जे राजा प्रसन्न होयताह आ पुरस्कार देताह । मुदा पता नहि किएक राजा उनटे क्रोधित भ' गेलाह । ओ बजलाह, ''अहाँ सब अनर्थ कयलहुँ अछि । ओकर जे नृशंस हत्या कयल से उचित नहि । हम तँ कन्याकेँ मुक्त कराक' ओकरा भगयबाक लेल कहने छलहुँ, नहि कि ओकरा जानसँ मारबाक लेल । अहाँ तीनू भायकेँ बहिष्कृत कयल जाइत अछि । अहाँक संग केओ गोटे कोनो संबंध नहि रखताह । अहाँसँ कोनो तरहक कर नहि लेल जायत आ जीवन-यापनक लेल तीन गाम देल जाइत अछि । बड़का भायकेँ बड़की परड़ी, मझिलाकेँ निवर्णा आ छोटकाकेँ छोटकी परड़ी ।'' पाण्डेय बंधु बजलाह, ''मुदा सरकार ! हम तँ राजाज्ञाक पालन कयल अछि । तखन ई दंड किएक ?''

राजा बजलाह, ''अहाँकेँ हत्या करबाक आदेश नहि देल गेल छल । अहाँ सब हत्यारा छी । आबसँ अहाँकेँ लोक नंगू पाण्डेय केर नामसँ सम्बोधित करत ।'' बेचारे तीनू भाय गंगाक कछेर पर खोपड़ी बना क' रह' लगलाह ।

एकटा तिवारीजी बरोबरि गंगा स्नान करबाक लेल ओही घाट पर अबैत छलाह । ओ यदा-कदा पाण्डेय बंधुक आतिथ्य स्वीकार करैत छलाह आ हुनकर भक्त भ' गेल छलाह । ओहो हुनका व्यथासँ व्यथित छलाह । तिवारी जी आ नंगू पाण्डेयमे खूब घनिष्ठता भ' गेल छलनि । जेना हवन करबामे हाथ पाकि गेल हो, किछु तेहने गप्प तिवारीजीक संग भ' गेलनि । किछु दिनक बाद जखन पाण्डेयजीक धिया-पूता पैघ भेलनि, विवाहक समस्या आबि गेलनि । केओ हुनका ओहिठाम वैवाहिक सम्बन्ध करबाक लेल तैयार नहि भेलनि । परिवारमे बेटाक अलावे तीनटा बेटी सेहो छलनि । बेटा सब तँ बाहर नौकरीक लेल चलि गेलनि आ ओतहि जेना-तेना प्रेम विवाह क' लेलकनि । मुदा बेटीक संगे समस्या छलैक । ओ तीनू भाय एक दिन तिवारीजीसँ बड़ अनुनय-विनय कयलक । तिवारीजीक वयस करीब पचास वर्षक छलनि आ घरमे बेटी-पुतहु

सेहो । तिवारीजी बड़ भावुक लोक छलाह । ओ पाण्डेय बंधुक अनुनय-विनयकेँ ठोकरा नहि सकलाह । ओ हुनका तीनू बेटीक संग विवाह क' लेलनि । जखन हुनका घरक लोककेँ एकर भनक लगलैक तँ हुनकहु घरसँ निकालि देलक आ ओहो पाण्डेय बंधुक संग अलगसँ घर बनाक' रह' लगलाह ।''

हम, ''आब अहीं कहू, राजाक ई निर्णय उचित भेलनि ।''

पाण्डेय जी, ''जी ! एहि लेल जे राजा हुनका कबीलाक हत्या करबाक लेल तँ नहि कहने छलथिन ।''

हम, ''राजा स्वयं जनैत छलाह जे ओ कबीलासँ लोहा नहि ल' सकैत छथि । कबीलाक लोक आइ एकटा अपहरण कयलक, काल्हि दोसर आ परसू तेसर करैत । पाण्डेय बंधु समाजक रक्षा कयलनि । हुनका वीरताक लेल पुरस्कार भेटबाक चाहियनि । से नहि क' राजा हुनका एक अलग जातिक निर्माण करबाक लेल बाध्य कयलथिन । जँ ओ दोषी छलाह त' राजा हुनका मृत्यु दंड द' सकैत छलथिन । जीवन भरि कारागारमे राखि सकैत छलथिन । जातिसँ वा समाजसँ बहिष्कृत करब उचित नहि बुझना जाइत अछि ।''

पाण्डेय, ''एतेक लोकक जे हत्या भेलैक से उचित भेलैक ?''

हम, ''औजी ! अहाँ तँ भारतीय राजनीति केर गप्प क' रहल छी । आतंकवादीकेँ सजा नहि दिऔक तखन ओकरा पकड़ितहि किएक छी । लोककेँ देखयबाक लेल । जखन ओ कोनो मंत्रीक धिया-पूताक अपहरण करैत अछि तँ सबकेँ छोड़ि दैत छी । हमर विचारसँ ओकरा पकडू नहि, मारि दिऔक ।''

पाण्डेयजी, ''मारि देबैक तँ ओकर की उद्देश्य छलैक, ओकर सरगना के अछि, एकर पता कोना चलत ?''

हम, ''पाण्डेयजी, सतरंजक खेल खेलाइत छी । जखन प्यादा मरैत छैक आ ओकरा संगे अन्य पात्र मरैत छैक, तखन ओकर राजा स्वयं

प्रकट होइत छैक । तहिना जखन ओकर सभटा समर्थककेँ नष्ट क' देबैक तँ ओ स्वतः सामने आबि जायत वा भागि पड़ायत । कयलासँ सभ किछु भ' सकैत अछि । जखन रक्तबीजोक अंत भ' सकैत अछि, तँ दोसराक कोन कथा ।"

जाहि दण्ड विधानक कारणें चारिसँ चारि सय जाति भ' गेलैक, आइ ओ दण्ड विधान कत' गेल । आइ समाजमे एहन कोनो घर नहि अछि जे भ्रष्ट आचरणसँ वंचित होमए । आइ ब्राह्मणक बेटा निधोख मुर्गीक अण्डा खाइत अछि, शराब पीबैत अछि, कुसंस्कारक अनुसरण करैत अछि । हुनका ओ परिवार आ समाज किएक नहि बारैत अछि ? हुनका एहि समाजसँ बहिष्कृत किएक नहि कयल जाइत छनि ? एकर एकटा इहो कारण अछि जे पहिने समाजमे एकाधटा अधलाह वा दुराचारी लोक होइत छलैक, जकरा बहिष्कृत करब सम्भव छलैक मुदा आइ-काल्हि ओकर संख्या अधिक छैक आ भलमानुषक कम । दोसर गप्प जे आइ समाजक क्षेत्र बड़ विस्तृत भ' गेल छैक । पहिने प्रचुर मात्रामे परिवहन व्यवस्था नहि रहने लोक गामहिमे समटल रहैत छल आ आइ पूरा विश्वमे व्याप्त अछि । आ इहो एकटा कारण छैक अनुशासन नहि मानबाक । जँ विशेष दबाब देबैक तँ कतहु अन्यत्र चल जायत । तें समाजोक संग लाचारी छैक जे ओकरा निकालत की अपने निकलत ? एहि सम्बन्धमे एकटा कथा द्रष्टव्य अछि ।

एकटा छलाह माइञ्जन । हुनका समाजमे बड़ प्रतिष्ठा छलनि । समाजमे जे केओ व्यक्ति ऊँच-नीच काज करैत छल, ओकरा पंचैतीमे बजा क' बारि दैत छलाह । अंततः ओहि समाजमे दू गोटे बाँचि गेलाह । एक दिन माइञ्जन ओकरो बारि देलनि आ जखन पंचायतसँ आपस घुरिक' आंगन अयलाह, तँ आँगनवाली पुछलथिन्ह, "आजुक पंचैतीमे की भेल ?"

माइञ्जन बजलाह, "आइ ओकरहु बारि देलियैक ।"

आंगनबाली बजलथिन, "आइ अहाँ अपनहि बरा गेलहुँ ।"

आइ ठीक ओएह दशा अछि । जँ अहाँ अधलाह काज कर'वला केँ बारैत छी तँ अपनहि बरा जाइत छी किएक तँ आइ ओकरे गनती बेसी छैक । आइ ओ सामाजिक दण्ड विधान चल'वला नहि अछि । आइ जखन कुकृत्य कयलाक बादो अपना भाय, भतीजा, बेटा, पोंताकेँ नहि बारैत छी, तँ ओकर कोन कसूर जकरा पहिनहिसँ बारने छी । किएक ने ओकरहु अपना संगे समेटि लैत छी? किएक ओकरा एतेक जातिमे बाँटि क' रखने छी । जँ सम्पूर्ण भारतमे एकटा जाति आ भाषा भ' जायत तँ भारत केर स्वरूपे बदलि जायत आ अहूँकेँ लोक दुरंगा व्यवहार कर'वला नहि कहत । सर्वत्र समरसताक धार बहत जकर आवश्यकता भारतक अखंडताक लेल अपेक्षित अछि ।

●

लाश

राजपुरमे एकटा जमींदार छलाह, नाम छलनि कुमार साहेब । लोक सब हुनका मालिक कहि सम्बोधित करैत छलनि । ओहि गाममे गरीब लोकक संख्या विशेष छलैक जकरा सभक जीवन-यापन कुमार साहेबक ओहिठामक बोनिहारीसँ चलैत छलैक । गाममे किछु एहनो लोक छलाह जिनकर अपन खेती-बारी छलनि, मुदा ओहो सभ पटौनी आ बोनिहारक लेल कुमारे साहेब पर निर्भर छलाह । कारण पटौनीक लेल जाहि पोखरिक व्यवहार होइत छल, ओकर मालिक कुमारे साहेब छलाह आ जतेक बोनिहार छलैक, सेहो हुनके जमीनमे बसल छलनि । कुल मिलाक, बिना कुमार साहेबक आदेशक एकटा पत्ता तक नहि हिलैत छलैक ।

ओही गाममे एकटा गरीब परिवार छल रमेसराक । रमेसरा दू भाय छल, रमेसरा आ परमेसरा । रमेसराक कनियाँ छलैक बुधनी । तीनू कुमार साहेबक ओहिठाम बोनिहारी करैत छल । रमेसरा, परमेसरा खेतीक काज करैत छल आ बुधनी घरक चौका-बर्त्तन आ भानस-भात। रमेसरा आ परमेसरा काज करबामे भूते छल । भरि दिनमे पाँच-पाँच कट्ठा खेत कोड़ि लैत छलैक । तें कुमार साहेब ओकरा दुनू भायकें बेस मानैत छलाह । दुनू भायकेँ सबसँ बेसी खेतो बटाइ देने छलाह ।

बुधनीकेँ तीनटा बेटा छलैक । तीनूकेँ पढ़ा-लिखाक' दिल्ली पठौलक । सबकेँ सरकारी नोकरी भ' गेलैक । दस वर्ष पूर्व रमेसरा काल-कवलित भ' गेल । ओकर बाद बुधनीक भार सेहो परमेसरे पर आबि गेलैक ।

परमेसरा सेहो आब बूढ़ भ' गेल छल । ओकर ओ पहिलुका काज करबाक सामर्थ्य आब नहि छलैक । पहिने ओ दोसरोक खेत बटाइ करैत छल । आब ओकर अपना खेत दोसरे बटाइ करैत छलैक । अभावग्रस्त रहितहुँ कहुना क' जीवनक गाड़ी घीचि रहल छल ।

छौड़ा सबकेँ छुट्टीक अभाव छलैक । बहुत बेसी दिन पर गाम अबैत छलैक । तीनूक विवाह-दान आ धिया-पूता सेहो भ' गेल छलैक । परिवार सेहो संगहि रहैत छलैक । गामसँ कोनो लगाओ नहि । ओ सब कतेको बेर बुधनी आ परमेसराकेँ सेहो दिल्ली अयबाक लेल आग्रह कयने छलैक मुदा ई सब अपन डीह-डाबर छोड़बाक लेल तैयार नहि भेल।

बुधनीकेँ दस दिनसँ बोखार लागल छलैक । डाक्टर कहलकै जे ओकरा टाइफाइड भ' गेल छैक । इलाजमे करीब दू हजार टाका लगतैक । परमेसराके तँ होशे उड़ि गेलैक । एहि ठाम तँ खयबो पर आफति छलैक । दू हजार टाका कत'सँ आओत? ओ कतेको लोककेँ गोहरौलक मुदा केओ नहि सुनलकै । सब उगैत सूर्यकें प्रणाम करैत अछि । जँ केओ टाका देबो करैत तँ कोन उमेद पर ? परमेसरा तँ अपनहि झख मारैत अछि, टाका कोना सधाओत आ छौंड़ो सभक कोनो अता-पता नहि छलैक ।

परमेसरा जखन निराश भ' गेल, तखन छौंड़ा सभकें खबरि कयलक मुदा केओ नहि टसकल । दवाइ-वीरो नहि भ' सकलै । अंततः बुधनी ई संसार छोड़ि देलक । तीन दिनसँ बुधनीक लाश ओकरा सभक प्रतीक्षा क' रहल छैक आ ओहिठाम बैसल अछि एसकरे परमेसरा, मुड़ी लटकौने, किंकर्त्तव्यविमूढ़ भ' क' ।

बुधनी जखन विवाह भेलाक बाद सासुर आयल, तँ परिवारमे मात्र तीन गोटे छल । रमेसरा, परमेसरा आ बुधनी । रमेसरा, परमेसरा तँ भोरे

खेतमे काज करबाक लेल जाइत छल आ मुनिहारि सांझे क' अबैत छल। कहिओ-कहिओ तँ अधिक रातियो भ' जाइत छलैक। एहि बीचमे बुधनी घरक सब चीज-वस्तुकेँ ओरिआ क' राखि दैत छलैक। बाढ़निसँ घर-दुआरि, आंगन आ मालक बथान साफ करैत छलैक। ओकर बाद मालिकक ओहि ठामक काज सेहो क' अबैत छलैक। बुधनीक अयलासँ घरक तँ रूहानिये बदलि गेलैक। आब घर, घर सनक लगैत छलैक।

जखन रमेसरा आ परमेसरा खेतसँ घुरिक' घर अबैत छल, तँ ओकरा दुनूकेँ बुझना जाइत छलैक जे कतहु अन्यत्र दोसराक घरमे तँ नहि आबि गेलहुँ। फेर घरक आगूमे बिहँसैत बुधनीकेँ देखैत छल जे ओकरे सभक बाट तकैत रहैत छलैक। तखन बुझबामे अबैत छलैक जे हमरहि घर थिक आ दुनू भाय आंगन जाय। घरक अनुपम व्यवस्था आ काया-कल्प देखि दुनू भाय बड़ हर्षित छल। परमेसर के नहि रहल गेलैक, ओ बाजिये देलक, ''भैया! ठीके ने लोक कहैत अछि, 'बिनु घरनी घर भूतक डेरा'। काल्हि धरि ई घर, घर नहि लगैत छल मुदा आइ तँ एकर नक्शे बदलि गेल छैक। आब हमहूँ सब मनुक्ख सनक लागब।''

तावत् बुधनी दू लोटा जल ल' क' देलकै आ बाजल, ''जल्दी सँ दुनू गोटे हाथ-पयर धो लिअ', हम खायक परसै छी।'' दुनू भाय हाथ-पयर धोलक आ खयबाक लेल बैसि गेल। आइ ओकरा दुनूकेँ खयबामे अभूतपूर्व स्वाद भेटि रहल छलैक। रमेसरा सोचि रहल अछि, ''पहिने खेतसँ अबैत छलहुँ तँ भानस सेहो करैत छलहुँ। एकटा वस्तु भेटैत छल तँ दोसर नहि। दोसर भेटल तँ तेसर नहि मुदा बुधनीक अबिते सभटा फिरीशानी दूर भ' गेल।''

आब घर मे की अछि की नहि, एहिसँ दुनू भायकेँ कोनो मतलब नहि। आब ई सभ सोचब वा इन्तजाम करब बुधनीक काज छल। दुनू भाय बुधनीकेँ भगवान जकाँ मानैत छल आ बुधनी सेहो अपन कला-कौशल आ वाक्पटुतासँ दुनू भायकेँ प्रसन्न रखबाक चेष्टा करैत छल।

बुधनी दुनू भायक खायक, दुपहरमे खेतमे पहुँचाबैत छलैक

जाहिसँ ओकरा दुनूकेँ काज करबामे खूब मन लगैत छलैक। बुधनी नित्य तँ मालिकक ओहि ठाम जाइतहि छलि। मालिक अपने तँ रहलाह नहि, मुदा मलिकाइनो बुधनीकेँ बड़ मानैत छलीह। बुधनीक स्वभवो तँ ओहने छलैक जे केओ ओकरा मानि सकैत छलैक। सतत मुँह पर हँसी छिड़िआइत रहैत छलैक। कौखन मुँह मलिन नहि होइत छलैक। दुःख सहन करबाक असीम साहस पौने छलि। बुधनी चौका-बर्त्तनक काज खतम क' कहिओ काल मलिकाइनिक सेवा सेहो करैत छलि।

मलिकाइन बजैत छलीह,''बुधनी, हमर आदति जुनि खराब क'र। तोहर जाँतब-पीचब तँ बड़ नीक होइत छौक, मुदा जँ आदत भ' जायत तँ बिना जतौने नींदो नहि होयत। तें हमर एतेक सेवा नहि कर।''

ताहि पर बुधनी कहैत छलि, ''आदत भ' जायत तँ की होयतैक? हम तँ छीहे ने। आखिर हमरा सभक गुजर कोना क' होयत, अहीं सभक सेवासँ ने।''

बुधनीक गप्पसँ मलिकाइन बड़ प्रभावित छलीह। ओकरा किछु ने किछु दैते रहैत छलथिन। ओ यदा-कदा अपन बेटा कमलनाथक फेरल कपड़ा-लत्ता बुधनीक बच्चाक लेल दैत रहैत छलीह। बुधनी जखन ओ कपड़ा अपना बेटा सबकेँ पहिराबैत छलि तँ ओहो सब कोनहु राजकुमारसँ कम नहि लगैत छलैक। आखिर कपड़ा फेरलो तँ राजकुमारेक छलैक।

मालिककेँ एकेटा बेटा छलथिन्ह, कमलनाथ। कमलनाथ एम. बी.ए. क' क' मुम्बई केर कोनो कम्पनीमे मैनेजर छलाह आ खूब शान-शौकतसँ रहैत छलाह। गामो पर कोनो अभाव नहि छलनि। हुनकर रहन-सहन देखि क' बुधनीकेँ चकबिदोर लागि जाइत छलैक। ओ सोचैत छल, हमरहु छौड़ा सब जँ पढ़ि-लिखि लैत तँ एहिना बड़का हाकिम बनि जाइत। ओ मने-मन ठानि लेलक, कहुना ने कहुना हमहूँ अपना छौड़ा सबकेँ अवश्य पढ़ायब।

एक दिन बुधनी सब काजसँ निवृत्त भ' रमेसरा आ परमेसराक जलखै ल' क' खेत पहुँचल। ओ दुनू भाय बड़ आतुरतासँ बुधनीक

प्रतीक्षा क' रहल छलैक । आन दिनक अपेक्षा आइ बड़ अबेर भ' गेल छलैक । बुधनीकेँ देखितहि परमेसरा बाजल, "भौजी ! आइ एतेक देरी किएक भ' गेल । सूति रहल छलहुँ आ कि हमरा सबकेँ बिसरि गेल छलहुँ ?"

बुधनी बाजलि, "ने सूतल छलहुँ आ ने अहाँ सभकेँ बिसरल छलहुँ । आइ हमर आँखि खूजल । आइ हमरा छौड़ा सभक प्रति कर्त्तव्यक बोध भेल । आइ तीनू छौड़ाकेँ स्कूल पहुँचाक' आबि रहल छी । तें कनेक देरी भ' गेल ।" बुधनीक गप्प खतमो नहि भेल छल कि रमेसरा पूछि बैसल, "से की ! स्कूलमे कोनो काज आबि गेलैक की ?"

बुधनी बाजलि, "अहाँ तँ जेना अपने गदहा जकाँ खटैत छी, धियो-पूताकेँ बूझैत छियैक । ओकरा सभकेँ काज करबाक लेल नहि पठौने छियैक । एखन ओकरा सभक वयस काज करबाक योग्य थोड़े भेलैक अछि । एखन तँ ओकरा सभक वयस खयबा-खेलयबाक छैक ।"

परमेसरा बाजल, "भौजी ! अहाँ एकदम ठीक कहैत छी । ओ सभ एखन काज किएक करत ? एखन एही वयसमे काज करत तँ देह टुटि जयतैक, कमजोर भ' जायत आ जुआनीयेमे बूढ़ भ' जायत । एखन ओकरा सभकेँ खेलए दिऔक ।"

रमेसरा बाजल, "एखन ओकरा सभसँ कोनो भारी काज थोड़े करा रहल छियैक ? एखन तँ छोट-छीन हल्लुक-फल्लुक काज जेना गाय, महिसिक चरवाही करत । बनिहारक बेटा अछि, एखनहिसँ ने धीरे-धीरे सीखत ।"

बुधनी बाजलि, "हमर बेटा ई सब नहि सीखत ।"

रमेसरा पूछलक, "तखन तोहर बेटा की सब सिखतौ ?"

बुधनी बाजलि, "हमर बेटा पढ़ाइ करत । खूब पढ़त आ बाहर शहरमे नोकरी करत । तें हम आई ओकरा सभकेँ पढ़बाक लेल स्कूल पठौने छियैक ।"

परमेसरा बाजल, "भौजी, ई तँ बड़ नीक काज कयल अछि । हमरा तँ विश्वास नहि होइत अछि जे हमरहु सभक धिया-पूता पढ़त-लिखत आ जँ पढ़ि-लिखि लेत तँ अवश्ये मनुक्ख बनि जायत । हमरा सभक जिनगी तँ बनिहारीमे कटि जायत, मुदा ओकरा सबकेँ बनिहारी नहि कर' पड़तैक । पढ़ि-लिखि क' बाहर चल जायत, कोनो ने कोनो नोकरी क' लेत आ हमरहु सभक दिन फिरि जायत ।"

रमेसरा बाजल, "रौ परमेसरा ! बनिहारक बेटा बनिहारे रहए तँ नीक । कौआ कतबहु साबुन लगौलासँ हंस थोड़े बनि जायत ।"

बुधनी बाजलि, "बोनिहारक जिनगी कोनो जिनगी थीक । ओकरा तँ लोक बड़द बुझैत अछि । एकटा काज भेल नहि, की दोसर अढ़ा देत । जिनगी भरि बड़द जकाँ खटैत रहत मुदा खयबाक लेल भरि पेट दाना नहि भेटतैक । ओना काज कोनो अधलाह नहि होइत अछि मुदा ज्ञान हासिल करब आवश्यक अछि । हम अपना छौड़ा सबकेँ बबुआन बनायब बबुआन ।"

रमेसरा बाजल, "धरतीक लोक भ' क' आकाशक सेहन्ता किएक करैत छें ? धरतीये पर रह, आकाशमे जुनि उड़ ।"

परमेसरा बाजल, "भैया ! भौजी ठीक कहैत छौक । कमयबाक लेल तँ हम दुनू भाय छीहे । छौड़ा सभकेँ पढ़'-लिख' दहीक । पढ़ि-लिखि लेत तँ नीक आमदनीयों करत आ समाजमे सेहो प्रतिष्ठा होयतैक । नहि तँ हमरहि सभ जकाँ जिनगी भरि बेगारी करैत मरि जायत ।"

रमेसरा बाजल, "ठीक छै, जे तोरा सभक विचार होउ" ।

एक दिन रमेसरा बुधनीसँ पूछलक, "बुधनी, तों एतेक बुधियार कोना भेलें । स्कूल तँ तोहूँ नहिए देखने होयबें ।"

बुधनी हँसैत बाजलि, "बुद्धि कोनो धनियाँ, मिर्चाइ थिकैक जे दोकानसँ कीनि लेबैक । ई सब पैघ लोकक संगतिसँ भेटैत छैक । ई सब तँ भरि दिन बनिहारी करैत छैक, खाली खटनाइयेटा जनैत छैक, मुदा हम

जे मलिकाइनिक ओहि ठाम जाइत छियैक, काज करबाक लेल, से खाली बुद्धिये सिखबाक लेल ने । बुद्धि तँ पैघ लोकक ओहि ठाम बान्हल रहैत छैक । कहबीओ छैक जे 'बुरिबक बेटा ढेउए काबिल'।"

रमेसरा बाजल, "सैह तँ हमरा आश्चर्य लागल । हम सभ छौड़ा सभक लेल किछु नहि सोचलहुँ आ बुधनी जनाना भ' क' कतेक ऊँच गप्प सोचि लेलक ।"

बुधनी बाजलि, "इनारक बेंगक लेल दुनियाँ इनारे भरि रहैत अछि । तों सभ खाली कमयबह आ खयबह । से छोड़ि दोसर कोनो गप्प सोचबो नहि करबह, मुदा बड़का लोक सभ कतेक तरहक गप्प सोचैत अछि । ओहिमे किछु नीको आ किछु अधलाहो । जे नीक दिस बढ़ल, से नीक लोक बनि गेल । दुनियाँमे आदर्श स्थापित कयलक आ जे अधलाह सोचलक, से अधलाह लोक बनि गेल । धरतीक कलंक भ' गेल । समुद्र मंथनसँ जँ बिष बहरायल, तँ अमृत सेहो । तेँ लोककेँ नीक गप्प अवश्य सोचबाक चाही ।"

परमेसरा बाजल, "भौजी, हम दुनू भाय तोरा बुद्धिक लोहा मानैत छी ।"

बुधनी बाजलि, "खाली लोहा मानलासँ नहि ने होयतैक । ओकरा पूरा तँ सभ केओ मिलिये क' ने करबैक ।"

रमेसरा बाजल, "हँ.. हँ... से तँ होयबे करतैक । हमहू सभ तोरे संग छियौक ।" रमेसरा सोचि रहल छलैक, "बुधनीक अयलासँ तँ हमरा घरक रूपे-रंग बदलि गेल । हमरा दुनू भाय के ने एतेक बुद्धि आ ने ओतेक पलखति जे किछु सोचब आ ने केओ सही बाट देखौनिहार । गरीबकेँ के पूछैत अछि ? सब अपनहिमे बेहाल, सब अपनहि हित सोचनिहार । आन जतेक खाधिमे खसए, ततेक नीक । इएह तँ सोच अछि अपना समाजक ।"

एतेक भेलाक बादो रमेसराक मन भीतरसँ छौड़ा सभकेँ पढ़यबाक नहि होइत छलैक । ओ तँ चाहैत छल जे छौड़ा सभ ओकरहि सभक संग मिलिक' मेहनति-मजदूरी करय । पाँच बापूत कमेनिहार भ' जायत तँ

मालिकसँ किछु आर जमीन बटाइ ल' लेत आ ओकरे आमदनीसँ किछु जथा अरजि लेत । रहबाक लेल चिक्कन घर बनाओत जाहिसँ जाति-समाजक लोक सेहो चिन्हतैक आ ओकरहु गिनती मुँहपुरुष लोकमे होमए लगतैक । एखन छुच्छाकेँ के पुच्छा ? बाहर गेलाक बाद तँ लोक बाहरेक भ' क' रहि जाइत अछि । गामकेँ बिसरि जाइत अछि । एक बेर बाहर गेलाक बाद गाममे ककरो मनो नहि लगैत छैक ।

ओकरा मन पड़लैक ठीठर राउत । ठीठर राउतकेँ पाँचटा बेटा छलैक । किछु जमीन-जथा सेहो छलैक । घर-गृहस्थीसँ बड़ टनमन लोक छल । दस लोकक बीच उठब-बैसब सेहो छलैक । समाजमे सेहो लोक मानैत छलैक आ पर-पंचैतीमे सेहो लोक बजबैत छलैक । मेहनति-मजदूरी क' क' बेटा सभकेँ पढ़ौलक-लिखौलक । सभक विवाह-दान करौलक आ सभ परिवार ल' क' बाहरे रहैत छैक । आइ ठीठर राउत बूढ़ भ' गेल अछि । मेहनति-मजदूरी करबाक सामर्थ्य नहि रहि गेलैक । ओ तँ किछु जथा बाँचल छैक जाहिसँ कोनो तरहें गुजर चलि रहल छैक । मुदा एकहुटा बेटा घुरि क' खोज-खबरि नहि लैत छैक । की भेटलैक बेटा सभकेँ पढ़ौला-लिखौलासँ ठीठर राउतकेँ । तेँ रमेसराके बेटा सभकेँ पढ़यबाक इच्छा नहि होइत छलैक । ओ तँ बुधनी आ परमेसराक जोर देखैत चुप्प छल ।

रमेसरा बुधनीक बुद्धि पर सेहो अचम्भित छल । माय-बापमे यैह तँ फर्क छैक । बाप अपन स्वार्थ देखैत अछि । जहिना ओ कमा-खटाक' धिया-पुताक पालन-पोषण करैत अछि, तहिना बुढ़ारीमे वा लाचार भेला पर ओकरहुसँ अपेक्षा रखैत अछि । मुदा माय केर सोच ठीक ओकर उन्टा होइत छैक । माय कौखन स्वार्थी नहि भ' सकैत अछि । माय सोचैत अछि, "हमर दीन-दुनियाँ तँ कहुना कटि गेल वा कटि जायत, मुदा हमर बच्चा नीक जकाँ रहए, नीक कपड़ा-लत्ता पहिरए, नीक जकाँ गुजर-बसर करए । हमरा जे दुःख-तकलीफ होमए से होमए, मुदा हमरा सन्ततिकेँ कोनो तकलीफ नहि होमए ।" तेँ माय केँ गंगा सेहो कहल गेल अछि । ओकर हृदय गंगे जकाँ स्वच्छ आ निर्मल होइत छैक ।

दुर्गा सप्तशती मे वर्णन अछि ''कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति'' । अर्थात् पुत्र कुपुत्र भ' सकैत अछि, ओ मायक अहित क' सकैत अछि, ओ मायकेँ दुःख द' सकैत अछि मुदा माय सपनहुँमे पुत्रक अहित देखब तँ दूर, सोचिओ नहि सकैत अछि । आइ ओएह दशा बुधनीक छैक । ओकरा सोझाँ कमलनाथक छवि सिनेमा जकाँ घुमि रहल छैक । कमलनाथ कोना गाम अबैत छथि । मोटरगाड़ीसँ उतरि सीधे आंगन अबैत छथि । पैंट, शर्ट आ ऊपरसँ बैगनी रंगक टाइ मनकेँ मोहि लैत छैक । गोर भुभुक्का आ छड़गर जुआन हू-बहू बड़के मालिक सन । हुनक शालीनतासँ बुधनी बड़ प्रभावित छलि । ओ सोचैत छलि जे पढ़ि-लिखि क' हमरो बेटा एहिना बड़का हाकिम जकाँ लागत आ हमरा लोक बुधनी नहि कहि हाकिमक माय कहत । ई सोचि क' ओकर छाती सूप सन चाकर भ' जाइत छलैक ।

कमलनाथकेँ देखि क' ओकरा मनमे इर्ष्या नहि होइत छलैक मुदा सेहन्ता अवश्य होइत छलैक । ओ चाहैत छल जे ओकरो बेटा सभ पढ़ि-लिखि क' कमलनाथे सन बनि जाइ । इएह ओकरा जीवनक लक्ष्य सेहो छलैक । ओ तँ गप्पे-सप्पमे रमेसरा आ परमेसरा ओकर बात मानि लेलक, अन्यथा ओकरा एहि मादे झंझटो कर' पड़ितैक तँ ओ पयर पाछाँ नहि करैत ।

बुधनी बेटा सभकेँ पढ़यबामे कोनो कोर-कसरि बाँकी नहि रखलक । ओ अपना देहकेँ देह नहि बुझैत छलि । भोरे तीनूकेँ जलखै करा क' स्कूल पठबैत छलि । ओकर बाद पानिपिआइ ल' जा क' रमेसरा आ परमेसराकेँ खोआबैत छलि । तावत् बेटा सभक स्कूलसँ घर अयबाक बेर भ' जाइत छलैक । बुधनी खेतसँ घर भागैत छलि । बेटा सभक स्कूल ड्रेस बदलि क' दोसर कपड़ा पहिराबैत छलि आ ओहि ड्रेसकें चौपेति क' राखि दैत छलि । बीच-बीचमे ओकरा साबुन लगा क' साफ सेहो करैत छलि । स्कूलमे सभसँ साफ ड्रेस बुधनीयेक बेटाक रहैत छलैक । ओ तँ सएह करैत छलि जे दरबारमे मलिकाइनिक ओहि ठाम देखैत छलि । ओकरा सभक सफाइ देखि मास्टर साहेब सेहो खुश रहैत छलाह । एहि मादे ओकरा पुरस्कार सेहो भेटल छलैक ।

कौखन खेतमे बेसी काज रहला पर रमेसरा बुधनीकेँ कहैत छलैक, ''कनेक छौड़ा सबकें पठा दितहक तँ काज जल्दी भ' जाइत ।'' मुदा बुधनी रमेसराकेँ झाड़ि दैत छलैक, ''छौड़ा सब ई काज नहि करतैक । ओकरा सभकें पढ़बा-लिखबासँ पलखति कत' छैक ।" रमेसराक मुँहक गप्प मुँहे रहि जाइत छलैक । बुधनीक तिरस्कारो दुनू भायकेँ नीके लगैत छलैक । बेचारा दुनू भाय कहुना-कहुना क' काज खतम क' घर अबैत छलैक ।

बुधनीक बेटा सब पैघ भ' गेलैक । तीनू बी.ए.पास क' दिल्ली चल गेलैक । ओत' ओकरा सभकेँ सरकारी नोकरी भेटि गेलैक । बुधनी ओकरा सभक विवाह-दान करौलक । तीनू पुतहु घरमे आबि गेलैक । घर तँ दुइये कोठलीक छलैक । ओहिमे पहिनेसँ छः बेकती कहुना-कहुना क' रहैत छल । आब तँ नौ बेकती भ' गेलैक । रहबामे सेहो दिक्कत होइत छलैक ।

बेटा सभ अपन परिवार दिल्ली ल' जयबाक लेल बुधनीसँ पुछलक । घरक दिक्कति देखि बुधनी ओकरा सभक प्रस्ताव सहर्ष मानि लेलक आ छौड़ा सब अपन-अपन परिवार ल' क' दिल्ली चल गेल ।

शुरू-शुरूमे तँ छौड़ा सब किछु टाका-पाइ पठबैत छलैक मुदा धीरे-धीरे सब बन्न भ' गेलैक । ओकरो सभक संगे किछु विवशता छलैक । गाम-घरमे तँ लोक कहुना फाटलो-पुरान पहिरि क' गुजर क' लैत अछि, मुदा शहरमे नीक कपड़ा-लत्ता, नीक भोजन आ बाल-बच्चाक लेल नीक स्कूल चाही । ताहिमे खर्च तँ होइतहि छैक । पहिने गाम-घरमे लोक कहैत छलैक, 'आप रुचि भोजन, पर रुचिश्रृंगार ।' मुदा आइ ओकर उनटा भ' रहल छैक । ताहिसँ गिनले-चुनल लोक बाँचल होयताह ।

आइ एखन धरि छौड़ा सभकेँ नहि अयलासँ परमेसराकेँ अखड़ि रहल छैक । छौड़ा सब कतेक दिनसँ बुधनी आ परमेसराक खोज-खबरि लेब छोड़ि देने छैक जखन कि कमाइ नीके करैत अछि । यावत् विवाह-दान नहि भेल छलैक, तावत् तीनू छौड़ा वर्षमे दू बेर अबैत छलैक

आ तीस हजार टाका पठबैत छलैक । ओहीसँ परमेसरा दू कोठलीक घर बनौने छल आ तीन बीघा खेत भरना लेने छल । मुदा बबुआनी आ बोनिहारीमे कतेक फर्क होइत छैक, परमेसरा आइ बुझि रहल छैक । एकटा बोनिहार माय-बाप सहित अपन पूरा परिवारक भरण-पोषण करैत अछि । चाहे आधे पेट खा' क' तकलीफेसँ किएक ने करए, मुदा एकटा बबुआन मात्र अपन कनियाँ आ धिया-पूताक भरण-पोषण करैत अछि । परमेसरा सुनैत छलैक जे विदेशमे धिया-पूताकेँ माय-बापसँ कोनो मतलब नहि रहैत छैक, मुदा आब तँ हमरो देशमे धीरे-धीरे इएह चलन भेल जा रहल अछि, विशेष क' शहरमे । गाम एखन बाँचल अछि । इएह स्थिति आइ परमेसराक भातिज सभक छैक । बुधनी छौड़ा सभक पाछाँ कतेक मेहनति कयलक मुदा आइ ककरो खोजो-खबरि लेबाक पलखति नहि छैक । तीन दिन भ' गेलैक तार पठौना मुदा कतहुसँ कोनो खबरि नहि आयल छैक । एहि ठाम समाजक लोक सभ लाश उठयबाक लेल तर-फर क' रहल छैक । कतेक दिन धरि घरमे लाश राखल रहतैक । कतेक अरमानसँ बुधनी छौड़ा सभकेँ पोसने छलैक, मुदा छौड़ा सभ सभटा आशा पर पानि फेरि देलकै । जखन ओ सभ अपना माय केर खोज नहि कयलक, तँ हमर की करत ? रमेसरा ठीके कहैत छलैक, ''बनिहारक बेटा बनिहारे रहैत तँ नीक ।'' आइ जँ ओ सब बनिहारे रहैत तँ बुधनीक लाश तीन दिनसँ घरमे पड़ल नहिञे ने रहितैक ।

●

हर्ट एटैक

मनोहर बाबू मध्य विद्यालय रजौरीमे प्रधानाध्यापकक पद पर कार्यरत छलाह । मध्यम परिवार आ रहन-सहन एकदम साधारण, बूझू जे गाँधी बाबाक अनुचर । विद्यालय केर संचालनमे पूर्ण दक्ष, कुशल प्रसाशक आ विवेकसँ ओत-प्रोत । कतेको बेर डिप्टी साहेब स्कूलक निरीक्षण कयने छलाह, मुदा किछु गड़बड़ी नहि भेटल छलनि । तहिना गृह स्वामिनी जानकी देवी सेहो सरल आ मृदुभाषिणी छलथिन । दुनू प्राणीमे मधुर सम्बन्ध छलनि । कोनो विषय पर किचकिच केर गुंजाइश नहि । परिवारमे दुनू प्राणीक अलावे दूटा पुत्री आ एकटा पुत्ररत्न राजेश छलाह । बच्चा सभ पढ़बामे बड़ मेधावी छलन्हि । दुनू बेटीकेँ बी. ए. कयलाक बाद विवाह भ' गेलनि । नीक घर आ वर भेटि गेल छलन्हि । दुनू जमाय इन्जिनियर छथिन्ह । राजेश सेहो इन्जिनियरिंग क' क' दिल्लीक एकटा कम्पनीमे योगदान कयलन्हि । साल भरि पूर्व मनोहर बाबू सेवा निवृत्त भ' गेलाह । आब गामहिमे रहि अपन पुरखाक संचित सम्पत्तिक देख-रेख क' रहल छथि । पेंशनक रूपमे पचीस हजार टाका प्रति माह भेटि रहल छन्हि । सेवा निवृत्तिक लाभक रूपमे कुल बाइस लाख टाका भेटल छलन्हि, जाहिसँ खूब सुन्नर पोखरिया-पाटन हबेली बनबौलन्हि । आब मात्र राजेशक विवाहक चिंता छन्हि । नीक कनियाँ आ नीक दहेजक सेहो अपेक्षा छन्हि ।

मनोहर बाबूक ओहिठाम राजेशक प्रसंगे घटकलोकनि दौड़बरहा कर' लगलाह । मुदा तिलक कतेक माँगल जाय, से मनोहर बाबूकेँ स्वयं पता नहि छलनि । हुनका होइत छलनि जे कदाचित् कम ने बजा जाय । तेँ ओ घटके सभकेँ दहिना-बामा देखा रहल छलाह । हुनकहि सबसँ पूछथि, ''अहूँ सब तँ बाजार भाव बुझिते छियैक । जखन इंजिनियर वर करबाक अछि, तँ इहो बाजल जाओ जे कतेक टाका खर्चा करबाक अभीष्ट अछि ।" घटक सोचथि जे पहिने मनोहर बाबू किछु बाजथि, तखन ने तोड़-जोड़ करब उचित होयत । मुदा मनोहर बाबू तँ अपनहि माँजल खेलाड़ी छलाह । सब दिन तँ मास्टरीये कयलनि आ कतेक विद्यार्थीकेँ मास्टर बना देलनि । हुनक हाथ पकड़ब ककरो बुते सम्भव नहि छलैक । एक दिन मनोराक रामनाथ बाबू अयलाह । चाह-पानक बाद जखन गप्प शुरु भेल तँ रामनाथ बाबू बजलाह, ''मनोहर बाबू ! अपनेकेँ की चाही से तँ बाजल जाओ । बौआक विवाह कोना कराबए चाहैत छियैन्हि, आदर्श वा तिलक ल' क' । जँ तिलक ल' क' तँ कतेक टाका चाही? तखन ने हमहूँ सभ किछु बाजब ।"

मनोहर बाबू बजलाह, ''देखू, आइ-काल्हि आदर्शमे आ तिलकमे कोनो फर्क नहि अछि । हमहूँ तँ चालीस वर्ष लोकेकेँ पढ़यलहुँ अछि । हमरा के पढ़ाओत ? आदर्श केवल सुनबामे नीक लगैत अछि । आदर्शमे दुनू चुल्हा कन्यागतेकेँ जड़ाबए पड़ैत छैक मुदा ओकरा यश नहि होइत छैक । कन्यागत घरो-घराड़ी बेचि क' द' देत, तैओ बरागत तृप्त नहि होइत अछि । कनेको चूक भेलासँ सबटा कयलहा-धयलहा पानिमे चल जाइत छैक । तेँ हमरा बुझने आदर्श आ तिलकमे मात्र शब्दक फर्क अछि । व्यवहारमे आदर्श तिलकोसँ खराब होइत अछि ।"

रामनाथ बाबू, ''हँ.. हँ.. से तँ सत्य कहल मुदा किछु पात्रो पर निर्भर करैत छैक । कतेक लोकक व्यवहार तँ कसाइ जकाँ होइत छैक । हुनका लग सम्बन्धक कोनो अहमियत नहि । ओ केवल लेबय जानैत छथि । खैर, छोड़ू एहि गप्पकेँ, तखन गप्पकेँ आगाँ बढ़ओल जाय ।"

मनोहर बाबू बजलाह, ''हम जे किछु बाजब, भ' सकैत अछि जे

अपने ओहिमे नहि सकी । तेँ अपनहि बाजल जाओ । जँ हमरा पसिन्न पड़त तँ कथा तय भ' जायत अन्यथा हम जबाब द' देब ।"

रामनाथ बाबू थाहैत आ अपना ओकातिकेँ तौलैत बजलाह, ''हम ग्यारह लाख टाका आ एकटा गाड़ी द' सकैत छी ।" ग्यारह लाख टाका आ एकटा गाड़ीक' नाम सुनितहि मनोहर बाबू तँ आर चपचपा गेलाह । ओ सोचलन्हि, जखन अपनहि मने ग्यारह लाख टाका आ एकटा गाड़ी द' रहल अछि तखन बौआक मोल पन्द्रह लाख टाका आ एकटा गाड़ी होयबाक चाही । अनका बड़दक दाम आन की लगाओत । जँ रहतैक नौ सय केर तँ कहत छः सय । तेँ पन्द्रह लाखसँ कममे बौआक विवाह नहि होयतनि आ एतेक लोक आसानीसँ द' सकैत अछि । कोनो अनर्गलो नहि भेल । ओ बजलाह, ''ई तँ बहुत कम भ' गेलैक । एहिमे कोना भ' सकतैक ।"

रामनाथ बाबू, ''कतेक कम भेलैक सेहो तँ कहल जाओ'' ।

मनोहर बाबू, ''हमर माँग पन्द्रह लाख टाका आ एकटा गाड़ी अछि ।" रामनाथ बाबूक लेल एतेक जोगाड़ करब पहाड़ बुझायल । ओ एहि जोगरक नहि छलाह । ओ बिना किछु बजनहि आपस चल गेलाह । किछु दिनक बाद सलमपुरक दीनानाथ बाबू पन्द्रह लाख टाका आ एकटा गाड़ी देबाक लेल तैयार भ' गेलाह । तुरंत पंडित बजाओल गेलाह । सगुन आ विवाहक दिन निर्धारित भ' गेल । दीनानाथ बाबू मनोहर बाबूकेँ तत्काल सगुनक रूपमे दू लाख टाका देलथिन्ह । मनोहर बाबू ओहि टाकाकेँ अपन घरवाली जानकी देवीकेँ दैत बजलाह, ''ई सगुनक टाका थीक । एकरा बढ़ियाँ जकाँ राखूँ । राजेशकेँ टेलीफोन कयल गेल । मनोहर बाबू राजेशसँ टेलीफोन पर गप्प कयलनि । हाल-चाल बुझलाक बाद मनोहर बाबू बजलाह, ''बौआ ! हम अहाँक विवाह तय क' देलहुँ । अगिला मासमे तीन तारीख क' सगुन आ पाँच तारीख क' विवाह होयत । अहाँ कमसँ कम पन्द्रह दिनक छुट्टी ल' क' एक तारीख क' आबि जाउ ।"

विवाहक नाम सुनि क' पहिने तँ राजेश अकबका गेलाह । पुनः संयमित होइत बजलाह, ''बाबूजी! हमरा एखन एक वर्ष धरि छुट्टी नहि होयत । अहाँ तँ जनैत छी जे एखन नव नोकरी अछि । एखन छुट्टी

लेलासँ हमर कैरियर खराब भ' सकैत अछि । एखन हम कोनो हालति मे नहि आबि सकैत छी ।''

मनोहर बाबू राजेशक उत्तर सुनि उदास भ' गेलाह । मुदा ई आशा छलन्हि जे एक वर्षक बाद विवाह तँ होयबे करतैक। मनोहर बाबू दीनानाथ बाबूकेँ बजाक' हुनकर दू लाख टाका आपस करैत बजलाह, ''बौआकेँ एखन एक वर्ष धरि छुट्टी नहि होयतनि । तेँ ई विवाह आब वर्ष भरिक बादे सम्भव अछि । तावत् अपने ई टाका राखल जाओ । समय अयला पर हम अपनेकेँ बजा लेब ।"

दीनानाथ बाबू सोचलन्हि, 'भ' सकैत अछि, एक वर्षक बाद मोल आर बढ़ि जाइक, लोक उपरौंझ करए वा अपनहुँ भाव बढ़ा देथि । ताहिसँ नीक जे टाका ओही ठाम छोड़ि दी । यावत् टाका एहि ठाम रहत, बन्हायल रहताह' । दीनानाथ बाबू बजलाह, ''मनोहर बाबू, टाका कतहु अन्यत्र थोड़हि छैक । टाका हमरा घर रहत वा अपनेक घर, की फर्क पड़ैत छैक । एकरा अपनहि लग राखल जाओ । हम एक वर्ष प्रतीक्षा क' सकैत छी । अपने जखन समाद देब, हम आबि जायब आ शेष टाका गनि देब ।"

लोककेँ ककरहुसँ टाका लेबामे तँ बड़ नीक लगैत छैक मुदा आपस करबा काल बुझाइत छैक जे सम्पत्ति जा रहल हो । आइ ओएह स्थिति मनोहर बाबूक छलन्हि । जखन कि हुनका टाकाक कोनो अभाव नहि छलनि । दीनानाथ बाबूक गप्प सुनि मनोहर बाबू संतोषक साँस लेलनि आ नीक जकाँ मधुर आदिसँ स्वागत करैत दीनानाथ बाबूकेँ विदा कयलनि । करीब मास दिनक बाद देखल जे भोरे-भोर मनोहर बाबूक ओहि ठाम भीड़ लागल अछि । ओहि भीड़मे बीस-पचीस गोटे छलाह आ दूटा डाक्टरोक गाड़ी लागल छलैक । सभक मन उदास छलैक । भीड़मे तँ बुझले अछि, जतेक रंगक लोक, ततेक रंगक गप्प । एक गोटेसँ भीड़क कारण पुछलियनि । ओ कहलनि, ''विशेष गप्प तँ नहि कहि सकैत छी, तखन सुनबामे आयल अछि जे मनोहर बाबूकेँ हर्ट एटैक भ' गेल छन्हि । दू-दू टा डाक्टर लागल छथिन्ह । दबाइ पर दबाइ द' रहल छथिन्ह मुदा एखन धरि होश मे नहि अयलाह अछि ।

सुनि क' बड़ आश्चर्य लागल । ओ तँ एकदम परहेजी लोक छथि । हुनका कहिओ तमसाइतो नहि देखल अछि । मुँह पर सतत हँसी । अपना सेवाकालमे एकसँ एक चढ़ाव-उतार देखलन्हि मुदा कहिओ माथो नहि दुखायल छलन्हि । हुनका हर्ट एटैक किएक भेलनि ? एहेन कोन गप्प भ' सकैत छैक, जे हुनका हृदय पर एतेक पैघ आघात कयलक । मनमे खुदबुदी लागि गेल । आर तहमे गेलहुँ । पता लागल जे,

''मनोहर बाबूक पुत्र राजेश दिल्लीक एकटा कम्पनीमे इंजिनियर छथिन । जखन ओ इंजिनियरिंगमे पढ़ैत छलाह, ओही समयमे कंचन नामक एकटा छात्रा सेहो इंजिनियरिंगमे पढ़ैत छलीह । दुनू गोटे बड़ मेधावी छलाह । पढ़ाइक क्रममे राजेश आ कंचनक बीच कोनहु विषय वस्तु पर काफी घमर्थन होइत छलनि । एहिसँ दुनूक ज्ञानक वृद्धि होइत छलनि आ दुनू नीक मित्र बनि गेलाह । एहि भेटक क्रममे दुनूकेँ एक दोसरसँ प्रेम भ' गेलन्हि आ दुनू प्रणय सूत्रमे बन्हयबा लेल बड़ आतुर भ' गेल छलाह । गप्पक क्रममे कंचन राजेशकेँ कहैत छलीह, ''राजेश ! अहाँकेँ ई प्रेम बड़ महग पड़त । कारण हम सब दू जातिक लोक छी । हमर समाज एखन ओतेक प्रगति नहि कयलक अछि जे एकरा एतेक सहजतासँ स्वीकार क' लेत । एहिसँ बड़ पैघ बबाल उठि सकैत अछि । हम तँ एखनहुँ कहब जे ई विचार छोड़ि दिअ' । एहि मिलनकेँ दोस्तीये धरि राखल जाय । की हम सब एकटा नीक दोस्त जकाँ नहि रहि सकैत छी ?"

मुदा राजेश अपनाकेँ प्रगतिशील सावित करबामे लागल छलाह । ओ बजलाह, ''दुनियाँ कत'सँ कत' चलि गेल आ अहाँ एखन धरि इनारक बेंगे बनल छी । हम सब बालिग छी । अपन निर्णय स्वयं लेबाक अधिकार अछि । एहिमे ककरो अड़ंगा नहि चलतैक । रहल बाबूजीक गप्प, तँ हुनका केवल टाका चाही । से हम दुनू गोटे कमा क' द' देबैन्हि । ओहो तँ हमरहि सभक लेल रखताह ।"

कंचन बजलीह, ''राजेश जी ! अहाँ अपन नीक-बेजाय खूब नीक जकाँ सोचि लिअ' । हमर तँ किछु नहि बिगड़त मुदा अहाँ दिक्कत मे पड़ि सकैत छी । अहाँक बाबूजी एकर घोर विरोधी छथि । ओ कखनहुँ

एकर अनुमोदन नहि करताह । हम एकटा समाजवादी नेताकेँ देखने छियैक । ओ सब ठाम भाषण करैत छलाह, 'हमरा लोकनि जतेक लोक छी, सब समान छी । सभक शोणित एके रंगक अछि । तखन ई भेद-भाव किएक । सभकेँ एक-दोसराक ओहि ठाम भोजन करबाक चाही, एक दोसराक बीच वैवाहिक सम्बन्ध होयबाक चाही ।' सवर्ण लोकनि हुनका भाषणसँ तबाह छलाह आ निम्न वर्गक लोक तँ हुनका भगवानोसँ बेसी मानैत छलन्हि । जत' जत' हुनक भाषण होइत छल, लाखो लोक जुटैत छलैक । सर्वत्र हुनकहि जय-जयकार होइत छलनि । मुदा जखन हुनक बेटा एकटा निम्न वर्गक बालिकासँ विवाह क' लेलक, तखन तँ हुनक मुँह देखबाक योग्य छल । ओ ओहि कनियाँकेँ छोड़बाक लेल बेटा पर दबाब बनाबए लगलाह । मुदा हुनक बेटा नहि मानलक । ओ अपना जिद्द पर अड़ल रहल । तेँ हम कहब जे ई विचार छोड़ि दिअ' । एहि लेल हमरा कोनो दुःख नहि होयत । हम सभ एक दोस्तक रूपमे जिनगी भरि आनन्दसँ रहब ।"

जखन राजेशक विवाह मनोहर बाबू तय कयलन्हि आ टेलीफोन पर राजेशकेँ सूचित कयलन्हि, तखन दुनू गोटेकेँ उद्वेग लागि गेलन्हि । यद्यपि कंचन तखनो मना कयलथिन्ह । एम्हर तँ राजेश मनोहर बाबूसँ एक वर्षक समय माँगि लेलनि आ ओम्हर तर-फर कोर्ट मे जा' क' विवाह क' लेलनि । ई भण्डा तँ तखन फूटल, जखन हुनकहि गामक लोटन दास जे दिल्लीमे नोकरी करैत छल, गाम अयला पर मनोहर बाबूक भेट कयलक । ''कका गोड़ लगैत छी'', लोटन बाजल ।

मनोहर बाबू बड़दकेँ सानी लगबैत छलाह । घूमि क' देखलन्हि । ''के छी बाबू, अरे.. लोटन.. नीके रहह, की हाल-चाल छह । दिल्लीसँ कहिया अयलह ? भोरे-भोरे कोम्हर चलल छह ।" मनोहर बाबू एके संग कतेको सवाल क' देलथिन्ह ।

लोटन बाजल, ''कका दिल्लीसँ काल्हिये आयल छी आ भोरे-भोर अपनहिक ओहि ठाम आयल छी । सुनलहुँ जे मोन खराब अछि ।"

''हमर मोन किएक खराब रहत । हम तँ केहन टनमन छी । हमर मन खराब होयबाक विषयमे के कहलकहु ?'' मनोहर बाबू पुछलथिन्ह ।

लोटन बाजल, ''राजेश भैया बाजल छलाह ।"

''राजेश सँ भेंट भेल छलहु की ? केहन अछि राजेश, कोना रहैत अछि ?'' मनोहर बाबू पुछलथिन्ह ।

''राजेश भैया दू वा तीन दिन पर तँ भेंट होइतहि रहैत छथि । हुनकहु हाल-चाल बढ़ियाँ अछि । हुनके विवाहमे तँ गेल छलहुँ आ अपने के नहि देखि पुछने छलियन्हि । राजेश भैया कहने छलाह जे बाबूजीक मन खराब छन्हि,'' लोटन बाजल ।

मनोहर बाबू पूछलथिन्ह, ''विवाह ! ककर विवाह...?"

''राजेश भैयाक विवाह, आर ककर विवाह,'' लोटन बाजल ।

मनोहर बाबू, ''राजेशक विवाह... तोँ की बाजि रहल छेँ ?''

लोटन बाजल, ''सैह तँ कहैत छी । दू मास पूर्व राजेश भैयाक विवाह भेलन्हि । सेहो कोर्टमे जा क' । एकर खबरि तँ अहाँके कयने छलाह मुदा अहाँके ओत' नहि देखल । पता लागल जे मन खराब अछि । तेँ जिज्ञासावश चल अयलहुँ ।''

एतेक गप्प सुनैत देरी मनोहर बाबू तामसे आन्हर भ' गेलाह मुदा तामसकेँ भीतर दबा पुनः लोटनसँ पुछलथिन्ह, ''कनियाँ केहन छैक ?''

''कनियाँ तँ बड़ दीव अछि, मुदा...'' लोटन बाजल ।

मनोहर बाबू, ''मुदा... मुदा की ?''

लोटन, ''से की ? अहाँके किछु नहि बुझल अछि ?''

मनोहर बाबू, ''अरे सोंटाचन्द ! जँ बुझले रहैत तँ तोरा सँ किएक पूछितिऔक ।''

लोटन बाजल, ''कनियाँ हुनकहि आफीसमे काज करैत छथिन्ह । ओहो इंजिनियरे छथि । दुनू गोटेक दरमाहा सेहो एके रंगक छनि आ अनुपम जोड़ी जेना विधाता अपनहि हाथसँ गढ़ने होथि । मुदा ओ अहाँक जातिक नहि छथि ।''

मनोहर बाबू, ''तखन ओ कोन जातिक छथि ?''

लोटन बाजल, ''ओ हमरहि जातिक छथि ।''

एतेक सुनैत देरी मनोहर बाबूक माथ घुमि गेलन्हि । ओ धराम द' खसलाह । चारू दिससँ लोक सब दौड़ल । हुनका हाथसँ पन्द्रह लाख टाकावला बटुआ आ एकटा गाड़ी जे निकलि गेल रहए । संगहि दू लाख टाका जे कन्यागतक जमा छलैक, ओकरहु तँ आपस करबाक छन्हि, इएह सोच हर्ट एटैकक कारण भेल । राजेश एक तँ बिना तिलकक विवाह कयलनि आ दोसर अंतर्जातीय । मनोहर बाबू कतहु के नहि रहलाह । कोना समाजमे लोकके मुँह देखौताह । हुनका मनमे कतेक रास अरमान छलनि । कतेको गोटेके बरियातीक हकार द' चुकल छलाह । सभ आशा पर पानि फिरि गेलन्हि । हुनका दुनू बेटीक विवाहमे जे तिलक देमए पड़ल छलन्हि से सोचैत छलाह जे एहीमे ओसूल करब ।

हुनका मने छलन्हि जे छोटकी बेटीक विवाहमे दू लाख टाकाक जोगाड़ नहि भ' सकलन्हि । हुनकर समधि कृष्ण कुमार बाबू अड़ि गेलाह । बिना टाका देने बरियाती नहि जायत । हुनक स्थिति तँ तेहेन भ' गेल छलनि जे मुँहमे धान देथि, तँ लाबा भ' जाइत छलनि । मात्र एक दिनक समय बाँचल छलन्हि । ताहिमे दू लाख टाकाक जोगाड़ असम्भव छलनि । अगुआ बाजल छलाह, 'टाका विवाहक बादो देल जा सकैत छैक ।' तेँ मनोहर बाबू निश्चिंत छलाह । मुदा विवाहसँ एक दिन पहिने कृष्ण कुमार बाबूक समाद भेटल छलनि जे टाका पहिनहि चाही । अगुआसँ गप्प कयलनि तँ ओहो बजलाह जे हमर गप्प तँ मानिये नहि रहल छथि । आब तँ कोनो ने कोनो उपाय करहिटा पड़त ।

मनोहर बाबू लाचार भ' गेलाह आ गामक एकटा बनियाँ बिहारी सेठ, जकर ओ कहिओ मोजर नहि देलनि, ओकरहि शरणमे गेलाह आ सूदि पर टाका लेलनि । तखन कन्यादान सम्पन्न भेलन्हि । ओ तखनहिसँ सोचैत छलाह जे सबटा राजेशक विवाहमे ओसूल करब । मुदा एहि ठाम तँ सब किछु एके पलमे भासि गेलनि जेना कि बाढ़िमे सब किछु भासि जाइत छैक आ लोक तकिते रहि जाइत अछि । मनुक्ख पुत्र सोग तँ बर्दास्त क' सकैत अछि मुदा टाकाक सोग बर्दास्त करब कठिन होइत छैक । तेँ मनोहर बाबू सनक लोकके हर्ट एटैक होयब स्वाभाविके बुझा रहल अछि ।

●

बेगार

आइ-काल्हि सरकारी नियमक मुताबिक केओ व्यक्ति बेगार अर्थात् बंधुआ मजदूर नहि राखि सकैत अछि । बेगारक अर्थ भेलैक जे कोनो गरीब लोकके किछु कर्ज द' देलहुँ आ ओकरा एवजमे भरि जिनगी कोल्हुक बड़द जकाँ पेड़ैत रहलहुँ । ओकरा समय पर ने जलखै भेटैत छैक आ ने भोजन, आ जँ बाजत तँ ऊपरसँ घुस्सा-मुक्का पनिपिआइ । छुट्टीक तँ कोनो गप्पे नहि । जँ दुखिताहो रहत तँ काज करहिटा पड़तैक । ई बेगारी पुस्त दर पुस्त चलैत अछि । बापक बाद बेटा आ बेटाक बाद पोंता । ई बेगारी मानवताक नाम पर कलंक थिक । मुदा एहन बेगार अधिक घरमे भेटत, जकरा पर सरकारोक कोनो कानून नहि चलैत छैक ।

रामनगरक विश्वनाथ बाबू खूब सम्पन्न लोक छलाह । बाइस हाथक दलानक शोभा आगाँमे बाँन्हल छः टा बड़द, तीनटा महींस, दू टा गाय आ एकटा ट्रैक्टर बढ़ा रहल छलनि । विश्वनाथ बाबूक ओहिठाम नित्य दसटा बेगार खटैत छलनि । विश्वनाथ बाबूक एक मात्र पुत्र गौरव डिप्टी कलेक्टर केर पद पर कार्यरत छलाह ।

गौरव केर विवाह मुरलीगंजक रघुवंश बाबूक पुत्री कमलाक संग भेल छलनि । कमला पढ़लि-लिखलि आ घरक काज-धंधामे निपुण

छलीह । रघुवंश बाबू सेहो खूब सम्पन्न लोक छलाह आ हुनको ओहि ठाम बारह-तेरहटा बेगार खटैत छलनि, मुदा विश्वनाथ बाबू आ रघुवंश बाबूक विचार-व्यवहार बेगारक प्रति विपरीत छलनि । विश्वनाथ बाबू बेगारकें मनुक्ख नहि बुझैत छलाह । सतत ओकरा सभ पर रोब झाड़ैत छलाह, दबदबा बनौने रहैत छलाह । गलती कयला पर मारि-पीट सेहो करैत छलाह । ओकरा सबकें अछूत बुझैत छलाह । जलखइ-पनिपिआइक कोनो समय नहि । भेल तँ देलहुँ, नहि तँ नहिञो देलहुँ । ककरो बजबाक साहस नहि छलैक । पीठ ककर दुखाइत रहैक जे बाजत ।

मुदा रघुवंश बाबू बेगारक संग प्रेमपूर्वक गप्प करथि । ओकरा सभकें भ्रातृत्ववला स्नेह दैत छलाह । समय पर जलखइ-पनिपिआइ दैत छलथिन । दुःख-सुखमे सभक ध्यान रखैत छलथिन । समय-समय पर आर्थिक मदति सेहो करैत छलथिन । ओ बेगारकें अछूत नहि बुझैत छलाह । ओ सभ घरक समांग जकाँ रहैत छलैक । कोनो काजक लेल रघुवंश बाबूकें बाजए नहि पड़ैत छलनि । सभटा काज स्वाभाविक रूपें चलि रहल छलनि । विश्वनाथ बाबूक बेगार तँ बेगार घरोक लोक सभ अपनाकें अंग्रेजी हूकूमतक अधीन बुझैत छल ।

कमलाक विवाहमे रघुवंश बाबू तिलकक रूपमे दस लाख टाका देने छलथिन । विवाहोपरान्त कमला जखन नैहरसँ सासुर अयलीह, तँ हुनका दुनू ठामक व्यवहारमे बड़ अंतर बुझयलन्हि । ओना तँ नैहरक स्वच्छंदता सासुरमे ककरो नहि भेटैत छैक तथापि एहि ठामक हाल किछु आर छलैक । स्वयं गौरवक माँ सेहो विश्वनाथ बाबू लग सब गप्प कहबामे अपनाकें सक्षम नहि बुझैत छलीह । जेना बुझाइत छलनि जे घर, घर नहि जहल हो आ विश्वनाथ बाबू ओहि ठामक जेलर । ई परिवेश कमलाकें पसिन्न नहि छलनि । ओ एकटा योजना बनाक' गौरवक माँसँ एहि विषयमे गप्प कयलनि । गौरवक माँ सेहो कमलाक समर्थन कयलथिन्ह । ओ इहो इशारा कयलथिन जे साकांक्ष भ' क' खूब होशियारीसँ काज करब, नहि तँ लेनीक देनी पड़ि सकैत अछि ।

कमला अपन व्यवहार-कौशलसँ सासु आ गौरव दुनूकें अपना

मुट्ठीमे कयने छलीह । सासुकें तँ ई बुझाइते नहि छलनि जे कमला पुतहु थिकीह की बेटी । कमला नित्य सुतबासँ पूर्व अपना हाथे सासुक सेवा करैत छलीह जखन कि हुनका सेवाक लेल कतेको दाइ-नौड़ी छलनि । आ गौरव तँ एको क्षण कमलाक बिना रहिए नहि सकैत छलाह । कमला जँ कोनो गप्प झूठो कहि दित'थिन तँ हुनका विश्वास भ' जइतन्हि ।

मनुक्ख एकटा सामाजिक प्राणी अछि आ समाजमे जँ सभ केओ बौके रहत तँ लोक गप्प ककरासँ करत । इएह स्थिति गौरव केर घरक छलनि आ से कमलाकें बड़ अखरैत छलनि । कमला एहि परिवेशकें बदलबाक लेल एकटा सुंदर योजना बनौलनि । ओहि योजना पर गौरवसँ विस्तारपूर्वक चर्चा कयलनि । कमला धीरे-धीरे सब बेगारकें अपना वश मे क' लेलनि । ओकरा सभक प्रति सहानुभुति देखौलन्हि । ओकरा सभ सँ सभ वृत्तान्त सुनलनि । संगहि इहो पुछलथिन जे विश्वनाथ बाबूसँ के कतेक कर्ज लेने अछि आ ओकर व्याज कतेक भेलैक अछि।

एक दिन कमला एकटा बेगारकें जे होशियारक संगहि कमलाक पूर्ण विश्वासी छल, अपना नैहर पिता रघुवंश बाबूसँ भेट करबाक लेल पठौलनि । संगहि रघुवंश बाबूकें देबाक लेल एकटा पत्र सेहो देलथिन । ओ बेगार भोरे-भोरे मुरलीगंज गेल आ ओहि ठाम सभटा हाल-चाल कहलाक बाद कमलाक चिट्ठी रघुवंश बाबूक हाथमे देलक । रघुवंश बाबू चिट्ठी देखलन्हि । ओहिमे लिखल छलैक :-

पूज्यवर बाबूजी, प्रणाम । कुशलोपरान्त कुशलाभिलाषी छी । हम एकटा जूआ खेल' चाहैत छी ताहिमे दू लाख टाका आ अहाँक आशीर्वादक आवश्यकता अछि । अपनेसँ आग्रह जे पत्रवाहकक हाथे दू लाख टाका पठा दी । समय अयला पर सब गप्पक खुलासा होयतैक । एखन एकरा गुप्तहि राखी तँ नीक ।

अपनेक

कमला

रघुवंश बाबू पहिने तँ सोचमे पड़ि गेलाह । कमलाकें दू लाख

टाकाक की आवश्यकता पड़ि गेलनि ? विश्वनाथ बाबू सेहो तँ नीक टाका-पाइवला लोक छथि आ कमला लिखैत छथि जे जूआ खेल' चाहैत छी । कमला कोन तरहक जूआ खेल' चाहैत छथि । हिनकर कहबाक अभिप्राय की छनि ? मुदा रघुवंश बाबूकेँ अपना बेटी पर पूर्ण विश्वास छलनि । ओ बिना किछु कहनहि-सुननहि बेगारकेँ दू लाख टाका द' देलथिन ।

बेगार ओ टाका आनि चुपचाप कमलाकेँ द' देलक । कमला ओहि टाकाकेँ आवश्यकतानुसार सब बेगारमे बाँटि देलनि आ सबकेँ नित्य सिखौलनि, ''तू सभ बड़ा सरकारसँ कहुन्ह जे हम सभ अहाँसँ कर्ज लेने छी, तेँ ने हमरा सभकेँ बंधुआ मजदूर बनौने छी । ने समय पर जलखइ आ ने पनिपिआइ आ बजलहुँ तँ ऊपरसँ लात-मुक्का । अपनेक जे हिसाब होइत अछि, से लेल जाओ आ हमरा सभकेँ एहिसँ मुक्ति देल जाओ ।

जखन सब केओ ट्रेण्ड भ' गेल तखन एक दिन सभ बेगार विश्वनाथ बाबूक समक्ष ठाढ़ भेल आ बाजल, ''सरकार ! हमरा सभकेँ आब कमयबाक सामर्थ नहि अछि । अपने जे कर्ज देलहुँ, ताहि एवजमे हम सभ दिन-राति खटैत रहलहुँ । ने कहिओ भरि पेट भोजन आ ने समय पर जलखइ-पनिपिआइ भेटल । हम सभ अपनेक कर्जा चुका क' एहि जिनगीसँ मुक्ति पाब' चाहैत छी । आखिर हमहूँ सभ तँ मनुक्खे छी, कोनो जानवर तँ छी नहि ।''

''मुक्ति चाहैत छें, मुक्ति तँ भेटि जयतौक, मुदा काल्हिसँ बहु-बेटी कत' द' क' चलतौक । हमरा कलम-गाछीमे जयतौक तँ सभक टाँग-हाथ तोड़ि देबौक आ ओही ठाम बेइज्जति सेहो करबौक ।'' विश्वनाथ बाबू अपन रोब देखबैत बजलाह । इएह तँ हुनक हथकंडा छलनि जाहिसँ सभ बेगार डेराइत छल । विश्वनाथ बाबूक एहि गप्पसँ कोनो बेगार नहि डेरायल ।

ओहिमे सँ एकटा बाजल, ''अहाँकेँ बूझल अछि कि नहि, सरकार हमरा सभ लए कतेक कानून बनौने छैक । जँ हमरा परिवार आ बाल-बच्चाकेँ छूबो करबैक तँ हरिजन थानामे केस भ' जायत । हमरा सभकेँ सबटा कैदा-कानून बूझल अछि । आब ओ जमाना चलि गेलैक । अहाँ सभ खूब मनमानी कयलियैक । आब चल'वला नहि अछि ।''

एकरा सभकेँ कमला सभ तरहें ट्रेंड क' देने छलीह । विश्वनाथ बाबूकेँ एकर कनेको भनक नहि लागल छलनि । हुनका बुझायल जे एकरा सभकेँ कोनो नेता हाथ लागि गेलैक अछि आ ओएह पढ़ा रहल छैक किएक तँ काल्हि धरि जे हमरा सोझाँ ठाढ़ नहि होइत छल से मुँह लागल बजैत अछि । ओ किंकर्त्तव्य विमूढ़ भ' गेलाह । जँ कदाचित हम ई टाका स्वीकार नहि करैत छी तँ भ' सकैत अछि जे ई सभ हमरा पर केस क' देत । तखन तँ इहो जे टाका भेटैत अछि, सेहो डूबि जायत । जँ स्वीकार करैत छी तँ एतेकटा कारोबार बिना बेगारे कोना चलत ?

तावत् कमला आबि गेलीह आ बेगार सभसँ बजलीह, ''की रौ, तोँ सभ किएक भीड़ लगौने छें । जो अपन-अपन काज करबाक लेल ।''

बेगार सभ बाजल, ''हम सभ आब बेगारी नहि करब । हम सभ जतेक कर्जा सरकारसँ लेने छियन्हि, से सूदि समेत आपस कर' चाहैत छियनि । जिनगी भरि बेगारी करैत-करैत थाकि गेलहुँ । आब सामर्थ नहि अछि । मोन सेहो ठीक नहि रहैत अछि । एहि ठाम छुट्टी तँ दूर, समय पर जलखइओ-पनिपिआइ नहि भेटैत अछि । एहि ठाम हम सभ मालो-जालसँ बदतर छी ।"

कमला बाजलि, ''एकटा गप्प कह तँ, तों सब एतेक टाका अनलें कत' सँ ?" बेगार सब पहिनहिसँ ट्रेंड छल । बाजल, ''से की रामनगरमे एकटा विश्वनाथे बाबू छथि । एहि ठाम आब कर्जा देनिहारक कमी नहि छैक । जखन कर्जे लेमए पड़त, तँ एहन लोकसँ किएक नहि लेब जे सूदि नहि लेत वा जकर सूदि कम होयतैक । ओ तँ इहो कहलक जे जँ हमरा ओहि ठाम काज करबह तँ सूदि नहि लेबहु आ हिनकर तँ सूदि कहिओ कम होइतहि नहि छन्हि । तेँ हम सभ जे निश्चय कयलहुँ अछि, ओहिसँ पाछाँ नहि हटि सकैत छी ।''

कमला बजलीह, ''की बाबूजी, अहाँक की विचार ?"

विश्वनाथ बाबू जमीन पर आबि गेल छलाह । ओ रोबदार आ कर्कश आवाज मद्धिम पड़ि गेलन्हि । बेगारक गप्प-सप्पसँ बुझयलन्हि जे गामेक कोनो नेता एकरा सभकेँ सिखौलक-पढ़ौलक अछि । ओ बजलाह, ''बेटी, हम तँ बड़ असमंजसमे पड़ि गेल छी, घरक काज कोना होयत ?''

कमला बजलीह, ''जखन कर्जा द' क' हिनका सबकेँ बेगार बनौने छलहुँ आ ई सभ अपन कर्जक राशि सूदि समेत द' क' मुक्त होमए चाहैत छथि, तँ एहिमे अहाँकेँ कोनो एतराज नहि होमक चाही । जहाँ धरि घरक काजक सम्बन्ध अछि, तँ ओकरा लेल अपने निश्चिन्त रहू । घरक लेल हम एकटा बेगार रखने छी ।''

विश्वनाथ बाबू, ''ककरा रखने छी ?''

कमला बजलीह, ''गौरव केँ ।''

विश्वनाथ बाबू, ''गौरव ! के गौरव ?''

कमला बजलीह, ''अहाँक आज्ञाकारी पुत्र गौरव । हमर प्रिय प्राणनाथ गौरव ।''

विश्वनाथ बाबू तमसाइत, ''अहाँ की बाजि रहल छी ? गौरव हमर उत्तराधिकारी अछि । ओ एहि घरक मालिक थिक । ओकरा बेगार कहैत अहाँकेँ कनिओँ संकोच नहि होइत अछि ।''

कमला बजलीह, ''बाबूजी ! अपने तमसाउ जुनि । तमसा क' सत्यकेँ दबा नहि सकैत छी । ई नियम तँ अहींक बनाओल अछि । हम अपना दिससँ थोड़े किछु कहैत छी ।''

विश्वनाथ बाबू, ''हमर बनाओल नियम ! से कोना ?''

कमला बजलीह, ''जखन दू लाख टाका खर्चा क' क' अहाँ दसटा बेगार बना सकैत छी, तँ हमर बाबूजी मात्र गौरव पर दस लाख टाका खर्च कयने छथि । तखन अहीं कहू, गौरव हमर बेगार भेलाह की नहि ।''

विश्वनाथ बाबू, ''अहाँक बाबूजी तँ हमरा कोनो कर्ज नहि देने रहथि । ओ तँ तिलक देने रहथि ।''

कमला बजलीह, ''तिलक नहि, अहाँक बालकक मोल, दाम । जँ कर्ज देने रहितथि, तँ अपने ओकरा चुका सकैत छलहुँ, आपस क' सकैत छलहुँ । एक तरहें अपने गौरवकेँ बेचि चुकल छियैन्हि आ हुनका पुनः हासिल करब तैखन सम्भव होयत, जखन हम बेचबाक लेल तैयार होयब । जँ हम बेचब नहि, तँ अपने कीनब कोना ? जहाँ धरि गौरवकेँ मालिक वा उत्तराधिकारीक प्रश्न अछि, तँ ओ अपनेक घरक मालिक वा उत्तराधिकारी भ' सकैत छथि, मुदा हमरा सोझाँ हुनकर हैसियत एकटा कीनल बेगारसँ अधिक नहि छनि आ एकरा लेल अपनेकेँ तिलक लेबासँ पहिने सोचबाक चाही ।'' कमलाक गप्प सुनि विश्वनाथ बाबूक मुँह लटकि गेलनि । हुनक सामंतीवला सबटा निशा उतरि गेलनि । ओ बूझि गेलाह, जे ई सभटा नाच नचाओल कमले दुनू बाप-बेटीक थिकनि ।

●

परी-कथा

बहुत प्राचीन कालक कथा अछि । एक दिन सुमेरुगढ़ राजक राजकुमार सुमेरु अपन तीनटा दोस्तक संग शिकार खेलबाक लेल जंगल विदा भेलाह । चारू गोटेमे बड़ प्रगाढ़ दोस्ती छलनि । जे कोनो काज करैत छलाह, से चारू एके संग मिलिक' । जंगल प्रवेश करबासँ पहिने एकटा आर रजबाड़ा छलैक, कंचनगढ़ । जखन ई लोकनि ओहि बाटे जा रहल छलाह, तँ संयोगवश कंचनगढ़ केर राजकुमारी कनकलता अपन तीन सहेलीक संग राजवाटिकामे भ्रमण क' रहल छलीह । हुनका चारूक नजरि राजकुमार सुमेरु आ ओकर तीनू दोस्त पर पड़ल । एक सखी बाजि उठलीह, ''हे सखी ! जहिना हम सब सहेली थिकहुँ, तहिना इहो सभ दोस्त छथि ।"

दोसर सखी बजलीह, "हे सखी ! जहिना हमरा सभमे एकटा राजाक बेटी, एकटा मंत्रीक बेटी, एकटा सेनापतिक बेटी आ एकटा मुनीमक बेटी थिकहुँ तहिना हिनकहु चारूमे एकटा राजाक बेटा, एकटा मंत्रीक बेटा, एकटा सेनापतिक बेटा आ एकटा मुनीमक बेटा छथि ।

तेसर सखी बजलीह, '' हे सखी ! जहिना हम सब एकहि संगे बागमे घुमबाक लेल आयल छी तहिना इहो सब एकहि संगे शिकारक लेल जा रहल छथि ।"

राजकुमारी कनकलता बजलीह, ''सभ किछु तँ ठीक छैक, मुदा एकटा गड़बड़ छैक ।"

ई वार्त्तालाप राजकुमार सुमेरुकेँ स्पष्ट रूपेँ कर्णगोचर भ' रहल छलनि । ओ घोड़ा रोकि ध्यानसँ वार्त्तालाप सुनि रहल छलाह । तावत् एक सखी बजलीह, ''राजकुमारी जी ! की गड़बड़ छैक ?''

कनकलता बजलीह, ''एकरा चारूक कनियाँ धोखेबाज छैक । ओ सभ इन्द्रासनक परी थिकैक । ओ सब नित्य चारि बजे भोरे इन्द्रासनसँ अबैत छैक आ परिवारक सभ लोकक सूति रहला पर रातिमे पुनः इन्द्रासन चल जाइत छैक । एहि कनियाँ सभसँ एकरा सभकेँ संतानसुख नहि भेटतैक ।"

दोसर सखी बाजल, ''ओ सभ इन्द्रासनसँ कोना जाइत-अबैत अछि ।"

कनकलता बजलीह, ''ओ चारू जादूगरनी थीक । राजाक घरक पाछाँमे एकटा विशाल बड़क गाछ छैक । ओही पर बैसि मंत्र-शक्तिसँ गाछ सहित जाइत-अबैत अछि ।"

एतेक सुनलाक बाद राजकुमार सुमेरु देखलनि जे हुनक दोस्त सभ बहुत आगाँ बढ़ि गेल छन्हि । ओ सभ आँखिसँ ओझल भ' गेल छलैक । राजकुमार सुमेरु घुरिक' अपन राजधानी आबि गेलाह । तावत् संध्या सेहो भ' गेलैक । राजकुमार सुमेरु अपना घोड़ाकेँ चुपचाप बान्हि, ओहि बड़क गाछ पर आबि नुका क' बैसि गेलाह ।

एम्हर राजकुमारक कनियाँ विद्युतप्रभा अपना तीनू सहेलीक संग बड़क गाछ पर आबि गेलीह । आइ राजकुमार सुमेरुकेँ शिकार पर जयबाक कारणे ओहो लोकनि जल्दीये तैयार भ' गेल छलीह । ओ सब गाछ पर राजकुमारक उपस्थितिसँ अनभिज्ञ छलीह । ओहि दिन इन्द्रासनमे कोनो परी बालिकाक विवाह छलैक, जकर विधकरी विद्युतप्रभाकेँ बनबाक छलनि । तेँ ओ विशेष हड़बड़ायल छलीह । हुनका सबकेँ गन्तव्य स्थान पर गेलाक बादो राजकुमार सुमेरु गाछे पर रहि गेलाह । ओ उतरि क' कत'

जइतथि । ओ ओहि स्थानसँ पूर्ण रूपेँ अनभिज्ञ छलाह । ओहि गाछ पर विध-विधाता चिड़ँइक सेहो वास छलैक । विध, विधातासँ बजलीह, ''राजकुमार सुमेरु जखन इन्द्रासन आबि गेल अछि, तँ एकरा इन्द्रासनक सुख भेटबाक चाही'' ।

विधाता बजलाह, ''भेटबाक तँ अवश्य चाही, मुदा एहि ठामक सुख एकरा कपारमे लिखले नहि छैक'' ।

विध बजलीह, ''एकरा कपारमे जे होइक, मुदा हमरा सभकेँ तँ अपन कर्त्तव्य करबाक चाही ।''

विधक आग्रह पर विधाता चिल्हक रूप ध' क' महँफामे बैसल वर केँ ल' क' उड़ि गेल आ विध चिल्होरि बनि राजकुमार सुमेरुकेँ ओहि महँफामे पहुँचा आयलि । जखन विवाहक विध शुरु भेलैक, तँ विधकरीक रूपमे विद्युतप्रभा आगू बढ़लीह । ओ राजकुमार सुमेरुकेँ देखि सकपका गेलीह । ओ अपना सहेलीसँ बजलीह, ''ई तँ हमर पति राजकुमार सुमेरु बुझा रहल छथि ।'' सहेली सब हुनका लुलुआ' लेलकन्हि ।

"एहि ठाम अहाँक पति कोना औताह ? अहाँकेँ भ्रम भ' गेल अछि । भ' सकैत अछि जे दुल्हाक रंग-रूप राजकुमार सुमेरुसँ मिलैत-जुलैत होमए ।

विध शुरु भेल । विवाह सेहो भेल । विवाहोपरान्त राजकुमार सुमेरु कोबर घर गेलाह । कोबर घरमे नवकी कनियाँ रूपमतीकेँ कहलथिन्ह, "हमरा बहुत जोरक भूख लागल अछि । किछु खयबाक उपाय करू ।"

रूपमती बजलीह, "एहिठाम कोबर घरमे तँ कोनो उपाय नहि अछि । कही तँ भंडारसँ अनबाक प्रयास करैत छी ।"

राजकुमार सुमेरु बजलाह, ''नहि, नहि, बाहर जयबाक प्रयोजन नहि छैक । लोक सुनत तँ की कहत ? जँ घरहिमे किछु भ' सकैत अछि, तँ करू ।'' रूपमतीकेँ ओहि घरमे किछु नहि भेटलनि । एकटा बासनमे कनेक चिक्कस भेटलन्हि, जकर प्रयोग सम्भवतः उबटनमे होइत अछि । ओ ओहि चिक्कसकेँ सानि अहिबातक दीपक सहयोगसँ चारिटा रोटी बनौलनि आ राजकुमार सुमेरुकेँ देलथिन्ह । राज़कुमार सुमेरु दूटा रोटी खा लेलन्हि आ दूटाकेँ चारि टुकड़ी क' क' घरक चारु कोनमे फेकि देलथिन्ह । जखन रूपमंती सूति रहलीह, तखन राजकुमार सुमेरु अपन कनगुरिया आंगुरकेँ चीरि ओहि शोणितसँ रूपमतीक आँचर पर लिखलन्हि, ''हम किछु विशेष प्रयोजनसँ एखन जा रहल छी । किछु दिनक बाद आयब । जँ बारह वर्ष धरि नहि आबी, तँ बूझब जे हम एहि दुनियाँमे नहि छी । एहि बीचमे जे केओ विवाह रातिक वर्णन करत, ओकरहि अपन पति मानब ।'' ओकर बाद राज़कुमार सुमेरु बाहर आबि पुनः ओही बड़क गाछ पर बैसि गेलाह । हुनका अबितहि विधाता, विधसँ बाजल, ''हम कहने छलहुँ ने, एकरा कपारमे इन्द्रासनक सुख नहि छैक ।''

ओकरा कपारमे रहौक वा नहि, मुदा हम सब अपन कर्त्तव्य तँ कयलहुँ ।'' विध बजलीह ।

तावत करीब चारि बाजि गेलैक । विद्युतप्रभा नित्य कार्यक्रमक अनुसार चारू सहेलीक संग बड़क गाछ पर आबि पुनः सुमेरुगढ़ आबि गेलीह । यावत् विद्युतप्रभा सभ सखीकेँ अपना-अपना घर पहुँचाक' अपना घर आबथि, तावत् राजकुमार सुमेरु अपना भवनमे जा क' सूति रहलाह । विद्युतप्रभा राजकुमारक हाथमे आमक कंगन आ आँखिमे काजर देखि बुझि गेलीह जे रातिमे हुनका कोनो भ्रम नहि भेल छलनि । ओहि विवाह मंडपमे वरक रूपमे स्वयं राजकुमार सुमेरु छलाह । हुनका बुझबामे आबि गेलनि जे राजकुमार सभ भेद बुझि गेलाह । आब एहि भेदकेँ भेद रखबाक लेल किछु करब आवश्यक अछि । ओ चट द' राजकुमारक कानमे एकटा जड़ी द' देलथिन्ह । जड़ी पड़ितहि राजकुमार सुग्गाक रूपमे परिणत भ' गेलाह । विद्युतप्रभा चाहैत छलीह जे सुग्गा बनल राजकुमारकेँ पिजड़ामे बंद करी, मुदा यावत् ओ पिजड़ा ताकथि, सुग्गा उड़ि गेल ।

सुग्गा बनल राजकुमार उड़ैत-उड़ैत रतनगढ़ राजमे पहुँचलाह । ओहि राजमे चिड़ँइ-चुनमुनीक भरमार छलैक । ओकरा सभक विचरण करबाक लेल खूब सुन्दर बगीचा छलैक । ओ सुग्गा सेहो ओहीमे मिलि

गेल । रतनगढ़ केर राजकुमारी रत्नाकेँ चिड़ँइ-चुनमुनीसँ बड़ स्नेह छलनि । ओ नित्य बागमे आबि किछु खयबाक सामग्री छीटि दैत छलीह आ ठाढ़ि भ' क' तमाशा देखैत छलीह । हजारो चुनमुनी ओहि पर लुधुकि जाइत छलैक । सभ आपसमे छिना-झपटी करैत छलैक आ से देखि राजकुमारी रत्ना अति प्रसन्न होइत छलीह । अचानक राजकुमारी रत्नाक ध्यान दूर बैसल एकटा सुग्गा पर पड़ल । ओ ने किछु खाइत छल आ ने ओकरामे कोनो चुहचुही छलैक । ओ एकटक राजकुमारी रत्नाकेँ निहारि रहल छल । राजकुमारी रत्नाकेँ भेलैक जे अवश्य ई सुग्गा कोनो कष्टमे अछि । तेँ ओकरामे कोनहु चंचलता परिलक्षित नहि भ' रहल छैक । ओ ओहि सुग्गाकेँ पकड़ि अपना अंतःकक्षमे ल' अयलीह आ उनटा-पुनटा क' ओकरा सौंसे देहक परीक्षण कर' लगलीह । ओहि परीक्षणक क्रममे सुग्गाक कानक जड़ी खसि पड़ल आ सुग्गा राजकुमारमे परिणत भ' गेल । सुग्गाक नव रूप देखि रत्ना आश्चर्यचकित रहि गेलीह । पूर्ण वृत्तान्त सुनलाक बाद दुनूमे प्रेम भ' गेलनि । आब राजकुमारी रत्ना आवश्यकतानुसार ओहि जड़ीक उपयोगसँ राजकुमारकेँ कौखन सुग्गा तँ कौखन राजकुमार बनाक' अपनहि कक्षमे रखैत छलीह । ओहि ठाम एकटा विशेष बात आर छलैक । रतनगढ़ राजक फुलवाड़ीमे एकटा विशेष तरहक फूलक गाछ छलैक । ओहिमे ओतबहि फूल फुलाइत छलैक, जतेक राजकुमारी रत्नाक भार छलैक । माली नित्य विशेष रूपेँ ओकर परीक्षण करैत छलैक । एक दिन माली देखलक जे ओहि गाछमे अन्य दिनक अपेक्षा फूलक संख्या कम छलैक । ओ राजाकेँ तकर सूचना देलक । राजाकेँ आभास भ' गेलनि जे रत्ना ककरहुसँ प्रेम करैत छथि । ओ राजकुमारीक कक्षक निगरानी बढ़ा देलनि आ अपना विश्वस्त दूतकेँ जाँचमे लगा देलनि, मुदा नतीजा किछु नहि बहरायल । माली बारम्बार राजाकेँ सूचित करैत रहल आ राजा अपना दिससँ पूर्ण प्रयास करैत रहलाह । कतेको प्रहरीकेँ हटाओल गेल, मुदा स्थिति जस केर तस । अंततः राजा राज ज्योतिषीक ओहि ठाम गेलाह । राज ज्योतिषीक अनुसार सबटा चिड़ँइ-चुनमुनीकेँ मारब शुरू भ' गेल । चिड़ँइ-चुनमुनीक हत्यासँ राजकुमारी रत्ना चिन्तित भ' उठलीह । ओ राजकुमार सुमेरुकेँ सब वृत्तान्त सुनौलनि । तदनुसार

रत्ना राजकुमारकेँ कानमे जड़ी द' क' उड़ा देलनि । सुग्गा उड़ैत-उड़ैत एकटा घनघोर जंगलमे पहुँचल आ ओहि जंगलक सभसँ ऊँच सिम्मरक गाछ पर बैसि गेल । रातिमे निन्न आबि गेलाक कारणे ओकरा कानसँ जड़ी खसि पड़लैक आ ओ पुनः राजकुमारक रूपमे परिणत भ' गेल । राजकुमार अपनाकेँ सिम्मरक गाछ पर बहुत ऊँचमे पाबि भयभीत भ' गेलाह । ओ कोनो तरहे नीचाँ आबि राति गमौलनि । प्रातःकाल राजकुमार बड़ चिन्तित छलाह । ओ आब एहि ठामसँ आगाँ कत' जयताह ? तावत् हुनक ध्यान एक स्थान पर गेल । ओहि ठाम चारिटा बाबाजी आपसमे लड़ि रहल छल । ओ सहटि क' ओकरा लग गेलाह आ झगड़ाक कारण पुछलथिन । एकटा बाबाजी बाजल, ''सरकार ! हमरा सभकेँ किछु सामग्रीक बँटबाराक लेल झगड़ा भ' रहल अछि । अपनेसँ आग्रह जे एकर बँटबारा क' देल जाय ।''

राजकुमार बजलाह, ''पहिने ई कहल जाय जे ई सामग्री कत' सँ आयल अछि आ एहिमे की गुण छैक ?''

एकटा बाबाजी बाजल, ''सरकार ! हमरा सभक गुरु महाराज आइसँ पन्द्रह दिन पूर्व दिवंगत भ' गेलाह । सभटा क्रिया-कर्म कयलाक बाद हम सभ हुनक ई सामग्री सभ आपसमे बाँटि लेब' चाहैत छी ।''

राजकुमार पुछलथिन्ह, ''कोन कोन सामग्री अछि आ ओहिमे की की गुण छैक ?"

बाबाजी बाजल, ''एकटा बघछाला अछि, जकर गुण छैक, भ्रमण करायब; दोसर बाटी अछि, जकर गुण छैक भोजन सामग्री उपलब्ध करायब; तेसर डोरी अछि, जकर गुण छैक दुश्मनकेँ बान्हब, चाहे ओ कतबहु संख्यामे किएक नहि हो आ चारिम अछि डंटा, जाहिसँ कतबो लोककेँ पीटल जा सकैत छैक ।''

राजकुमार पुछलथिन्ह, ''एकर उपयोगक कोनो मंत्रो अछि ?''

एकटा बाबाजी बाजल, ''जी, हँ, मंत्र छैक, ''सत गुरुक अमुक चीज छी, तँ अमुक काज करू ।''

राजकुमार सबटा बाबाजीसँ गप्प कयलनि, मुदा केओ मान'वला नहि । सभक ध्यान बघछाला आ बाटिए पर छलैक । बाबाजीकेँ दुइयेटाक काजो रहैत छैक, भोजन आ तीर्थाटन । राजकुमार सभकेँ बहुत तरहें बुझौलथिन । एकरा सभकेँ जुनि बाँटू । एकरा एकहि ठाम राखू । एक ठाम रहने एकर उपयोग सब गोटे मिलि क' करब । बाँटलासँ सभकेँ कष्ट होयत । केओ गोटे राजकुमारक गप्प मानबाक लेल तैयार नहि भेलाह । अंततः राजकुमार मने मन निर्णय लेलनि जे ई सबटा ल' क' हमहीं चलि जाइत छी । एकरा सभक उपयोगसँ अपना तीनू दोस्तक खोज करबामे सुविधा होयत ।

राजकुमार बजलाह, ''ठीक अछि, बँटबारासँ पूर्व हम एकर जाँच कर चाहैत छी । सबसँ पहिने डोरी के कहल गेलैक । डोरी छलैक तँ दुइये हाथक मुदा एकटा गाछकेँ तेना क' बान्हि देलक, जेना पचास हाथक होइ । ओकर बाद डंटा, बाटी आ अंतमे बघछालाक प्रयोग कयलनि । राजकुमार सभटा सामग्री ल' क' बघछाला पर बैसि गेलाह आ बजलाह, ''सत गुरुक बघछाला छी तँ हमरा ओहि ठाम ल' चलू, जत' हमर तीनू दोस्त छथि । बघछाला उड़ैत-उड़ैत एकटा फूसक घर लग आबि गेल । ओहि घरमे एकटा बुढ़िया रहैत छलि । ओकरा कोनो बाल-बच्चा नहि छलैक । राजकुमार सुमेरुकेँ बुझबामे आबि गेलनि जे हुनक तीनू दोस्त एहि ठाम कतहु ने कतहु छथि । ओ दोस्त सभकेँ तकबाक लेल बुढ़ियासँ सम्पर्क बढ़ायब उचित बुझलनि ।

राजकुमार बजलाह, ''मौसी गोड़ लगैत छी ।''

बुढ़िया अकचकाइत बाजल, ''के थिकहुँ बौआ ! हमरा तँ कोनो बहिन अछियै नहि । तखन हम अहाँक मौसी कोना भेलहुँ ।''

राजकुमार बजलाह, ''अहाँक विवाह-द्विरागमनक बाद हमरा माय केर जन्म भेलैक आ हमर माय अहाँक पता हमरा देलक । राजकुमारक वाक्‌पटुतासँ बुढ़ियाकेँ विश्वास भ' गेलैक जे ई हमर बहिनबेटा थीक । तखन बुढ़िया अपन गामक हालचाल पूछ' लगलैक । राजकुमार अंदाजसँ ओकरा जबाब देलथिन । हालचाल भेलाक बाद बुढ़िया खयबाक आग्रह कयलकनि आ भानस करबाक लेल विदा भेल ।

राजकुमार बजलाह, ''मौसी ! अहाँ बूढ़ भ' क' हमरा लेल भानस करब, से उचित नहि बुझाइत अछि ।''

बुढ़िया बाजलि, ''बौआ जँ भानस नहि करब तँ भोजन कोना होयतैक ? अहाँ कतेक दूरसँ थाकल-ठेहिआयल आयल छी आ भूखो तँ लगले होयत ।''

राजकुमार बजलाह, ''आइ हमर माय जे अहाँक लेल सनेस पठौने अछि, ओएह खा क' दुनू गोटे रहि जायब । अहाँ कनेक जल लाउ त' ।''

यावत् बुढ़िया जल आनक लेल गेल, तावत् राजकुमार कटोरीकेँ आदेश देलनि आ कटोरी खीर-पुरीसँ भरि गेल । राजकुमार ओ कटोरी बुढ़ियाक आगाँमे द' देलनि । कटोरीक खीर-पुरी देखि बुढ़ियाक आँखि चमकि उठलैक । कतेक दिनसँ खीर-पुरी खयनहु नहि छल । ओ ओकर सभसँ प्रिय भोजन छलैक ।

बुढ़िया बाजलि, ''ऐँ रौ बौआ, हमरा अयलाक बाद तोरा मायक जन्म भेलौक, मुदा ओ कोना बुझि गेलैक जे हमर प्रिय भोजन खीर-पुरी थीक'' ।

राजकुमार बाजल, ''हमर माय आखिर बहिन तँ अहींक थीक । भ' सकैत अछि जे एहि सम्बन्धमे नानी चर्चा कयने होयथिन ।''

''भ' सकैत अछि ।'' बुढ़िया बाजलि आ दुनू गोटे भरि पेट खयलनि । राजकुमार सेहो कतेक दिनक भुखायल छलाह । तावत् राति विशेष भ' गेलैक । दुनू गोटे आराम करबाक लेल चलि गेलाह । राति बेसी भेलाक कारणे राजाक सिपाही सेहो पहरा देब' लागल । ओहि सिपाहीकेँ देखि राजकुमार सुमेरु बजलाह, ''मौसी, एकटा गप्प पुछिऔक ?''

बुढ़िया बाजलि, ''अवश्य पूछह ।'' ''हमर इच्छा होइत अछि जे एहि ठामक राजकुमारीसँ विवाह करी,'' राजकुमार सुमेरु बाजल ।

बुढ़िया बाजलि, ''एहन गप्प बजबो नहि करिहें । ई अन्हेर नगरी थीक आ एकर राजा चौपट अछि । ओ बड़ दुष्ट आ अत्याचारी अछि ।

जँ ओकरा एहि गप्पक भनक लागि जाइक तँ दुनू गोटेकेँ भकसी झोंकबा देत । बौआ रे बौआ, एहन गप्प फेर नहि बजिहें ।''

राजकुमार बजलाह, ''मौसी, अहाँ तकर चिन्ता किएक करैत छी ? ई चौपट राजा हमर किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि । अहाँ केवल एतबहि कहू जे राजकुमारी केहन अछि ? ओकरासँ विवाह करब ठीक होयत की नहि ?''

''बौआ, राजकुमारी सुलेखा तँ बड़ अपूर्व अछि । जेहने रूप-रंग, तेहने स्वभाव । बजैत अछि तँ लगैत अछि जेना फूल झरैत हो । ओकरासँ विवाह करबाक लेल कतेको राजकुमार आयल । ओकरा सभकेँ अनर्गल प्रश्नमे उलझा क' ई राजा मरबा देलक आ कतेको जहलमे बन्न अछि । तेँ कहैत छियहु जे एहन गप्प पुनः नहि बजिहें,'' बुढ़िया बाजलि । ओकरा दुनूक गप्प राजाक कोतबाल जे पहरा द' रहल छलैक, सुनि लेलक आ बुढ़ियाक केबाड़ पर डंटा पटकब शुरू कयलक ।

बुढ़िया बाजलि, ''बौआ आब कल्याण नहि अछि । राजाक कोतबाल हमरा सभक गप्प सुनि लेलक ।'' तावत केबाड़ पर जोर-जोरसँ डंटाक आवाज होमए लगलैक ।

बुढ़िया बाजलि, ''के छी बौआ, की बात थिकैक ?"

कोतबाल बाजल, ''बुढ़िया, तोरा घरमे दोसराति के छौक जे राजाक बेटीसँ विवाह करबाक गप्प करैत छलौक ? ओकरा हमरा सोझाँ पठा दे ।''

बुढ़िया बाजलि, ''सरकार, हम तँ एकसरे छी । हमरा घरमे दोसराति केओ नहि अछि ।"

कोतबाल बाजल, ''हम अपना कानसँ सुनने छियौक । केओ दोसराति तोरा घरमे नुकायल छौक ।'' एतेक कहैत कोतबाल बुढ़ियाकेँ अनाप-सनाप बाज' लागल । कोतबालक संग करीब दसटा सिपाही जमा भ' गेलैक । ओ सब बुढ़ियाक सामानकेँ एम्हर-ओम्हर फेक' लागल । से देखि राजकुमार सुमेरु डोरीकेँ आदेश देलनि जे सभकेँ बान्ह आ डंटाकेँ आदेश देलनि जे सभकेँ पीट । क्षण भरिमे सभटा सिपाही बन्हा गेल आ

सभक ऊपर डंटा बरिस' लागल । सभटा सिपाही भागि पड़ायल । राति रहलाक कारणे बुढ़ियाकेँ एहि चमत्कारक पता नहि लगलैक । ओ बुझलक जे हमर बहिनबेटा सभकेँ मारि क' भगा देलकैक ।

ओ बाजलि, ''बौआ ! ई नीक काज नहि कयलह । ई चौपट राजा जखन अपन पूरा फौज ल' क' आओत, तखन की करबह ? एहिसँ बढ़ियाँ जे ओ यावत् आबए, तोँ कतहु अन्यत्र भागि जाह ।''

राजकुमार बजलाह, ''ठीक छै, हम तँ कतहु भागि जायब, मुदा अहाँक की होयत । की अहाँकेँ ओ छोड़ि देत ?''

बुढ़िया बाजलि, ''छोड़ि तँ नहि देत, मुदा हम आब बूढ़ भेलहुँ । हम आब जिबिये क' की करब मुदा अहाँ एखन जवान छी । अहाँकेँ जँ किछु भ' जायत, तँ हमर बहिन हमरा की कहत ?''

एम्हर राजाक कोतबाल सभटा गप्प राजाकेँ सुनौलक । राजा तामसे भूत भ' गेल । तुरंत सेनानायककें आदेश देलक । हजारो सिपाही बुढ़ियाक घरकेँ चारू दिससँ घेरि लेलक । आब तँ बुढ़ियाक व्याकुलता बढ़ि गेलैक । ओ भगवान-भगवान करब शुरू क' देलक । हे भगवान, आब हमरा सभक रक्षा अहींक हाथ अछि । एम्हर राजकुमार सुमेरु डोरी केँ आदेश देलनि । आदेश पबितहि डोरी सभटा सैनिककें बान्हि देलक । पुनः सोंटाकेँ आदेश भेटल । ओहो दना-दन चल' लागल । सभटा सिपाही अधमरू भ' गेल । अंतमे सोंटा चौपट राजाक कपाल-क्रिया करब शुरू कयलक । अंततः चौपट राजा राजकुमार सुमेरुक सोझाँ नतमस्तक भ' गेल आ अपन पराजय स्वीकार कयलक । अपन राजक संग अपन बेटी सेहो राजकुमारकेँ सुपुर्द कयलक । सुलेखाक संग राजकुमार सुमेरुक विवाह खूब धूम-धामसँ भेल । बुढ़िया मौसी सेहो राजकुमारक संग राजभवनमे आबि गेलीह । प्रजामे एहन धारण भ' गेल छलैक जे ई राजा चौपट राजासँ बेशी खतरनाक अछि किएक तँ जे चौपट राजाकें परास्त कयलक, से साधारण लोक नहि भ' सकैत अछि । राजकुमार घुमैत-घुमैत अपना तीनू दोस्तकेँ घोड़ाक सहीसक रूपमे काज करैत देखलनि । ओ तीनू दोस्तकेँ चीन्हि गेलनि मुदा प्रकट नहि भेलाह । ओ आदेश देलथिन, ''जे सहीस

आइ जतेक घास आनत, ओकरा आइ बीस टाका प्रति बोझक हिसाबसँ अतिरिक्त इनाम भेटतैक ।'' तीनू दोस्त विचार कयलक जे काल्हि अधिक घास आनब आ ओहि इनामसँ बटखर्ची निकलि जायत । एहि ठामसँ पड़यबामे सुविधा होयत । दोसर दिन ओ सब पाँच-पाँच बोझ घास अनलक आ सय-सय टाका पओलक । पुनः घोषणा भेल, ''काल्हि पचास टाका प्रति बोझ भेटत ।'' सब सहीस घास अनबाक लेल विदा भेल । ओकरा सभक संग बटखर्ची छलैक । ओ सभ ओहि ठामसँ पड़यबाक योजना बना रहल छल ।

एकटा बाजल, "घासेक बहाने एहि ठामसँ भागि चल ।"

दोसर बाजल, "ई राजा ओकरोसँ खतरनाक अछि । एहि ठामसँ भगनहि कल्याण अछि ।"

तेसर बाजल, "हम सब घरसँ कतेक दूर छी, सेहो तँ नहि बूझल अछि । पता नहि, जयबामे कतेक दिन लागत । एखन संगमे जे टाका अछि, से दूसँ तीन दिनमे खतम भ' जायत । तें हम सब काल्हि जखन घासक लेल आयब तँ भागि जायब ।" ओहि दिन सेहो ओ सब पाँच-पाँच बोझ घास ल' क' पहुँचल आ इनामक रूपमे दू सय पचास टाका पओलक । तेसर दिन तीनू सहीसकेँ दरबारमे बजाओल गेल । तीनूक हाल बेहाल छल । ओ सब सोचैत छल जे भागि जइतहुँ तँ नीक छल । आब तँ भागियो नहि सकैत छी । तीनू दरबारमे हाजिर भेल । हजाम बजाओल गेल आ तीनू गोटेकेँ पहिने केश-दाढ़ी कटबाओल गेल, स्नान करबाओल गेल, नव वस्त्र पहिराओल गेल । ओहि ठाम राजकुमार सुमेरु स्वयं उपस्थित छलाह । हुनका देखि तीनू सहीस कान' लागल । राजकुमार पुछलथिन्ह, "किएक कनैत छी ?" एकटा सहीस बाजल, "सरकार ! जँ जान बकसि दी, तँ किछु बाज' चाहैत छी ।"

राजकुमार बजलाह, ''निर्भय भ' क' बाजू ।"

दोसर सहीस बाजल, ''सरकार ! हमर एकटा मित्र छलाह, सुमेरुगढ़ राजक राजकुमार सुमेरु । ओ बारह वर्ष पूर्व हमरा सभसँ बिछुड़ि गेलाह । हुनकहु गाल पर अहीं सनक तिल छलन्हि आ देखबा-सुनबामे

सेहो अहीं सनक छलाह । ओएह मन पड़ि गेलाह, तेँ आँखिसँ नोर खसि पड़ल । एतेक सुनैत राजकुमार सुमेरु हिनका तीनूकेँ गला लगा लेलन्हि आ बजलाह, ''अहाँक ओ बिछुरल दोस्त हमही छी ।''

तकर बाद चारू दोस्त रतनगढ़ अयलाह । सत गुरुक डोरी-सोंटाक मदतिसँ रतनगढ़क राजाकेँ हरौलन्हि आ राजकुमारी रत्नासँ विवाह क' कंचनगढ़ राजमे प्रवेश कयलनि । ओहि ठाम राजकुमारक विवाह राजकुमारी कनकलतासँ भेलनि आ हुनका तीनू सहेलीक संग राजकुमारक तीनू दोस्तक विवाह भेल । ओकर बाद चारू दोस्त सुमेरुगढ़ राज अयलाह । एहि ठामक लोककेँ राजकुमार सुमेरु आ हुनक तीनू दोस्तक बारह वर्षसँ प्रतीक्षा छलैक । हुनका लोकनिकेँ इहो आशंका छलनि जे भ' सकैत अछि, शिकार करबाक क्रम मे ई सभ स्वयं ने कोनो हिंसक जानवरक शिकार भ' गेल होथि । तेँ हिनका सबकेँ जिबैत देखि नगरक लोक अत्यन्त प्रसन्न भेल । राजकुमार सुमेरु अपना तीनू दोस्तकेँ पहिलुक घरवालीक विषयमे सब किछु कहि देने छलाह । तेँ सभ गोटे मिलिक' ओहि चारू कनियाँकेँ मारि देलन्हि । आब हुनका इन्द्रासनवला गप्प मन पड़लन्हि । बारह वर्षमे मात्र एक दिन शेष छलैक । ओ सत गुरुक बघछालासँ तुरंत इन्द्रासन पहुँचि गेलाह । ओहि ठाम राजकुमारी रूपमतीक प्रण छलनि जे आइ संध्या तक जँ पति नहि भेटताह तँ अपन शरीर नष्ट क' लेब । आइ हुनका विवाहक बारहम वर्ष बीति रहल छलनि । कतेको राजकुमारसँ रूपमती प्रश्न पुछलन्हि, ''विवाह रातिक वर्णन करू ।'' केओ गोटे प्रश्नक समुचित उत्तर नहि देलथिन । तावत् राजकुमार सुमेरु सेहो पहुँचि गेलाह । ओ विवाहक रातिक वर्णन कयलनि यथा- ''विवाहक राति हम कहलहुँ जे बड़ जोरसँ भूख लागल अछि । अहाँ कहलहुँ जे भंडार घरसँ किछु आनि क' दैत छी । हम कहलहुँ, लोक बुझि जायत तँ की कहत । तखन अहाँ कोबर घरमे राखल उबटनक चिक्कससँ चारिटा रोटी बनाओल...'' रूपमती बूझि गेलीह जे इएह हमर वर थिकाह । ओ राजकुमार सुमेरुकेँ अपन पति मानि लेलन्हि आ खुशी-खुशी सुमेरुगढ़ आबि गेलीह ।

●

कुकुरक नाङरि

कंटिर बाबा सुभ्यस्त गृहस्थ छलाह । दस बीघा खेतक स्वामी । बाबा माल-जालक सेहो बड़ शौखीन छलाह । दूटा बड़द आ दूटा महींस खुट्टा पर बान्हल रहैत छलनि । बड़द आ महींस बड़ सौखसँ किनने छलाह । जखन ओ सीतामढ़ीक मेलासँ बड़द आ महींस कीनि क' अनैत छलाह, तँ ओकरा देखबाक लेल लोकक भीड़ लागि जाइत छलैक । एहन केओ नहि छलैक, जकरा बाबाक महींस आ बड़द देखने बिना चैन भेटल हो । बड़द छोट खुट्टीक, मुदा चोखगर अनैत छलाह । हर आ गाड़ीमे जोतलाक बाद हरबाहकेँ कहिओ पेना नहि चलब' पड़ैत छलैक । पीठ पर हाथ पड़ितहि बड़द दौड़ि पड़ैत छलैक ।

एक बेरुक गप्प थीक । बाबा मेलासँ बड़द कीनि क' अनने छलाह । बड़द बड़ सुन्नर छलैक आ दामो छलैक चारि हजार । एहि ठाम केओ ओकर मोल पाँच हजार टाका द' सकैत छलैक । कोनो कारणवश एक दिन ओ बड़द हट्ठामे बैसि गेल । हरबाह ओकरा तीन-चारि पेना देलकैक, मुदा ओ नहि उठलैक । बाबाकेँ ई बर्दास्त नहि भेलनि । ओ दोसरे दिन बड़द बेचबाक गप्प दू-चारि ठाम बाजि देलथिन । गाहक सब आब' लागल, मुदा केओ दू हजारसँ बेसी देबाक लेल तैयार होइते नहि छल । सब बुझैत छल जे बाबा जखन बाजि देलनि तँ एकरा ओ बेचबे

करताह । आखिर किछु ने किछु तँ कारण अवश्य होयतैक अन्यथा बाबा एतेक सौखसँ कीनल बड़द किएक बेचताह । सभ केओ ओकरहि फायदा उठा रहल छल । बाबा ओकरा दामक दाममे बेच' चाहैत छलाह । अंततः एक हजार घाटा लगा क' बाबा ओहि बड़दकेँ बेचि देलनि ।

बाबा दू भाय-बहिन छलाह । बहिनिक नाम छलनि भानुमती । बाबाकेँ पाँचटा पुत्ररत्न छलथिन्ह । बेटा सभक नाम छलनि रमाकान्त, शिवाकान्त, हरेकान्त, उमाकान्त आ प्रेमकान्त । बाबाकेँ बेटी नहि छलनि, से बाबाकेँ बड़ अखरैत छलनि । बेटा सभकेँ पढ़यबा-लिखयबामे बाबा कनेको कमी नहि कयलनि । सभ विद्वत्तामे उपरा-उपरी छलाह आ सब भायमे बड़ मेल-जोल छलन्हि । सब भाय बाबाक परम आज्ञाकारी छलाह, मुदा सभक कनियाँमे के नहला आ के दहला से कहब कठिन छल ।

बाबाक धर्मपत्नी करीब बीस वर्ष पूर्वहि स्वर्गीय भ' गेल छलथिन्ह । मुदा बाबा जेना अमृत पीबि क' आयल होथि । मरबाक नामे नहि लैत छलाह । सब दियादिनी बाबाकेँ उत्तर मुँहे होयबाक बाट बेसब्रीसँ जोहि रहल छलीह । मुदा बाबाकेँ कहिओ माथो ने दुखाइत छलनि आ पाचन क्रियाक तँ गप्पे जुनि पुछू । ईंटो-पाथर पचि जाइत छलनि । ई कहब हुनका बालक सभक छलनि जकरा सभक पालन-पोषणमे बाबा अपना जुआनीकेँ झोंकि देने छलाह । दिनकेँ दिन आ रातिकेँ राति नहि बुझैत छलाह । कोनो बेटाकेँ माथो दुखाइत छलनि, तँ बाबा दवाइक लेल दौड़ि पड़ैत छलाह । लोक बाल-बच्चाकेँ बुढ़ारीक सहारा बुझैत अछि आ बाल-बच्चा जँ माय-बापकेँ बोझ बुझि लिअय, तँ की कयल जा सकैत अछि ?

बाबा अपना घरक लेल जे होथि, मुदा गौंआँक लेल बड़ उपयोगी छलाह । गामक के कहए पूरा इलाकाक लोक बर-बिमारी मे देशी दवाइ अर्थात् जड़ी-बूटीक लेल बाबाक ओहि ठाम अबैत छलाह आ बाबा ओकर समीचीन उपचार करैत छलाह । जेनाकि आँखिक रोशनी कम भ' गेल, तँ तिलकोरक तरुआ खाउ । बोखार लगैत अछि, तँ हरसिंगार फूलक पातकेँ पीसि क' ओकरा आगि पर खदका क' दुनू साँझ पीबू । पेट खराब अछि, तँ काँच केराकेँ उसिनि क' ओकर चोखा आ मरगिल्ला खाउ । नेबो केँ

काटि ओहि पर नोन द' क' ओकरा आगि पर खदका क' खयलासँ सेहो पेट ठीक होइत अछि । पिलिया रोग अछि, तँ गुम्माक जड़िकेँ पीसि क' पीबू । जँ दाँतमे दर्द अछि आ मसूढ़ा फूलि गेल अछि, तँ सोंठिकेँ पीसि क' ओकरा गरमा क' फूलल जगह पर लगा दिऔक, दर्द खतम । तीनसँ चारि दिन लगयबाक छैक । जँ पैखाना कब्ज अछि, तँ गर्म जलमे नोन मिलाक' ओहिमे नेबो गाड़ि क' पीबि जाउ आ लोटा ल' क' विदा भ' जाउ, आदि ।

खेती-बाड़ीक विषयमे सेहो बाबाक भविष्यवाणी बड़ अद्‌भुत होइत छलनि । जेना कि जेठ मासक स्वाती, विशाखा, अनुराधा आ ज्येष्ठा नक्षत्रमे जँ मेघ लागल आ वर्षा भेल, तँ आगू दुर्भिक्षक सम्भावना रहत । चरहुमे राहड़ि उपजत । कदाचित ओहि चारू नक्षत्रमे वर्षा नहि भेल आ मेघ नहि लागल, तँ समय आनंददायक होयत । समय पर वर्षा होयत आ उपजा-बारी सेहो नीक जकाँ होयत । बाबाक कहब छलनि, :-

''साओन शुक्ला सप्तमी, छुपि क' उगिह' भानु ।
मेघा बरिसए तखन धरि, यावत् देव-उठौन'' ।।

अर्थात् साओन मासक शुक्ल सप्तमी क' मेघ लागल रहए आ ओहिमे सँ यदा-कदा सूर्यक प्रकाश आबए, तँ ओहि दिनसँ देवोत्थान एकादशी धरि समय-समय पर आवश्यकतानुसार वर्षा होयत आ खेती कयनिहार खुशहाल रहताह ।

''भानु उगय की नहि उगय, छुपि क' उगय चान ।
ऊपर नीचाँ के कहए, पर्वत उपजै धान ।।''

अर्थात् उपरोक्त नक्षत्रमे जँ आकाश मेघसँ आच्छादित रहए, सूर्यक उदय नहिञो होमए, मुदा चन्द्रमा नभ मंडलमे चोरा-नुक्कीक खेल खेलए, तँ गृहस्थक लेल उत्तम समय केर अनुमान अछि ।

''भादव कृष्ण एकादशी, रैनि होइ मसिहार ।
सुतहु पिया निश्चिन्त जँ बान्हल खेतक आरि'' ।।

अर्थात् भादव कृष्ण एकादशी क' रातिमे जँ आकाश घनघोर घटासँ आच्छादित रहए, तँ ओ कृषक चैनसँ घरमे सूति सकैत छथि, जनिकर खेतक आरि नीक जकाँ बान्हल होन्हि ।

''साओन पछबा, भादब पुरबा, आसिन बहे इशान ।
कातिक कन्ता सिकिओ ने डोलए, कत' क' रखबह धान'' ।।

अर्थात् जँ साओनमे पछवा, भादब मे पुरबा, आसिनमे इशान कोणक बसात चलए आ कार्तिकमे कोनो बसात नहि चलए, तँ किसानकेँ धान रखबाक जगह नहि भेटतैक ।

एहि तरहें कंटिर बाबा अपना गाम-समाजक लेल बहु उपयोगी लोक छलाह । जखन बाबाक हाथ-पयर काज करैत छलनि, तखन सभ बेटा ऊपर-चापर करैत रहलनि । कहैत छलनि, 'बाबूजी ! हमरा ओहि ठाम चलू, तँ हमरा ओहि ठाम ।'

मुदा बाबा ककरहु ओहि ठाम जयबाक लेल तैयार नहि होइत छलाह । ओ कहैत छलाह, ''अपन माँटि अपने होइत छैक । ओहिमे जे सुगंध होइत छैक, से परदेशमे कत' पायब ।'' बाबा सोचैत छलाह, गाममे छी तँ सभसँ भेट-घाँट, गप्प-सप्प होइत अछि । टहलि-बुलि क' दिन काटि लैत छी आ शहरमे बैसल-बैसल देह-हाथ अकड़ि जायत । ने केओ गप्प केनिहार भेटत आ ने एकसरे कतौ घूमि-फिरि सकैत छी । ऊपरसँ शहरक भीड़-भाड़ से अलगे ।

बाबा कतेको लोकक मुँहे सुनने छलाह जे शहरक लोक काजक पाछाँ बड़ अपस्याँत रहैत अछि । ओकरा सभकेँ एक-दोसरसँ गप्पो करबाक पलखति नहि होइत छैक । एकहि डेराक लोककेँ एक दोसरसँ भेट करबामे मासो दिन लागि जाइत छैक । एहि तरहेँ हँसइत-खेलाइत बाबा नब्बे वसन्त बिता देलनि मुदा कहिओ ककरो कोनो भार नहि देलथिन ।

आब बाबाक हाथ-पयर ओतेक काज नहि करैत छलन्हि । आब हुनका केओ ने केओ सहारा चाही । बेटा सभकेँ डेन ध' क' चलौने छलाह । आब हुनकहु केओ डेन धयनिहार चाही । ओ सभ बेटा-पुतहुकेँ

बजौलन्हि आ हुनका सभक संग रहबाक इच्छा व्यक्त कयलनि, मुदा केओ अपना संग ल' जयबाक लेल तैयार नहि छलनि । सब किछु ने किछु बहाना बनौलक । हालांकि सभटा बेटा बाबाकेँ बड़ मानैत छलथिन आ बाबाकेँ अपना संगे रखबाक सभक इच्छो छलनि मुदा सभ बेटा कनियाँ सभक वशीभूत छलथिन्ह । जे कनियाँ कहितथिन्ह, सैह करितथि । कनियाँ सभ लग सभ भाय नाथल साँढ़ जकाँ छलाह ।

कंटिर बाबा सभ बेटाकेँ एक संग बैसा क' पुछलथिन्ह, ''देखह ! आब हमरा तोरा सभक सहाराक आवश्यकता अछि । आब दिनानुदिन हाथ-पयर सेहो शिथिल भेल जा रहल अछि । आब अपना हाथे शौच करब सेहो कठिनाह बुझा रहल अछि । तों सब एतेक दिन संगे चलबाक लेल बड़ आग्रह करैत छलह, मुदा हमहीं ई जाल-जंजाल छोड़ि क' नहि जाइत छलहुँ । आब हम किछु करबाक जोगरक तँ छी नहि आ ने तोरा सभकेँ नौकरी छोड़िक' एत' रहबाक लेल कहि सकैत छियहु । तखन तँ एकहिटा विकल्प अछि, जे तोरे सभक संगे रही । तेँ तोरा सबकेँ बजौने छियहु ।''

बाबा सबसँ पहिने रमाकान्तसँ पुछलन्हि, ''की हौ रमाकान्त, तोहर की विचार छहु ?''

रमाकान्त बाबाक जेठ नेना छलाह । जेठ संतान पर लोककेँ विशेष ध्यान रहैत छैक आ से बाबाकेँ सेहो छलनि । ओहुना जेठकेँ सभसँ बेसी भार वहन कर' पड़ैत छैक । चाहे ओ स्वेच्छासँ करए वा लाजे-लेहाजे, मुदा रमाकान्त अपना विवशताकेँ देखि काँचे दूध उठाक' पीबि गेलाह । ओना तँ सब बेटाक खान-पान, रहन-सहन पर बराबरिये ध्यान राखल जाइत छलनि, मुदा रमाकान्तक मान-दान कनेक बेसी होइत छलनि । सम्भवतः जेठ बेटा होयबाक कारणे । रमाकान्तकेँ इच्छा होइत छलनि जे बाबाकेँ अपनहि संगे रखितहुँ, मुदा तेहन साँसतमे पड़ल छलाह जे बिनु पुछने किछु बाजि नहि सकैत छलाह । ओ बजलाह, ''बाबूजी ! अपने हमरा सेवाक मौका द' रहल छी । एहिसँ पैघ सौभाग्यक गप्प हमरा लेल की भ' सकैत अछि । ओ पुत्र धन्य अछि, जकरा माँ आ बाबूजीक सेवाक सुअवसर भेटैत छैक । हम तँ कतेक दिनसँ स्वयं अहाँकेँ आग्रह करैत

छलहुँ आ अहाँ जयबाक लेल तैयारे नहि होइत छलहुँ । मुदा एखन तत्काल हमरा संगे किछु विवशता अछि । अहाँ तँ जनैत छी महेशपुरवाली सतत दुखिताहे रहैत छथि । ओ अहाँक सेवा-भाव करबामे असमर्थ छथि आ हमरा आफीसक काजे बेसी काल बाहरहि जाय पड़ैत अछि । एहन स्थितिमे हम अहाँक सेवा नहि क' सकब । तेँ एखन हम लाचार छी ।''

रमाकान्त जखन बाजब शुरू कयलनि तँ महेशपुरवालीक करेज धक-धक कर' लगलनि । बुझा रहल अछि जे बुढ़ा हमरहि कपार पर बथयताह । ई तँ सोझ लोक छथि । गूढ़-कपट तँ छन्हि नहि । गाइयोमे हँ आ महिसोमे हँ । आइ फँसि गेलाह । मुदा रमाकान्तक बुद्धि पर आइ जीवनमे पहिले बेर प्रसन्नता भेलनि आ अपना पतिक पत्नीव्रत पर संतोष सेहो । रमाकान्तकेँ उत्तर देबा काल मनमे एकटा टीस अवश्य उठलनि जे इच्छा रहितहुँ पिताक सेवासँ वंचित रहि गेलाह । मुदा रोज-रोजक किच-किचसँ इएह नीक । कनियाँ बजैत छलथिन्ह, ''सब दिन अहीं करैत रहबैक आ ओ सभ हाथ पर हाथ धयने बैसल रहतैक । जा धरि सभक माथ पर भार नहि पड़तैक, ताधरि केओ किछु नहि करतैक । जँ बैसले भोजन भेटैत रहतैक, तँ लोक किएक काज करत, हाथ-पयर किएक चलाओत ?''

कनियाँ बजैत तँ उचिते छलीह, मुदा रमाकान्तकेँ पितृ-प्रेम छोड़ल नहि जाइत छलनि । मात्र ओ किच-किचसँ बचबाक लेल कात धयने छलाह । तखन बाबा दोसर बेटासँ पुछलथिन ''की हौ शिवाकान्त, तोहर की विचार....''?

शिवाकान्त बजलाह, ''बाबूजी ! ई हमर दुर्भाग्ये थीक जे अवसर भेटलाक बादो ओकर सदुपयोग नहि क' पओलहुँ ।"

"से' की ? तोरा की भेलहु ।'' बाबा पुनः पुछलथिन ।

शिवाकान्त बजलाह, ''एखन हमर बदली राँचीसँ सरायकेला भ' गेल अछि । बच्चा राँचीयेमे पढ़ि रहल अछि, तेँ कनियाँकेँ राँचीयेमे राखब आवश्यक अछि आ अपने हम एसकरहि सरायकेलामे हंडी मांजैत छी । शनि-रवि क' पलखति भेटला उत्तर कहिओ काल राँची अबैत छी । एहना

स्थितिमे अहाँकेँ कत' आ कोना क' राखब, किछु नहि फुराइत अछि ।''

तखन बाबा तेसर बेटाकेँ पुछलनि, "की हौ हरेकान्त, तोहू तँ अपन दुःख-दर्द सुनाबह ।''

हरेकान्त बजलाह, ''बाबूजी ! अहाँ तँ जनैत छी, हम कोना-कोना क' गुजर क' रहल छी । एक कोठलीक डेरामे अपने, कनियाँ आ तीनटा बच्चा सुगरक खोभारी जकाँ रहि रहल छी । दरमाहा ओतेक नहि भेटैत अछि जे पैघ डेरा लेब । एहना स्थितिमे अहाँकेँ कत' राखब ।''

बाबा सभक भाव बुझि गेलाह । तथापि औपचारिकताक निर्वाह लेल चारिमसँ पुछलनि । हालांकि बाबा उमाकान्तक उत्तरसँ अवगते छलाह । पाँचो बेटामे सबसँ छाँटल ओएह छलनि । ओकरा ककरहुसँ कोनो मतलब नहि छलैक । ओ ओतहि जाइत छल जत' किछु फायदाक उमेद बुझाइत छलैक आ जखन अपन बेगरता लगैत छलैक, तखन तँ एहेन भलमानुस देखल नहि ।

''की हौ उमाकान्त, तोहर की विचार ?''

उमाकान्त बजलाह, ''बाबूजी ! अहाँसँ की चोरायल अछि । अहाँ तँ सब किछु जनितहि छी । हम एखन कोन परिस्थितिसँ गुजरि रहल छी । एखन हमर बच्चा सभ छोट अछि । कनियाँ ओकरहि सभकेँ सम्हारयमे अपस्याँत रहैत छथि । अहाँक सेवा-सुश्रूषा-परिचर्या कोना क' करतीह ।''

बाबा बजलाह, ''हमरा तँ अहाँक उत्तर बुझले छल । तथापि सोचलहुँ, कदाचित विचारमे बदलाव आयल हो । मुदा सोचब व्यर्थ भेल । कुकुरक नांगरि कतहु सोझ भेलैक अछि ?''

उमाकान्त बजलाह, ''दोसर तँ हमर दुःख नहि बुझत, मुदा अहाँ तँ पिता थिकहुँ । अहाँ तँ अवश्य हमर दुःख बुझब ।''

बाबा बजलाह, ''हम तँ सभक दुःख बुझैत छी आ बुझैत रहब, मुदा हमर दुःख के बुझत ? हम ककरा कहबैक ? अहूँ सभकेँ बाल-बच्चा अछि आ एक दिन हमरहि जकाँ बूढ़ होयब । तखन बुझबैक,

बुढ़ारीमे कोन दुःख होइत छैक ? जाहिसँ अहाँ सभक मेम साहेब खुश रहथि, सैह काज करू । हमर चिंता जुनि करू । हमरा लेल भगवान छथिन्ह । मुदा एकटा गप्प गेंठ बान्हि लिअ, 'जएह रोपब, सैह काटब' ।''

छोटका बेटा प्रेमकान्त बाबाकेँ अपना संगे चलबाक लेल आग्रह कयलकनि, मुदा बूढ़ा पहिनहिसँ छनगल छलाह । आर दोसर केओ ल' जयबाक लेल तैयारो तँ नहि छलनि । एहिसँ पूर्व बाबा एक मासक लेल प्रेमकान्तक ओहि ठाम गेल छलाह, मुदा आठे दिनमे ओत'सँ पड़यलाह । ओहि ठाम भोजन-भात आ सेवा-सुश्रूषामे कोनो कमी नहि भेलनि, मुदा ओ पुतहु अपना घरवालाकेँ सुनबैत छलथिन्ह, ''बाबूजीकेँ अहीं एकटा बेटा छियैन्ह की ? आर कुल-खूटमे केओ नहि छैन्हि की ? जखन ककरहु मतलबे नहि छैक, तँ अहींकेँ कोन मतलब अछि ? बुझाइत अछि जे बाबूजी सबटा सम्पत्ति अहींकेँ लिखि देताह । परुकां हमरा मायक मन खराब भ' गेलैक आ अहाँकेँ कतेक आग्रह कयने छलहुँ जे हमरा मायकेँ एही ठाम ल' अबिऔक, से तँ अहाँसँ नहिञे भेल । कतेक बहन्ना बनौने रही । जेना बुझायल रहए, हमर माय अहाँक सबटा कमाइ हड़पि लेत आ एकटा जपालकेँ उठा अनलहुँ । भरि दिन तंग करितहि रहैत छथि । कौखन ई लाबह, तँ कौखन ओ । एक भोर जे उठैत छी से ग्यारह बजे रातिमे जा' क' पलखति भेटैत अछि । बिलाड़िओ एहि घरसँ ओहि घर जयबामे दम धरैत अछि आ हमरा सभक हाल तँ ओकरहुसँ बदतर अछि । बेचारे प्रेमकान्त चुपचाप सुनि लैत छलाह । आखिर करताह की ? एक दिस कर्ज तँ दोसर दिस फर्ज । दूध आ माँछ दुनू बाँतर ।

कंटिर बाबाक अयलासँ पुतहुक स्वच्छन्दता आ स्वतंत्रता दुनू पर खतरा बढ़ि गेल छलनि । दुनू प्राणी एक संगे ने कतहुँ घूम' फिर' जा सकैत छलीह आ ने अपना रुचिक वस्त्र पहिरि सकैत छलीह । एक गोटेकेँ सदैव बाबाक ताकुतमे रह' पड़ैत छलनि । बाबा कखन जल पीताह, कखन पैखाना जयताह, कखन लघुशंका जयताह, से ध्यान राख' पड़ैत छलनि । तेँ हुनका सून छोड़ल नहि जा सकैत छलनि । सभक मनमे जुआनीक नव-नव उमंग होइत छैक, नव-नव सपना होइत छैक, संगी-सहेलीसँ

भेंट करबाक उत्कंठा रहैत छैक । मुदा बाबाक रहने सब किछु मनेमे दबल रहि जाइत छलनि । तेँ छोटकी पुतहुक अगुतायब अनुचित नहि छलनि । एहि वयसमे केओ रहैत तँ ओएह करैत । एखन हुनकर खयबा-खेलयबाक दिन छलनि । मुदा बाबाक सेवामे दिन भरि लागल रहैत छलीह । सर-सिनेमा, हाट-बाजार सब छुटि गेल छलनि, मुदा दोसर पुतहु तँ किछु नहि करैत छलनि । बेचारीमे एकेटा अवगुण छलैक, कयला-धयलाक बाद सब किछु बाजि दैत छलैक । ई तँ खोआ-पिआ क' बोकरायबे ने भेल । से बाबाकेँ अनसोहाँत लगैत छलनि । ककरहु संतानक निंदा जँ केओ आन करैत अछि, तँ ओकरा माय-बापकेँ बर्दाश्त नहि होइत छैक । खाहे ओ संतान कतबो नालायक किएक नहि होमए । माय-बाप अपना संतानकेँ कौखन अधलाहो गप्प बाजि दैत अछि, मुदा ओकर अधलाह कखनहुँ नहि सोचैत अछि । ओहि अधलाहो गप्पमे एकटा प्रेरणात्मक सोच छुपल रहैत छैक जकर प्रयोग केवल ओकरा प्रेरित करबाक लेल, कर्त्तव्य बोध करयबाक लेल करैत अछि । तेँ बाबाकेँ पुतहुक मुहेँ बेटा सभक निंदा सुनल नहि जाइत छलनि । ओ बुझैत छलाह जे बेटा सभकेँ कोनो ने कोनो कठिनता होयतनि । मात्र उमाकान्तकेँ छोड़ि हुनका सभ पर पूर्ण भरोसा छलनि । ओ बुझैत छलाह जे शहरमे सभ केओ एके कोठलीमे रहैत अछि । घरक भाड़ा लगैत छैक । शहरमे रहब सभक बूते नहि भ' सकैत छैक । सभटा बेटामे प्रेमकान्तक नौकरीओ सरकारी छलनि आ दरमाहा सेहो सबसँ बेसी छलनि । प्रेमकान्त कोनो पैघ आफीसर छलाह आ डेरा सेहो खूब ऐल-फैल । तीन-चारिटा कोठली आ आगाँमे फुलवाड़ी जाहिमे रंग-बिरही फूलक जखीरा । बाबाकेँ बुझाइत छलनि, जेना गामेमे होथि । प्राकृतिक हवाक संग सभटा वस्तु समय पर हाजिर । तेँ बाबाकेँ एहि ठाम मन लगैत छलनि । मुदा दुनू प्राणीक उकटा-पैंची बाबा बर्दाश्त नहि क' सकलाह आ ओहि ठामसँ बाबा आठे दिनमे भागि पड़यलाह, जखन कि ई विचारि क' गेल छलाह, जे एक मास रहब ।

आइ कंटिर बाबाकेँ बेटीक अभाव अखरि रहल छलन्हि । लोककेँ बुढ़ारीमे जे सुख बेटीसँ होइत छैक, से बेटासँ नहि होइत छैक ।

मुदा आइ-काल्हि तँ लोक तिलक-दहेजक कारणे वा बेटीक विवाहमे फज्झतिक कारणे बेटीक जन्मकेँ अभिशाप बुझैत अछि । गर्भहिमे ओकर सर्वनाश करैत अछि । मुदा कंटिर बाबाक बहिन भानुमती जँ नहि रहितथिन तँ हुनका मायक की दशा होइतनि, कहि नहि सकैत छी । नब्बे वर्षक वयसमे कंटिर बाबाक मायकेँ लकबा मारि देने छलनि जाहिमे बामा अंग सुन्न भ' गेल छलनि । ओहि समयमे दुनू सासु-पुतहुक बीच छत्तीसक सम्बन्ध छलनि । एक-दोसरकेँ फूटली आँखिये नहि सोहाइत छलीह । ओ तँ धन्यवाद दी बेटी भानुमतीकेँ जे राति-दिन एक क' क' मायक सेवा कयलनि । तीन वर्ष धरि बूढ़ी ओही स्थितिमे रहलीह आ भानुमती सासुरक राज-काज छोड़ि मायक सेवामे लागल रहि गेलीह । तीन वर्षक बाद जखन हुनक माय काल-कवलित भ' गेलथिन, तखन सभटा काज सम्पन्न क' भानुमती अपन सासुरक बाट धयलन्हि ।

अपना समाजमे एकटा बिडम्बनाक गप्प अछि । तिलक-दहेज वा अन्य कारणसँ सासुरमे पुतहुकेँ प्रताड़ित कयल जाइत अछि वा जरा देल जाइत अछि । हमर समाज एकरा लेल ओकरा सासु-ससुर वा सासुरक परिवारकेँ पूर्ण दोषी मानैत अछि आ ई गप्पो सर्वथा सत्यो अछि । मुदा पुतहुकेँ एकदम निर्दोष मानब सेहो उचित नहि होयत । किछु ने किछु वा कतहु ने कतहु पुतहुक दोष सेहो रहैत अछि । आइ भानुमती अपना मायक सेवामे सभ किछु बिसरि गेलीह, मुदा भानुमतीक भाउजक किछु कर्त्तव्य नहि छलनि ? की ओ अपन कर्त्तव्यक निर्वाह क' सकलीह ? की भानुमती अपना सासुक संग ओएह व्यवहार करैत होयतीह, जे अपना मायक संग कयलनि अछि ? कदाचित जँ करैत होथि, तँ उत्तम, मुदा एहन विरले देखल जाइत अछि । तेँ एहि बेर बूढ़ा मात्र दस दिनक लेल गेल छलाह । तीन-चारि दिन तँ बड़ सुन्नर बितलनि, मुदा फेर ओएह रामा आ ओएह खटोलबा । लंका काण्ड शुरू भ' गेल आ बाबाकेँ शेष दिन काटब कठिन भ' गेलनि । अनायास हुनका मुँहसँ बहरायल ''कतबहु सोझ करब मुदा कुकुरक नांगरि सोझ नहि होयत''।

●

लति

आइ फेर कतेक दिनक बाद भोलबा पी' क' अयलै आ अरोस-परोस केँ गनगना देलकै । ओकरा आंगन अबितहि ओकर घरबाली मोहनपुरवाली छाती पीटि पीटि क' सौंसे टोलक लोककेँ बजा लेलकै । कहू तँ, कोना दारू पीबि लेलकै ? बेटा लगाक' किरिया खयने छलैक जे आब दारू के हाथ नहि लगाओत । मुदा फेर कोना पीबि लेलकै ? चारू कात लोक सभ ठाढ़ भेल तमाशा देखि रहल छलैक । आ भोलबा सातम आसमान पर चढ़ल अपन रथ हाँकि रहल छल । सुकना माय... हमरा... माँफ...करौ' । हमर... कोनो... कसूर... नहि... छैक...। हम... नहि... जाइत... छलियौक...। मुदा... खखना... हमरा... जबर्दस्ती... घिचि... क... ल... गेलौक । अहा... की... मजा... छैक...। एकरा सोझां तँ... स्वर्गोक... सुख... फिक्का... अछि । सुकना माय... हमरा... छोड़ि... दे... हमरा... तंग... नहि... कर' । लोक सब ओकर उपचार क' रहल छलैक । केओ अंगा निकालि रहल छलैक तँ केओ गमछा भिजा क' पोछि रहल छलैक । केओ ओकरा सम्हारि क' पकड़ने छलैक, तँ केओ मुँह पर पानिक छिच्चा द' रहल छलैक आ मोहनपुरवाली आँचरसँ मुँह पोछि अपन वात्सल्य आ करुणा उझिलि रहल छलैक ।

भोलबा रामपुर गामक एकटा मजदूर आ बहुत विश्वासी लोक

रहए । ओकर भलमनसाहत आ इमानदारी देखि ओकरा मालिक राजाठाकुर चारि बीघा खेत बटाइ कर' लेल देने छलथिन । भोलबा मेहनती छल आ मेहनति क' क' नीक फसिल उपजाबैत रहए । ओ मालिकक प्रति एतेक निष्ठावान रहए जे राति-बिराति किछु नहि बुझैत छल । जखन मालिकक बजाहटि होइत छलैक, भोलबा हाजिर । घरमे मात्र एकटा भोलबाक माय छलैक । राजा ठाकुर सेहो भोलबा पर आँखि मूनि क' विश्वास करैत छलाह । एक बेर भोलबा कोनो दोस्तक काजसँ बाहर गेल । ओहि ठाम ओकरा तीन-चारि दिन लागि गेलैक । एही बीचमे राजा ठाकुरकेँ किछु काज पड़ि गेलनि । ओ भोलबाकेँ समाद पठौलथिन मुदा भोलबा तँ एहि ठाम छलैक नहि । ओ नहि पहुँचल ।

दू गोटेक बीचमे जँ बेसी मेल-जोल होइत छैक, तँ किछु लोककेँ ई खटकैत छैक आ सैह गप्प एहू ठाम भेलैक । रामफलबा जे भोलबाक उन्नति देखि जड़ैत छल, ओकरा मौका भेटि गेलैक । ओ तँ कतेक दिनसँ एही ताकमे लागल छल । ओ राजा ठाकुरसँ बाजल, "मालिक ! भोलबाकेँ आब अहाँ ओहि ठाम अयबा-जयबामे संकोच होइत छैक । ओ बजैत अछि, मालिकसँ बेसी तँ हमरा घरमे अन्न-पानि अछि । हम कथीक बेगारी करबनि ? ने खायक, ने जलखइ, खाली काज पर काज ।"

राजा ठाकुर बजलाह, "आ चारि बीघा खेत जे देने छियैक?"

रामफलबा बाजल, "ओ तँ कहैत अछि जे खेत के के पूछैत छैक ? जत' चाहब, ओतहि भेटि जायत । पयर-हाथ दुरुस्त रहबाक चाही ।''

राजा ठाकुर, "ओकर एतेक ठेसी ?''

रामफलबा बाजल, "सरकार ! हम तँ डर सँ नहि बजैत छलहुँ । ओ तँ बहुत किछु बजैत अछि । रामफलबा राजा ठाकुरक मनमे भोलबाक प्रति जहर घोरि देलक । ओ खेत जे भोलबा जोतै छल, से पहिने रामफलबे जोतैत छल । भोलबाक मेहनति आ निष्ठा देखि राजा ठाकुर ओ खेत रामफलबासँ ल' क' ओकरा देने छलथिन ।

तीन दिनक बाद जखन भोलबा आपस आयल तँ माय कहलकै,

"मालिक ओहि ठामसँ बजाहटि आयल छलौक ।'' भोलबा पयरो-हाथ नहि धोलक आ चोट्टे घुरि गेल । भोलबा जखन राजा ठाकुरक ओहिठाम पहुचल तँ ओ बजलाह, "जो...जो...आब तों बड़ पैघ लोक भ' गेल छें। हमरा सन-सन कतेक गिरहत-मालिक तोरा पाछाँ-पाछाँ घुरैत छथुन ।"

भोलबा बाजल, "मालिक ! हम एहिठाम नहि छलहुँ । बड़ जरूरी काजसँ बाहर गेल छलहुँ । अबितहि पता लागल जे अपने ककरो पठौने छलियैक । सुनितहि भागल-भागल आयल छी ।"

भोलबा बहुत अनुनय-विनय कयलक, मुदा राजा ठाकुर पर ओकर कोनो असरि नहि भेलनि । राजा ठाकुरक गप्पसँ भोलबा खिन्न भ' गेल । ओकर करेज फाटि गेलैक । भोलबा खिन्न मने आपस घर दिस विदा भेल । पाछाँसँ ओकरा कानमे राजा ठाकुरक आवाज आयल, "हमर सभटा खेती-पथारी छोड़ि दीहें । हम दोसरासँ करायब ।"

भोलबाक विवाह मोहनपुर भेलैक । मोहनुपरवाली बड़ सुन्नरि छलैक । रंग तँ पिण्डश्यामे छलैक मुदा मुँहक पानि बड़ दीव छलैक आ आँखि पैघ-पैघ, हरिनोकेँ मात करैत छलैक । ओ भोलबा आ भोलबाक मायक बड़ आदर करैत छलि । भोलबा भोरहि सूर्य उदयसँ पहिने खेत जाइत छल आ सूर्यास्त भेलाक बादे आपस अबैत छल । मोहनपुरवाली ओकरा गमछामे बान्हि क' जलखइ दैत छलैक । एक दिन मोहनपुरवाली भोलबासँ बाजल, "सुनै हइ ?" "की", भोलबा बाजल । "ई तँ अपने काम पर चल जाइ हय, आ हमरा घरमे बैठल-बैठल मन नहि लागैत हय", मोहनपुर वाली कहलकै । "से किएक, घर मे बूढ़ी माय छैक, ओकरासँ गप्प-सप्प करतै, ओकर सेवा करतै । हमरा तँ एतेक पलखति नहि होइत छैक, जे हम सेवा करबै, मुदा ई तँ करतैक आ मायक सेवासँ मेवा मिलतैक," भोलबा बाजल ।

"से तँ करिते छियैक, मुदा कतेकटा पहाड़ सनक दिन होइत छैक । सासु-मायसँ लोक कतेक गप्प करतैक आ अरोस-परोसक लोक हरदम दोसरेक खिधांश करैत रहैत छैक, से हमरा पसिन्न नहि परै हय,"

अन्यमनस्क भावें मोहनपुरवाली बाजलि ।

"तँ की करतै, इहो हमरा साथे काम पर जयतैक की ?" भोलबा दुलारसँ पुछलकै । "धुर जो... हमरा कहैक मतलब ई थोड़े हय," मोहनपुवाली लजाइत बाजलि छलैक । "तँ एकरा कहबाक मतलब की छैक, कनेक फरिछा क' बाजौ ने," भोलबा पुछलकै ।

मोहनपुरवाली कहलकै, "ई तँ भोरे जाइत हइ आ साँझमे अबैत हइ । हम दिन भरि घरमे हाथ पर हाथ धयने बैठल रहैत छियैक । तें सोचैत छलियैक जे..." । "की सोचैत छैक, बाजौ ने," भोलबा प्रेमसँ पुछलकै । "कोनो मवेशी-उवेशी रहितै, तँ ओकर सेवामे दिन कटि जइतै," मोहनपुवाली आस्तेसँ बाजल छलैक । भोलबा मजाक करैत कहलकै, "ओ... से बात छैक ! एकरा मवेशी ल' क' चरे-चर बौआइक मन होइत छैक आ नव-नव छौड़ा आउरसँ मीठ-मीठ गप्प-सप्प करैक मन होइत छैक ।" "धुर जो... ई तँ एगो तेसरे बात बुझलकै । की बिना चरौने आ घर पर खिऔने मवेशी नहि पोसाइत छैक," मोहनपुरवाली बाजलि छलैक ।

भोलबा पुछलकै, "तखन की विचार छैक" ? "एकटा छोट-छीन गाय होइतैक तँ नीक रहितैक," मोहनपुरवाली कहलकै ।

भोलबा हर ल' क' खेत चल गेल, मुदा ओकरा गाय किनबाक धुन सवार भ' गेलैक । आइ ओकरा काजो करबामे मन नहि लगैत छलैक । ओ खखनाक संगे आठ दिन धरि खूब बौआयल, मुदा मन लायक गाय नहि भेटलैक आ जँ भेटितो छलैक, तँ दाम एतेक जे सुनिये क' भोलबाकेँ चकचोन्ही लागि जाइत छलैक । साँझमे जखन भोलबा घुरि क' अबैत छलैक, तँ मोहनपुरवाली ओकरा आगूमे खायक राखि दैत छलैक, आ बियनि हौंकैत पुछैत छलैक, "बड़ फिरिसान भ' गेलैक, कतौ मिललैक की नहि ।" "मिलतै त' ल' क' ने अयबै, कि ओतहि छोड़ि देबैक," भोलबा कहलकै । "हमरहि कारण एतेक फिरीसान भ' गेलैक, ने..." मोहनपुरवाली बियनि हौंकैत बाजलि छलैक । "एहन तँ नहिए ने छैक, जे कतौ राखल छैक आ उठा क' ल' आउ । तखन नीक वस्तु तकबामे समय

लगितहि छैक," भोलबा बजलै । कतेक फिरीसानीक बाद भोलबाकेँ एकटा गाय भेटलैक । ओकर दाम तीन हजार टाका लागल छलैक । भोलबा गाय कीनि क' अनलक आ मोहनपुरवाली गाय देखिक' बड़ प्रसन्न भेलै । सबसँ बेसी गाय केर कद-काठी ओकरा बड़ नीक लगलैक । गाय केर कद-काठी तँ छोटे-छीन लगैक, मुदा रंग उज्जर दप-दप आ दूधगरि खूब । करीब छः सेर, सात सेर दूध होइत छलैक आ सज्जन एतेक जे एकटा बच्चो ओकरा खोलि-बान्हि सकैत छलैक । ओना तँ कतेक गाय एहन होइत अछि जे लोककेँ पयर-हाथ तोड़ि दैत छैक । हमरहि गाममे हरषू बाबू एकटा गाय नेने छलाह । सब दिन ओकर ताक-हेर, सानी-पानी चरबाहे करैत छलनि । एक दिन हुनकर चरबाह कतहु चल गेल रहए । हरषू बाबूकेँ ई गप्प बूझल नहि छलनि, जे गाय मरखाहि अछि । जँ बूझल रहितन्हि तँ फराठी ल' क' जइतथि । मुदा ओ निधोख, गायकेँ भूसा देबाक लेल गेलाह । गाय अनठीया बुझि हरषू बाबूकेँ उठा क' पटकि देलकनि । बेचारेक बामा हाथ टुटि गेलनि आ ओहिमे लागि गेल दस किलोक प्लास्टर । ओहि गाय परसँ हरषू बाबूक मन उचटि गेलनि । ओ चारि हजारक गाय मात्र दू हजारमे बेचि ओहि गायसँ पिण्ड छोड़ौलनि । मोहनपुरवालीकेँ ई गप्प बूझल छलैक आ तेँ ओ भोलबाकेँ कहनहुँ छलैक जे गाय मरखाहि नहि होयबाक चाही । से गाय केर सज्जनता देखि मोहनपुरवाली बड़ हर्षित छलैक । गायक सेवामे मोहनपुरवाली दिन-राति एक क' देलक । घसबाहि सेहो करैत छलैक । भोलबाक आमदनी खूब बढ़ि गेलैक । ओ ओहि आमदनीसँ आर एकटा गाय आ एकटा महींस ल' लेलक । मोहनपुरवालीक मनक गप्प भेलैक । ओकरा खुशीक ओर-छोर नहि रहलैक । भोलबा सेहो जखन खेतसँ आबए तँ एम्हर-ओम्हर नहि जा' क' मोहनपुरवालीक संग पुरैत रहए आ से मोहनपुरवालीकेँ सेहो बड़ नीक लगैत छलैक । भोलबाक लेल मोहनपुरवाली लक्ष्मी सिद्ध भेलैक । ई गप्प भोलबाक माइयो बजैत छलैक । ओएह भोलबा जखन काज पर सँ अबैत छल आ जलखै क' क' पाकड़िक गाछ तर बनल चबूतरा पर चल जाइत छल, तँ दस बजे रातिसँ पहिने नहि घुरैत छल आ सेहो मायक कतेक बजौला पर । मुदा आब तँ ओ पाकड़िक गाछ दिस तकितहुँ नहि अछि ।

ओकर हेरिया-मेरिया सब बजैत छलैक, "अरे ! आब ओ भोलबा नहि ने अछि । ओकर विवाह की भेलैक, ओकरा घरमे एकटा जादूगरनी आबि गेल छैक । जहियासँ मोहनपुरवालीक पयर भोलबाक घरमे पड़लैक अछि, पता नहि, ओकरा पर कोन जादू-टोना क' देने छैक । ओ तँ चटिसारक बाटे बिसरि गेल अछि'' आ जँ केओ एहि मादे भोलबाकेँ पुछैत छलैक, तँ ओकर उत्तर होइत छलैक, "पाकड़िक गाछ तर बैठि क' की मिलतौक, एक दोसराक अदखोइ-बदखोइ, बस । अरे एकटा गाय कीनि ले आ सब प्राणी मिलि क' ओकर सेवा कर, तँ मेवा मिलतौक । पाकड़िक गाछ तर दस बजे राति धरि बेकारक गप्पसँ की भेटतौक ? ककरा मायकेँ ककरा कनियाँसँ झगड़ा भेलैक, के सलाह करौलक, ककर खेनाइ बन्द क' देलकै... एहिसँ की मिलैवला छौ ।" धीरे-धीरे सब भोलबाक बात मान' लगलैक । आब तँ भोलबा ओकरा सभक नेता बनि गेल । जेना लगैत छलैक जे मोहनपुरवाली भोलबाक हाथे गाममे नव क्रान्ति आनि देलकै । किछु दिनक बाद भोलबाक घरमे बच्चाक किलकारी सुनाइ पड़ल छलैक । भोलबाके बेटा भेलैक, जकर नाम राखल गेलैक सुकना । सुकनाक जन्मसँ मोहनपुरवालीक संग भोलबा आ ओकर माय सेहो बड़ खुश छलैक । ओकरा वंशकेँ आगू बढ़ौनिहार जे भेटलैक । घरमे कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक आ अभाव छलैक तँ मात्र एकरहि, सेहो भगवान पूरा क' देलथिन । दू वर्षक बाद मोहनपुरवालीकेँ एकटा बेटी सेहो भेलैक । ओकर नाम भोलबा रानी रखलक । मोहनपुरवाली तँ ओकर नाम किछु आर राख' चाहैत छलैक, मुदा भोलबा जिद्द रोपि देलकैक । तें मोहनपुरवालीकेँ सेहो मान' पड़लैक । भोलबा रानीकेँ बड़ मानैत छलैक । ओ खाद-पानिक लेल बराबरि बाहर जाइत छल आ ओहि ठामसँ रानीक लेल किछु ने किछु अवश्य अनैत छलैक । तें भोलबाक बाहर जयबासँ रानी बड़ खुश होइत छल । एक दिन भोलबा कतहु बाहर जयबाक अछि, से घरमे कहि गेल । मुदा कोनहुँ कारणवश ओ जा नहि सकल । जखन घुरिक' घर आपस आयल, तँ रानी दौड़ि क' ओकरा लग गेलैक । ओ अपन सामग्री आ उपहार नहि पाबि कनैत-कनैत बताहि भ' गेल । तखन भोलबाकेँ स्मरण भेलैक । ओ तँ कहि क' गेल छलै, बाहर जाइत छी । रानीकेँ की पता

छलैक, जे ओ बाहर नहि गेल । भोलबा चट घुरि क' बाहर गेल आ गामहिक दोकानसँ ओकर मनपसन्द चीज आनि क' देलकै । तखन रानी शान्त भेल । रानी दस वर्षक भ' गेल रहए आ सुकना बारह वर्षक । सुकनाक पैघ भेलासँ भोलबाकेँ बड़ आफियत भेल छलैक । ओकर गाम परहक अधिकांश काज-धंधा सुकना क' दैत छलैक जेना कि माल-जाल केर गुड़ा-सानी, गोबर उठायब, थैर बहारब आदि । भोलबा दुनू प्राणीक व्यवहारसँ अरोसी-परोसी सेहो खुश रहैत छलैक । राति-बिराति जँ ककरहु घरमे पाहुन-परक अबैत छलैक, तँ ओ दूध वा दहीक लेल भोलबाक ओहि ठाम दौड़ैत छलैक । मोहनपुरवाली ओकरा खाली हाथ नहि घुरबैत छलैक । किछु ने किछु अवश्य दैत छलैक । ओ सभक तोष राखैत छलैक । गाममे एहन केओ नहि छल जे मोहनपुरवालीसँ उपकृत नहि भेल हो ।

एक दिन भोलबा कोनो काजसँ बाहर गेल रहए । ओत'सँ अयलाक बाद खा-पीबि क' अपना काजमे लागि गेल । ओहि काल रानी स्कूल गेल छलैक । ओकरा भोलबाक अयबाक समाचार भेटि गेल छलैक । ओ अपन उपहार जे भोलबा अनने छलैक, ताकि रहल छल । ओ देखलक जे एकटा डिब्बामे किछु गोली सनक वस्तु राखल छलैक । ओकरा भेलैक जे भोलबा ओकरहि लेल टौफी वा लेमनचूस अनने हेतैक । ओ डिब्बाकेँ खोलि क' तीन-चारिटा गोली खा लेलक । किछु क्षणक बाद रानी बेहोश भ' गेल । ओकरा मुँहसँ गौंज-पोटा चल' लगलैक । रानीक हालति देखि मोहनपुरवाली हैया-दैया कर' लागल । यावत् डाक्टर अयलै, तावत् बहुत देरी भ' गेल छलैक । डाक्टर कोनो उपचार करैत, ताहिसँ पहिनहि रानी दम तोड़ि देलकै । ओकरा समूचा देहमे जहर पसरि गेल छलैक । ओ जाहि गोलीकेँ टौफी बुझि क' खयने छलैक, से चाउर-गहूममे देब'वला कीटनाशक दवाइ छलैक । रानीक मृत्युसँ भोलबाकेँ बड़ पैघ आघात लागल छलैक । ओकर तँ बुझू दुनियें उजड़ि गेलैक । ओकर आँखिक निन्न उड़ि गेलैक । खायब-पीयब सब छोड़ि देलक । ओना तँ रानीक मृत्युसँ मोहनपुरवाली सेहो बड़ पीड़ित छलि, मुदा भोलबाक स्थिति देखि ओ अपन दुःख बिसरि गेल वा मनक भीतर दबा लेलक आ

भोलबाकेँ सांत्वना देब शुरू कयलक ''एना कयलासँ कुछ नहि मिलतै । जेकरा जेबाक छलै, से तँ चल गेल । आब जे बाँचल छैक, ओकरा देखि क' संतोष करौ । सब दिन सभक एक समान नहि रहैत छैक ओ ओकरा लेल माथा पिटलासँ किछु नहि मिलैत छैक ।'' मुदा भोलबा रानीकेँ जतेक बिसरबाक कोशिश करैत छलैक, ओतबहि रानीक मुँह ओकरा आँखिक सोझाँ नाचि उठैत छलैक । कोना-कोनो वस्तुक लेल रानी रूसि रहैत छलैक आ भोलबा कोना क' ओकरा मनाबैत रहए । बिना भोलबाक मनौने ओ मानितहु नहि छलैक । दिन-राति भोलबा ओकरे बारेमे सोचैत रहैत छलैक । सोचैत-सोचैत ओ परेशान भ' जाइत छल ।

अंततः एक दिन अनायास ओकर पयर कलाली दिस बढ़ि गेलैक आ भोलबा दारू पीबि क' रानीक दुःख बिसरबाक कोशिश कर' लागल । जखन-जखन ओकर मन रानीक दुःखसँ व्यग्र भ' उठैत छलैक । ओ दारू पीबि क' कनेक कालक लेल सब किछु बिसरि जाइत छल । दारू पीलाक बाद ओकर पयर स्थिर नहि रहैत छलैक आ ने दिमाग काबूमे । ओ लड़खड़ाइत आ अन्ट-शन्ट बजैत घर अबैत छल । गामक लोक सभ सेहो ओकरा दुःखसँ द्रवित छलैक । ओ सब ओकर लाचारी बुझि रहल छलैक । ओ सभ ओकरा गप्प पर ध्यान नहि दैत छलैक, मुदा अनठीया लोककेँ ओकरा बारेमे पता नहि छलैक । रातिक दस बजैत छलैक । एक तँ अन्हरिया, दोसर घटाटोप मेघ लागल । हाथकेँ हाथ नहि सुझैत छलैक । भोलबा कलालीसँ दारू पीबि क' आबि रहल छल आ धारा प्रवाह गारि सेहो पढ़ि रहल छल । बाटमे एकटा आन गामक लोक भेटि गेलैक । ओ एकरा विषयमे किछु नहि बुझैत छलैक । ओ भोलबाकेँ टोकि देलकै कि भोलबा ओकरा पर बरसि पड़ल । दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ी भ' गेलैक । ओ बटोही ओकरा जोरसँ ठेलि देलकै । भोलबा अपनाकेँ सम्हारि नहि सकल आ धराम द' खसि पड़ल, आ ओकर माथा कोनो चीजसँ टकरा गेलैक । ओकर माथा फूटि गेलैक जाहिसँ शोणित बहि रहल छलैक । शोणितसँ ओकरा देहक अंगा पूरा भीजि गेल छलैक । ओकर स्थिति देखि ओ बटोही ओत'सँ भागि पड़ायल । मोहनपुरवाली छाती पीटि-पीटि क'

अनघोल क' रहल छलैक। ओना तँ ओकर आदतिसँ सब केओ परिचित छल, मुदा मोहनपुरवालीक चिचियायब सभकेँ दौड़बाक लेल विवश क' देलकै। दवाइ-बिरो भेलैक आ मोहनपुरवाली ओकरा सुकना लगा क' किरिया देने छलैक, जे ओ आइसँ दारूकेँ हाथ नहि लगाओत।

भोलबा दारू पियब छोड़ि देने छलैक। करीब दू वर्षक बाद आइ फेर खखनाक उसकेला पर पीबि नेने छलैक। भोलबा मालिकक ओहि ठामसँ काज क' क' आबि रहल छलैक। बाटमे ओकरा खखना भेटि गेलैक। "की भोलू भाइ, आइ-काल्हि हमरा सबकेँ बिसरि गेल छह की?" खखना बाजल। "नहि, नहि, बिसरबह किएक," भोलबा कहलकै। खखना बाजल, "हमरा तँ सैह बुझाइत अछि।"

भोलबा पुछलकै, "से कोना ?"

खखना बाजल, "वर्षो बीति गेल, हमरा सबकेँ एक संगे बैसला। तोरा संगे बैसि क' जे आनन्द अबैत छल, से तोरा बिना कत' पाबी।"

भोलबा बाजल, "खखन भाइ ! मन तँ कौखन क' हमरहु होइत अछि। मुदा सुकनाक सप्पत देने अछि मोहनपुरवाली। हम सब किछु क' सकैत छी, मुदा मोहनपुरवालीक देल सप्पतकेँ नहि तोड़ि सकैत छी। ओकर सप्पत तोड़बाक मतलब भेलैक, ओकर विश्वास तोड़ब। से हमरा बुते नहि भ' सकैत अछि। ओ हमरा घरक लक्ष्मी थीक आ सप्पतो तँ सुकनेक लगा क' देने अछि। आब तँ ओएह एक मात्र सहारा अछि।

खखनाकेँ भोलबा संगे पीबामे सबसँ बेसी लाभ ई छलैक जे भोलबा ओकरा पाइ नहि लाग' दैत छलैक। खखनाकेँ एतेक आमदनी नहि छलैक जे बरोबरि अपना पाइसँ पीयत। ओ नित्य ककरहु ने ककरहु फिराकेमे रहैत छल। आइ ओकरा केओ मुल्ला नहि भेटल छलैक। तें ओ भोलबाक खुशामद क' रहल छलैक। ओ बुझैत छलैक जे एक दिन पीबि लेलासँ पुनः भोलबाकेँ लति लागि जयतैक।

खखना खेखनि क' बाजल, "सब दिन तँ नहि, मुदा कखनहुँ कालमे की हर्ज छैक ? एकाध दिनमे थोड़हि आदत भ' जयतौक।"

भोलबा बाजल, "नहि...नहि... हमरा मोहनपुरवाली जीब' नहि देत। हम कोना ओकरा सोझाँ ठाढ़ होयब। कोना क' ओकरा आँखिसँ आँखि मिलायब।" "भोलू भाइ ! एतेक कतौ लोक जनी-जातिसँ डेराइत अछि। जेना बुझाइत अछि, तों कनियाँक गुलाम छह," खखना बाजल। भोलबा कहलकै, "खखना ! तों ई सभ नहि बुझबें। हम मोहनपुरवालीसँ थोड़हि डेराइत छी ? हम तँ डेराइत छी अपने आपसँ। ओ तँ हमरहि बाल-बच्चाक लेल ने क' रहल अछि आ हम ओकरा सप्पतकेँ कोना टारि देबैक। सप्पतो तँ बाले-बच्चाक लगा क' देने अछि। हमरा छोड़ि दे... खखना... एतेक जिद्द नहि कर। हम एकरा बिसरि रहल छी। हमरा आब ई सब मोन नहि पार।"

खखना बाजल, "जाह, जाह, हम बुझि गेलहुँ, तों केहन पुरुष छह। जनी-जातिक डरे सुटकल रहैत छह। अरे, पुरुष छह, तँ पुरुष बनह, नहि तँ जाह, मोहनपुरवालीक आँचरमे नुका रहह।"

भोलबाकेँ लगलैक जे केओ ओकरा पुरुषत्वकेँ ललकारि रहल छैक। ओकरा खखनाक संग जयबाक इच्छा एकदम नहि छलैक, मुदा खखनाक गप्प ओकरा अंतःकरणमे बाण जकाँ गड़ि गेलैक। ओ बिसरि गेल मोहनपुरवालीक देल सप्पतकेँ। ओ बिसरि गेल सुकनाक सुधपना। ओकरा दिमागमे मात्र खखनाक गप्प गड़ि रहल छलैक। ओकर डेग स्वतः खखनाक संगे आगू बढ़ि गेलैक। ओकर लति ओकरा घीचि क' ल' गेलैक जे एखनहु धरि छूटल नहि छलैक।

●

कविक जिनगी

कविक जिनगी ठीक ओहि डिबिया सन होइत अछि जे दोसरकेँ तँ प्रकाशित करैत अछि, मुदा स्वयं ओकरा चारू कात अन्हारे रहैत छैक। तें लोक कहैत अछि "चिराग तले अंधेरा" । एकरा दोसर भावसँ इहो कहि सकैत छी, जे अनपढ़ समाजकेँ, चेतनाहीन समाजकेँ, चेतना जगाबय लेल हजार-दू हजार गोटेक बीच एकटा कवि भ' जाइत छथि । ओ सम्पूर्ण समाजकेँ अपन प्रखर प्रतिभासँ प्रकाशित करैत छथि । मुदा कवि मनुक्ख होइतहुँ मनुक्ख नहि होइत छथि । मनुक्खक परिभाषा जे आजुक युगमे अछि, कवि ओकर उनटा होइत छथि ।

आजुक युगमे मनुक्ख ओ अछि जे हृदयहीन आ विवेकहीन हो, जे अमानवीय काज करैत हो, जे दोसराक अर्जल धन लेबामे निपुण हो, जे दोसराक आगाँक थारी उड़यबामे दक्ष हो, जकर सोच अपनहि परिवार वा बाल-बच्चा धरि सीमित हो, जे केवल अपनाकेँ मनुक्ख आ दोसरकेँ कीड़ा-मकोड़ा बुझैत हो, जकरा लग टाका आ दुनियाँक सभटा भौतिक सुख उपलबध हो, जे धरती पर पयर नहि रखैत हो । आ कवि... कवि तँ सहृदय, विवेकी, मानवताक रक्षक, समाजक शुभचिन्तक, निर्धन, दुर्बल, पयरमे टूटल चप्पलक उपयोग कयनिहार होइत छथि । ओहि टूटल चप्पलक काँटी गरैत तँ पयरमे अछि, मुदा घायल हृदयकेँ करैत अछि । ताहूसँ आहत भ' कवि कविताक सृजन करैत छथि । ओहि कविताकेँ पढ़ला-सुनलासँ सामंतशाहीक प्रवृत्ति आ मजबूर, लाचार जनमानसक टीस, दुःख-दर्द स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि । अपन रचनाक प्रकाशसँ दुनियाँकेँ प्रकाशित कयनिहार कवि मनुक्ख कोना भ' सकैत छथि ? जे अपना बाल-बच्चाक दुनू साँझक भोजन, देहक कपड़ा-लत्ता नहि जुटा पबैत हो, जकरा कपारमे भौतिक सुख नहि लिखल हो, ओ व्यक्ति मनुक्ख कोना भ' सकैत अछि ? कवि अपन सुखक त्याग करैत छथि, अपन सुखक बलिदान दैत छथि, अन्यायक विरुद्ध आवाज बुलंद क' जनमानसकेँ जाग्रत करैत छथि । भ' सकैत अछि, हुनक आवाज सुनि केओ वीर पुरुष मानवताक रक्षार्थ तरुआरि उठा लेथि । कविक पुकारसँ, हुनक कलमक धारसँ पैघसँ पैघ साम्राज्य धराशायी भ' गेल । कविक काज अछि, अपन कविताक माध्यमसँ समाजकेँ उचित दिशा-दशा प्रदान करब, ओकरा अपन कर्त्तव्यक बोध करायब, ओकरा अपन अधिकार पयबाक लेल उद्वेलित करब । इतिहासकारक अनुसार कविवर चन्दवरदायी महाराज पृथ्वीराज चौहानक मित्रक संग-संग हुनक राष्ट्रकवि सेहो छलाह । ओ मोहम्मद गोरीक दरबारमे अपन कविताक माध्यमसँ सुल्तानक बैसबाक स्थानक दूरीक नाप द' देलनि । यथा, चार बांस चौबीस गज... । महाराज पृथ्वीराज चौहान नेत्रहीन बना देल गेल छलाह । हुनकर आँखि सुल्तान निकलबा लेने रहए । ओ शब्दबेधी बाण चलयबामे माहिर छलाह । कविवर चन्द्रवरदायीक इशारा केवल महाराजेटा बुझलनि आ दृष्टिहीन होइतहुँ अपना धनुष-बाणसँ सुल्तानक गरदनि ओकरा धड़सँ अलग क' देलनि । एहन चमत्कार केओ कविये करा सकैत अछि ।

कविकेँ "बेचारा" सेहो कहल गेल अछि । ओना "बेचारा"क बहुत अर्थ होइत अछि, मुदा हम ओहि झंझटमे नहि पड़' चाहैत छी । हम साधारण अर्थ मानि क' चलि रहल छी । "बेचारा" अर्थात् जकरा कोनो चारा नहि हो वा जे बिना चाराक हो । कविक लेल ई दुनू लागू होइत अछि । कविकेँ चारा किंवा भोजनक अभाव रहैत छनि । जकरा भोजनक अभाव रहैत छैक, पेट खाली रहैत छैक, ओकरहि हृदयसँ दर्द बहरयतैक

ने ? ओहि पेटक ज्वालामे ओ शोषकक खिलाफ अपन जे वेदना व्यक्त करैत अछि, सएह तँ कविता थीक । एकरा अलावे ओ तँ किछु कइओ नहि सकैत अछि ।

हमर एकटा मित्र छथि । ओना मित्र तँ कतेको छथि, मुदा ई मित्र कवि सेहो छथि आ हिनकर नाम छनि "मनसुख लाल" । मनसुख केर मतलब भेल जकर मोन सुखी हो वा सुखायल हो दुनू । मनसुख लालक मोन सुखी छलनि, किएक तँ ओ संतोषी छलाह । हुनका संतोष छलनि । मनसुख लाल एकटा प्राइवेट स्कूलमे शिक्षक छलाह । प्राइवेट स्कूलमे एकटा शिक्षकके̐ कतेक दरमाहा भेटैत छैक, से तँ अपनहुँ सभ जनितहि होयब । ऊपरसँ बाल-बच्चा आधा दर्जन । एकटा पुत्र आ पाँचटा कन्या । से मनसुख लाल कहुना क' गुजर करैत छलाह । एकटा बच्चाक नाम लिखबैत छलाह, तँ दोसराक कटि जाइत छलनि । दोसरक जोगाड़ कयलनि तँ तेसराक ओएह कहानी । अपन खर्च पूरा करबाक लेल किछु ट्यूशन सेहो करैत छलाह, मुदा कविता आ कवि सम्मेलनक स'खमे टूयूशन पर जा नहि पबैत छलाह आ ओ छुटि जाइत छलनि । अपन देहमे सभ दिन चिप्पी लागल कुर्ता-पायजामा आ पयरमे टायरक टूटल चप्पल, जकर अगिला भाग कुकुर जकाँ मुँह बौने हुनक दीनताक परिचय दैत रहैत छलनि । तथापि कहिओ मनसुख लालक मुँह मलिन नहि देखलियनि । ओ सरलतापूर्वक कवि सम्मेलनमे मंच संचालन करैत रहलाह । हमरा सभक बीच एकटा आर कवि छलाह । हुनकर नाम लेब हम उचित नहि बुझैत छी । कारण अहाँ अपनहि स्वत: बुझि जायब । हुनका कविता पाठमे सबसँ बेसी थोपड़ी पड़ैत छलनि, मुदा आइ धरि केओ गोटे हुनकर कविता बुझि नहि पओलक । ओ कत'सँ शुरू कयलनि, आ कत' जा' क' अन्त, सम्भवत: ओ अपनहु नहि बुझैत छलाह । मुदा दर्शक दीर्घामे बैसल कविगण डरे थोपड़ी पीटि-पीटि क' हुनका उत्साहित करैत रहैत छलाह । स्वयं मंच संचालक भाइ मनसुख लाल सेहो हुनकर बड़ाइक पुल बन्हबामे पाछू नहि रहैत छलाह । जखन ओ कवि महोदय माइक पकड़ैत छलाह, तँ ई कहब कठिन होइत जे सम्मेलन कतेक काल धरि चलत । मुदा हुनक

कविता खतम होइतहि घोषणा होइत छल जे आब मात्र दू वा चारि कवि शेष छथि । दस मिनटमे ई सम्मेलन विराम पाओत । अपने लोकनि एहि आपदाके̐ धैर्यपूर्वक सहन करी । ओहि कविक विरोध केओ एहि लेल नहि करैत छलनि किएक तँ ओ धन आ बल दुनूसँ सम्पन्न छलाह । अहाँ स्वयं अनुमान लगा सकैत छी जे, जे केओ धन आ बल दुनूसँ पूर्ण होयताह, हुनका कवितामे कतेक दर्द होयतनि । जे स्वयं बाँझ अछि, ओ प्रसव वेदनाक अनुभव कोना क' सकैत अछि ? मुदा हुनकामे एकटा विशेष गुण छलनि । अधिकांश कवि सम्मेलन हुनकहि चंदा पर चलैत छल । मंच संचालक मनसुख लाल हुनका केवल तिथि आ स्थानक सूचना दैत छलाह । बस बाद बाँकी सब व्यवस्था हुनकहि । एहना स्थितिमे कवि बंधु सभ जँ हुनका सहैत छलाह, तँ कोनो अनुचित नहि करैत छलाह । "सर्व पापहरौ कंचन:" । मनसुख लालक नामेटा मनसुख लाल छलनि । देखबामे कारी खट-खट, मुदा आवाजमे जादू भरल, जेना कोइली कुहुकैत हो । दस-दस हजार बैसल दर्शक-दीर्घाके̐ मनसुख लाल अपना आवाजक जादूसँ सम्मोहित क' लैत छलाह । हुनक सम्बोधन शुरू होइतहि चारू कात ठहाका गुञ्जए लगैत छल । मनसुख लाल हास्य-व्यंग्यक वर्षासँ दर्शक-श्रोताके̐ सराबोर क' दैत छलाह । मनसुख लालक कनियाँ छलथिन्ह सुशीला । जेहने नाम तेहने स्वभाव सेहो । एतेक तकलीफ होइतहुँ कहिओ हुनक मन मलिन नहि देखल । देखबा-सुनबामे अति सुन्नर । गोर देह, पातर काँति, चंचल प्रवृत्ति आ मनसुख लालक संग अगाध स्नेह । दुनू प्राणीके̐ एक संग देखलासँ केओ कहि सकैत छलैक, "छुछुन्दरि माथ..." । मुदा दुनू गोटेक बीच सामंजस्य बड़ सुन्नर । एक दोसराक पूरक । हम सभ जहिया कहिओ हुनका ओहि ठाम जाइत छलहुँ, तँ सुशीला चट द' आगाँमे एक प्लेट दालमोट-बिस्कुट आ एक गिलास जल राखि दैत छलीह । हुनक स्वागत-सत्कार देखि हम सब गद्गद् भ' जाइत छलहुँ । हुनक स्थिति देखि हम सभ कोनो ने कोनो बहन्ना बना क' दालमोट-बिस्कुट नहि खाइत छलहुँ । हँ, जल पीबि हुनकर खूब गुणगान करैत छलहुँ । ओहो हँसैत-हँसैत बाजि दैत छलीह, "गरीबक ओहि ठाम किएक खायब ?" हमरा ओहि ठामक कोनो वस्तु अहाँ लोकनिक खयबा जोग थोड़हि होयत

आ ई कहि ओ हमरा सभक करेज पर हथौड़ा मारि दैत छलीह । अभावग्रस्त रहितहुँ जे सुख-शान्ति, स्वाभिमान मनसुख लालक घरमे देखैत छलहुँ, हमरा सभक ओहिठाम सभ किछु रहितहुँ ओकर सर्वथा अभाव छल । ओ दुनू प्राणी तँ जे छथि से छथिये, बालो-बच्चा कोनो कम नहि । सब छलनि नहला पर दहला । ओहो सभ ककरहुँसँ किछु नहि लैत । जखन कि हमरा सभक बच्चा जतबहि खाइत अछि, ओतबहि खें...खें... करैत अछि । जे केओ मित्र डेरा पर खाली हाथ अओताह, हुनका बच्चा सभ पसिन्न नहि करत । आ जे किछु ल' क' अओताह, से बड़ नीक । हुनका सभक विषयमे बेर-बेर पुछताह, "पापा फलां अंकल बहुत दिनसँ नहि आबि रहल छथि । कतहु बदली भ' गेलनि की ?''

एक दिन हम मनसुख लालक ओहि ठाम गेलहुँ । संयोगसँ मनसुख लाल कतहु निकलि गेल रहथि । हम सोझे आंगन चल गेलहुँ। भाभीजीसँ नमस्कार-पाती भेल । हुनका कोड़ामे हुनक छोटकी बेटी छलनि। ओकर वयस करीब छओ वर्षक छलैक, मुदा छोट संतान होयबाक कारणे ओ दुलारसँ बेसी काल मायक कोड़ेमे रहैत छलि । ओकर नाम छलैक वीणा । हम पुछलियैक, "वीणा ! अहाँकेँ कोन खेलौना सभसँ नीक लगैत अछि ?" ओ बाजलि, "हमर उमेर आब खेलौनासँ खेलयबाक नहि अछि ।" "अहाँक उमेर आब कथीसँ खेलयबाक अछि ?" हम पुछलियैक । ओ बाजलि, "हमरा घरमे सब केओ किताब-कापीसँ खेलाइत अछि । तेँ हमहूँ आब ओकरहि संग खेलब ।"

हम पुछलियैक, "अहाँ कोन किताबसँ खेलब ? की अहाँ लग कोनो किताब अछि ?"

वीणा बाजलि, "हँ, किएक नहि रहत, देखबैत छी ।" आ ओ मायक कोड़ासँ ससरि क' तुरंत कोठलीमे चल गेल । वीणा जखन कोठलीसँ बहार भेल, तँ ओकरा हाथमे एकटा मनोहर पोथी छलैक जकर सब पन्ना पर सनकिरबा अपन छाप देने छलैक आ ओकर पन्ना सब सेहो एक दोसरसँ फराक भ' क' रहबाक लेल विवश छलैक । हमरा ओ किताब देखि क' हँसी लागल । मुदा हम अपन हँसीकेँ दबौलहुँ आ पुन:

वीणासँ पुछलहुँ, "हम अहाँकेँ दोसर पोथी आनि क' दिअ' ।" ओ बाजलि, "नहि हम अहाँक आनल किछु नहि लेब । माँ-पापाजी कहैत छथि जे दोसराक देल सामान विष्ठाक समान होइत अछि । अपना संग जे किछु अछि, लोकके ओहीसँ अपन काज चलयबाक चाही । जे भूखल रहत, ओएह ने दोसराक भूख बूझत ।" वीणाक उत्तरसँ भाभीजी तँ हँसि देलनि, मुदा हम गम्भीरतासँ ओहि पर विचार कर' लगलहुँ । जेहन बीया रहतैक, तेहने ने गाछ होयतैक । काश ! हमरा देशक सब परिवार मनसुख लालक परिवार सन होइत । वीणाक उत्तर सुनलाक बाद हमरा दोसर बच्चासँ किछु पुछबाक साहस नहि भेल । अभावग्रस्त रहितहुँ जखन छओ वर्षक नेनाक ई सोच छैक, तँ दोसर जे ओकरासँ पैघ अछि, ओ तँ आर किछु सोचि सकैत अछि ।

एक बेरुक घटना किछु एहि प्रकारक अछि-

मनसुख लालकेँ शहरक अधिकांश लोक जनैत छलनि । संगहि इहो बूझैत छलनि जे गरीब होइतहुँ स्वाभिमानी लोक छथि । हुनक बच्चाक नाम स्कूलमे मास-मास दिन कटल रहि जाइत छलनि, मुदा ओ ककरो फीस माफ करबाक आग्रह नहि करैत छलाह । जखन शिक्षककेँ कोनो सूत्रसँ पता लगैत छलनि, जे ई बच्चा मनसुख लालक थीक, तँ ओ ओकर फीस माफ क' दैत छलथिन । हुनक बच्चा सब अपना संगीसँ किताब-कापी माँगि क' पढ़ि लैत छल, मुदा ककरोसँ उधार नहि लैत छल ।

एक दिन जिलाधिकारी महोदय स्कूलमे कोनो चैरिटेबुल संस्था द्वारा प्रदत्त किताब गरीब बच्चा सभक बीच बाँटि रहल छलाह । ओहि सूचीमे हेडमास्टर साहेब सावित्रीक नाम सेहो रखने छलाह । सावित्री मनसुख लालक ज्येष्ठ पुत्री छलीह । ओ वर्गमे प्रथम अबैत छलीह । ओ दशम वर्गक छात्रा छलीह । जखन हुनका किताब लेबाक लेल बजाओल गेलनि तँ ओ मंच पर गेलीह आ हेडमास्टर साहेबकेँ पुछलथिन, "श्रीमान् ! ई पुस्तक बँटबाक आधार की अछि ?"

हेडमास्टर साहेब बजलाह, "जे केओ गोटे गरीबी रेखासँ नीचाँ छथि, हुनका बच्चाकेँ ई पुस्तक देल जा रहल छनि ।"

सावित्री पुनः पुछलकनि, "की एहि सूचीमे कामिनीक नाम छन्हि ?"

हेडमास्टर साहेब, "नहि, कामिनीक नाम तँ नहि छन्हि ।"

सावित्री, "एहि उपहारक असली हकदार कामिनी छथि, हम नहि । हम गरीब अवश्य छी मुदा गरीबी रेखासँ नीचाँ नहि छी । हमर पिता प्राइवेट स्कूलमे शिक्षक छथि आ कामिनीक पिता रिक्सा चला क' अपन आ अपना परिवारक भरण-पोषण करैत छथि । ओ अपना बेटीकेँ पढ़यबाक दुःसाहस कयने छथि । एहि देशक इएह तँ बिडम्बना अछि । दोसराक हिस्साक सामग्री दोसर खा जाइत अछि । आइ सरकार किरासन तेल पर सब्सीडी दैत अछि मुदा कएटा गरीबकेँ एगारह रूपये लीटर किरासन तेल भेटैत छैक । सबटा सबसीडी अधिकारी आ डीलर बाँटि क' खा जाइत अछि आ गरीबक हिस्सामे घुरा-फिरा क' ओएह पैंतीस रूपये लीटर पड़ैत अछि । धड़ल्लेसँ ओकर कालाबाजारी होइत छैक । दुःखक गप्प ई जे बंगालक साम्यवादी सरकार जे अपनाकेँ गरीबक, सर्वहाराक सरकार कहैत अछि, सभ किछु जनितो एकर विरोध नहि करैत अछि । जँ सब केओ अपना-अपना हिस्सा पर संतोष करथि तँ सब फसाद एक क्षणमे खतम भ' जायत।''

''आइ हमरा समाजमे भ्रष्टाचार आ घुसखोरी माथ चढ़ि नाचि रहल अछि । एकरा लेल हमहूँ सब ओतबे दोषी छी, जतेक घूस लेनिहार । कारण हमरा सभक धैर्यक सीमा खतम भ' गेल अछि । हम स्वयं चाहैत छी जे सबसँ पहिने हमर कार्य हो । एकरे फायदा ओ घुसखोर उठबैत अछि आ हम सभ परोक्ष रूपेँ ओकर मदति करैत छियैक । ओकर मोन बढ़ैत छैक आ किछु दिनक बाद एकरा ओ अपन अधिकारे बुझैत अछि । अपने नित्य समाचारमे पढ़ैत होयब 'निगरानी विभागक छापा, घूस लैत गिरफ्तार ।' अहाँ सरकार आ निगरानी विभागक कार्यसँ प्रसनन भ' गेलहुँ, मुदा काल्हि ओहि व्यक्तिसँ घूस ल' क' ओकरा छोड़ि देल गेल से तँ केओ नहि देखलक । सरकार केवल जनताक ध्यान बँटबाक लेल ई सब क' रहल अछि । एहिसँ ककरो लाभ नहि भ' सकैत अछि । ने देशक आ ने जनताक । ओ घूसखोर आब आर छुटि क' घूस लेत । यावत् जनता

जागरूक नहि होयत, ओ अपन कर्त्तव्य आ अधिकार नहि बूझत, ताधरि कोनो सरकार किछु नहि क' सकैत छैक । हमरा बुझने सरकार जे लुटलक आ जे लुटायल दुनूक बीच बिचौलियाक काज क' रहल अछि । आखिर सरकार कोनो मशीन तँ अछि नहि । ओ तँ जनतेक द्वारा संचालित होइत अछि । तेँ जनतामे बदलाओ आनब आवश्यक अछि ।''

जिलापदाधिकारी, "की हम अहाँक पिताजीक नाम जानि सकैत छी ?"

सावित्री "अवश्य श्रीमान् । हमर पिताजी छथि कविवर मनसुख लाल । सावित्रीक एहि व्याख्यानसँ सभागारमे जतेक लोक छलाह हुनका नजरिमे मनसुख लालक इज्जति आर बढ़ि गेलनि । जिलाधिकारी सेहो मनसुख लालकेँ नीक जकाँ जनैत छलाह, किएक तँ पन्द्रह अगस्त आ छब्बीस जनवरीक कार्यक्रमक शुभारंभ मनसुखेलालक मंच-संचालनसँ होइत छलैक । ओ ई जानि क' प्रसन्न भेलाह जे सावित्री मनसुख लालक बेटी थिकीह । तेँ तँ एहि तरहक व्याख्यान देलनि । मनसुख लाल आर जे करथि मुदा अपन घर जरूर नीक बनौने छथि । हुनकर बेटी जखन एखनहिसँ सर्वहाराक सिद्धान्त पर चलैत अछि, तँ पता नहि आगू की करतीह । जिलाधिकारी बजलाह, "हम अहाँक सोचक स्वागत करैत छी । जँ अहाँ सनक बेटी दूइयो-चारिटा हमरा समाजमे आबि जायत तँ हमर समाज बदलि जायत, दहेज रूपी दानवक नाश भ' सकत, पुत्रवधूक जरायब बन्न भ' जायत । हम चाहैत छी जे अहाँकेँ एहि अवसर पर एतेक सुन्दर आ ओजपूर्ण व्याख्यानक लेल पुरस्कृत करी ।"

सावित्री, "पुरस्कृत तँ हम भ' गेलहुँ, तखने जखन हमरा एतेक बजबाक अवसर देल गेल । दोसर गप्प पुरस्कार हम तखने ग्रहण क' सकैत छी, जखन की ओ हमरा मोन मोताबिक हो । ओना तँ हमरा पिताक हिदायत बुझू वा शिक्षा । हम सब भाइ-बहिन ककरोसँ किछु अकारण नहि ल' सकैत छी । तखन अहूँ तँ पिते तुल्य छी । अहाँकेँ ठेस पहुँचाबी से ने हमर कर्त्तव्य अछि आ ने उद्देश्य । की हम जे माँगब अहाँ द' सकैत छी ?''

जिलाधिकारी कनेक काल तँ सोचमे पड़ि गेलाह, जे ई की माँगि सकैत छथि । फेर सोचलनि ठीक छै, जँ द' सकब तँ द' सकब नहि तँ नेता जकाँ आश्वासन द' क' चलि देब । ओ बजलाह, "अहाँ केँ की चाही ?"

सावित्री बज़लीह, "पहिलुक गप्प ई जे कामिनीक स्कूल फीस माफ क' दिऔन्ह आ दोसर अहाँ सब हमरा हृदयसँ आशीर्वाद दिअ' जे हम अपना उद्देश्यमे सफल होइ जाहिसँ हमरा माँ-पिताजीक नाम हमरा स्कूलक नाम आ हमरा शहरक नाम उज्ज्वल भ' सकए । सावित्रीक उत्तर सँ सभक आँखि छलछला उठल आ सभागारमे बड़ी काल धरि थोपड़ीक गड़गड़ाहटि होइत रहल । जिलाधिकारी सावित्रीकेँ अपना हृदयसँ लगा लेलनि ।

●

उद्यापन

सीमा दाइ बाल विधवा छलीह । पिताक एक मात्र पुत्री । पिताक नाम छलनि विश्वम्भरजी । विश्वम्भरजी सम्पन्न लोक छलाह । कोनो वस्तुक अभाव नहि । समाजमे नीक हैसियत । कतेक कबुला-पातीक बाद एकटा बेटी भेलनि सीमा दाइ । सीमा दाइ नामेक सीमा छलीह । ओ सभटा सीमाकेँ तोड़ि दैत छलीह । बाजबमे कोनो धरी-धोखा नहि । जे बजती से कटु सत्य आ ककरहु मुँहे पर ठाँहि-पठाँहि । हुनका मुँह पर लगाम नहि । एकर इहो कारण छलैक जे हुनकर पालन-पोषण बड़ दुलार-मलारसँ भेल छलनि । विश्वम्भरजी दू भाइ छलाह । विश्वम्भर आ राजेश्वर । राजेश्वरकेँ सातटा बेटा छलनि । ओहो सब सीमाकेँ बड़ मानैत छलाह । सीमाकेँ कहिओ बुझबामे नहि अयलनि जे ओ सब भाइ-बहिन सहोदर नहि छथि । धीरे-धीरे सीमा बारह वसन्त पार क' गेलीह । विश्वम्भरजीकेँ हुनक विवाहक चिन्ता होमए लगलनि । कतेक प्रयासक बाद विश्वम्भरजी सफल भेलाह आ सीमाक विवाह दौलतपुरक यशवंतजीक पुत्र बलवंतसँ भेल । विवाह खूब धूम-धामसँ भेल । सब केओ खूब प्रसन्न छल, मुदा ई प्रसन्नता बेसी दिन धरि नहि रहल । विवाहक किछुए दिनक बाद बलवंतक मृत्यु कार दुर्घटनामे भ' गेलनि । सीमा विधवा भ' गेलीह । ओ तँ एखन धरि विवाहक किछु मतलबो नहि बुझने छलीह, मुदा होनीकेँ के टारि

सकैत अछि ? सीमा सासुरसँ नैहर आबि गेलीह । ओ सासु-ससुरक व्यवहारसँ प्रसन्न नहि छलीह । ओ एकरा प्रतारणा बुझैत छलीह । प्रतारणाक मतलब विधवाक रहन-सहन, बाजब-भूकब, कतहु अयबा-जयबा पर अंकुश रहब । मुदा सीमा तँ ततेक दुलारू छलीह, जे ई सब कोनाक' बर्दाश्त करितथि । ओ एहि सभ व्यवहारसँ उबि गेलीह । सीमा नैहर तँ आबि गेलीह, मुदा बेटी कतेक दिन धरि नैहरमे रहती । ओकर तँ जन्मे भेल अछि, दोसराक कुल चलयबाक लेल । ई अलग गप्प भेल जे सीमा आब ओहि जोगरक नहि रहलीह । हमरा समाजमे विधवाकेँ पुनः घर बसयबाक अधिकार नहि छनि । पुरुषक लेल ई बंधन नहि अछि । विश्वम्भरजी आ राजेश्वर कतेको बेर दौलतपुर गेलाह । अंततः सीमाक हिस्सा कायम भेल, मुदा एहि शर्त्तक संग जे हमरा जिबैत एहि ठामक सम्पत्ति बेचल नहि जा सकैत अछि । यशवंतजीकेँ शंका छलनि जे कदाचित सीमा एहि ठामक सम्पत्ति बेचि क' नैहर ने ल' जाथि । तेँ ओ एहि तरहक शर्त्त रखने छलाह । विधवाक जीवन उद्येश्यहीन, अर्थहीन, रसहीन, गतिहीन, अमांगलिक, अमर्यादित होइत अछि । तेँ ओकर जीवन पहाड़ सनक होइत छैक । सीमा दाइ सेहो अपन पहाड़ सनक जीवनक शेष दिन दौलतपुरमे काट' लगलीह । किछु दिनक बाद विश्वम्भरजीक मृत्यु भ' गेलनि । हुनक कनियाँक मृत्यु पहिनहि भ' गेल छलनि । सब काज-क्रिया भेलाक बाद राजेश्वरजी सीमाकेँ बजौलनि आ अपन हिस्साक जमीन-जथा लेबाक आग्रह कयलथिन । सीमा सोचलनि, "हमरा सासुरमे सेहो नीक जमीन-जथा अछि जे हमरा गुजर-बसर लेल काफी अछि । हम नैहरक जायदाद ल' क' की करब ? एहन उपाय करी जे बाबूक बादो हमर नैहर कायम रहि सकए" । ओ राजेश्वरजीकेँ कहलथिन, "ककाजी, हम तँ आइ धरि अपनाकेँ आठ भाइ-बहिन बुझैत छलहुँ, मुदा आइ हमरा भाय सभसँ फराक क' देलहुँ ।"

राजेश्वर जी पूछलथिन, "से कोना ?"

सीमा बजलीह, "जायदादक हिस्सा लगा क' ।"

राजेश्वरजी बजलाह, "जकर जे हक छैक से कतेक दिन धरि केओ राखत ? कानूनो तँ इएह कहैत छैक । भैयारीओमे तँ भिन्न-बखरा

होइतहि छैक । एकरा कतेक दिन धरि केओ टारि सकैत अछि । ई परम्परा युग-युगान्तरसँ आबि रहल अछि ।"

सीमा बजलीह, "हमर एकटा इच्छा अछि, जे हम ई हिस्सा नहि ली आ हमर नैहर सभ दिनक लेल कायम रहए ।"

राजेश्वरजी पुनः पुछलथिन, "सीमा ! तोहर कहबाक अभिप्राय हम नहि बुझलहुँ । नैहर तँ तोहर कायम छौहे ।"

सीमा बजलीह, "जखन हम भाय सबसँ अपन हक-हिस्सा लेब, तँ नैहर कोना रहत ? हम चाहैत छी, हमरा आठो भाय-बहिनिक प्रेम बनल रहए । हमरा जीवनमे तँ कोनो एहन अवसर नहि होयत, जत' हम सब भाय-भाउजकेँ बजायब, मुदा एहिठाम तँ एहन अवसर कतेको होयतैक । ओहिमे हमरा नहि बिसरथि । हम मान-सम्मानक भूखल नहि छी । हमरा मात्र भाय-भाउजिक प्रेम चाही ।'' बजैत-बजैत सीमाकेँ बकौर लागि गेलनि । से देखि राजेश्वरजी सेहो अपनाकेँ रोकि नहि सकलाह । ओ सीमाकेँ अपना हृदयसँ लगा लेलथिन । हुनका सीमाक विचार सुनि बड़ आनन्द भेलनि, संगहि आश्चर्य सेहो । एहन तँ आइ धरि कतहु ने देखने छलहुँ आ ने सुनने छलहुँ । आइ धरि दोख्तरीक हिस्सा पयबाक लेल मारि-पीट देखल अछि, खून-खराबा देखल अछि, केस-फौदारी देखल अछि । एहन चमत्कार तँ पहिल बेर देखल अछि । एहन उत्तम विचार सीमा कत'सँ पओलनि । ओ आठो बापुत सीमाकेँ जानसँ बेसी मान' लगलाह । सीमा हुनकालोकनिक हृदय जीति लेलकन्हि ।

एहि सम्बन्धमे एकटा घटनाक उल्लेख आवश्यक बुझना जाइछ । राजापुरमे पं. श्रीधर छलाह । ओ दू भाय छलाह । एक भायकेँ एकटा बेटा आ दोसरकेँ पाँचटा बेटी छलन्हि । मरणोपरान्त श्रीधरक क्रिया-कर्म हुनकर भातिज कयलथिन । मुदा हुनका एकटा फूटल कौड़ी धरि नहि भेटलनि । सबटा जथा छोटकी बेटीकेँ लिखि देने रहथिन, एहि आशामे जे ओ सभक खोज-पुछारि करैत रहतीह । मुदा ओ ककरो किछु नहि देलथिन आ ने कहिओ खोजे-पुछारि कयलथिन । आगु चलिक' सब बहिनमे जे

भेल, कहि नहि सकैत छी । ओ अपना सहोदर बहिनकेँ किछु नहि देलनि आ एहि ठाम सीमा अपना पितिऔतकेँ सब किछु अर्पित करैत समाजक सोझाँ एकटा आदर्श प्रस्तुत कयलनि ।

ओना तँ सीमा सब व्रत करैत छलीह । विशेष क' एकादशी चौबीसो करैत छलीह । हुनक एकटा परोसी छलनि जकर नाम छलैक भंगू। भंगू बड़ लालची लोक छल । ओकर गृद्ध-दृष्टि सीमाक घराड़ी पर छलैक । ओ चाहैत छल जे सीमा कोनो एहन काज करथि जाहिमे बिशेष टाकाक जरुरति होइनि । ओ एकटा योजना बनौलक-सीमा दाइसँ एकादशीक उद्यापन करयबाक । ओहिमे चारि-पाँच लाख टाकाक जरुरति होइतैक आ सीमा दाइकेँ ओ घराड़ी बेचबाक लेल विवश क' देल जइतनि । ओ सब जखन-तखन सीमा दाइकेँ कह' लगलनि, "भौजी ! अहाँ एतेक व्रत-उपवास करैत छी । व्रतक उद्यापन किएक नहि करैत छी ? सुनैत छियैक, बिना उद्यापने व्रतक कोनो फल नहि होइत छैक । ई गप्प पंडित कका बजैत छलाह । दोसर गप्प उद्यापन कयने व्रतक अनिवार्यता सेहो नहि रहि जाइत छैक ।"

सीमा सेहो कतेक दिनसँ उद्यापनक विषयमे सोचि रहल छलीह । कारण आब सामर्थ्यक अभाव सेहो छलन्हि । ओना तँ ओ पचासी वसन्त देखि चुकल छलीह आ अपन सब काज कहुना ने कहुना कइए' लैत छलीह, मुदा आब दिक्कत होइत छलनि । ओहो पंडितजीकेँ बजा क' दिन तकबौलन्हि । देव-उठौन एकादशी क' उद्यापनक दिन तय भेल । कार्तिकमे ब्राह्मण भोजनक बड़ महत्व कहल गेलैक अछि । ताहूमे जँ धातृकक गाछ तर हो, तँ उत्तम । दान-दक्षिणासँ ल' क' ब्राह्मण लोकनिकेँ एकटा कम्बलक संग थारी, लोटा आ गिलास । करीब पाँच लाखक फेहरिस्त तैयार भेल । टाकाक इन्तजाम भंगू करताह । जखन भंगूसँ टाका माँगल गेल तँ ओ ओहि एवजमे घरक बगल केर घराड़ीक माँग कयलक । सीमा दाइ तैयार भ' गेलीह, मुदा भंगू ओकर दाम पचास हजारक हिसाबसँ लगौलक जखन कि ओकर भाव दू लाखक कट्ठा चलि रहल छलैक । एही लेल तँ भंगू सीमा दाइकेँ गाछ पर चढ़ौने छलनि । ओ ओकर मनसा बुझि गेलीह । ओ तुरंत अपना भाय सर्वेश्वरजीकेँ समाद पठौलनि । सर्वेश्वरजी

तुरंत पाँच लाख टाका ल' क' आबि गेलाह । सीमा दाइ केर यज्ञ खूब नीक जकाँ सम्पन्न भेलनि । ओहिमे सर्वेश्वर सातो भाइ, हुनकर कनियाँ आ बाल-बच्चा सब आयल छलथिन्ह । सीमा खूब प्रसन्न मनसँ हुनका सभक वर-विदाइ कयलथिन । यज्ञ खतम भेलाक बाद सौंसे गाममे शोर भ' गेल जे केओ अढ़ाई लाख रुपये ओ घराड़ी कीनि रहल अछि । आब तँ भंगूक निन्न हराम भ' गेलैक । ओ तँ खसा-पड़ा क' घराड़ी हासिल कर' चाहैत छल। मुदा सीमा दाइ लग ओकर होशियारी नहि चललैक । ओकरा ई अन्दाज नहि छलैक जे सीमा दाइक नैहर एतेक सहयोग क' सकैत छैक । भंगूकेँ प्रत्यक्ष रूपें सीमा दाइसँ गप्प करबाक साहस नहि भेलैक । हुनकासँ गप्प करबाक लेल भंगू दोसरकेँ पठौलक । सीमा दाइ बजलीह, "अढ़ाई तँ ओ हमरा द' रहल अछि, मुदा हमरा साढ़े तीन चाही ।" मोल-भाव होइत-होइत तीन लाख कट्ठा तय भेल । भंगूकेँ ई सौदा बड़ महग पड़लैक । जत' पचास हजार टाका भाव लगौने छल, ओत' तीन लाख टाका द' क' जमीन लेलक । सीमा जमीन बेचिक' टाका सर्वेश्वरकेँ देलनि । सर्वेश्वर तँ टाका नहि लैत छलाह । ओ बजलाह, "सीमा ई तँ अहींक टाका थीक, हमरा लग धरोहर राखल छल ।" सीमा बजलीह, "भैया हमरा अहाँ सबसँ किछु नहि चाही । टाका तँ हाथक मैल होइत अछि । मात्र एहि प्रेमकेँ बनौने रहब, सीमा तकरे भूखल छथि ।"

●

नर्कक यात्रा

लोक कहैत अछि, मरणोपरान्त प्राणी स्वर्ग वा नर्क जाइत अछि। जकर जेहन कर्म कयल रहैत छैक, तदनुसार ओकर स्थान निर्धारित कयल जाइत छैक। जँ नीक कर्म कयने छी तँ स्वर्ग आ जँ अधलाह कयने छी तँ नर्क। गदाधर मरणोपरान्त यमलोक पहुँचलाह। ओहि ठाम यमराजक अंदालतमे पेश कयल गेलाह आ चित्रगुप्त अपन लेखा-जोखा प्रस्तुत कयलथिन। तदनुसार यमराजक निर्णय भेलनि छओ मास नर्कमे वास कर' पड़त आ शेष अवधि स्वर्गमे। संगहि विकल्प सेहो देल गेल जे अपने जत' चाही, आगू वा पाछू दिन व्यतीत क' सकैत छी। यथा पहिने स्वर्ग बादमे नर्क वा पहिने नर्क बादमे स्वर्ग।

गदाधर यमराजसँ पुछलथिन्ह, ''श्रीमान्! हमरा कोन पापे नर्क आ कोन कृत्ये स्वर्ग प्राप्त भेल, ई बुझबाक उत्कट इच्छा अछि। की अपने एतेक कहबाक कृपा क' सकैत छी ?''

यमराज बजलाह, ''ओना तँ ई ककरो नहि कहल जाइत छैक, आ ने केओ पूछैत अछि, मुदा अहाँ पुछल अछि तँ सुनू। अहाँ दोसराक नीक करैत रहलहुँ, ककरो अधलाह नहि कयलहुँ, भगवानक कीर्त्तन-भजनमे लागल रहलहुँ, गरीबक उपेक्षा नहि कयलहुँ, एकरहि कारण स्वर्ग प्राप्त भेल आ माय-बापक सेवामे कनेक त्रुटि रहि गेल। एकरे कारण छओ मासक लेल नर्क भोग' पड़त।''

गदाधर बजलाह, ''माय-बापक तँ हम ख़ूब सेवा कयलियन्हि। ओ जखन जे कहैत छलाह, ओकर पूर्ति करैत रहलहुँ। ई चूक कोना भेल ?''

यमराज बजलाह, ''एक दिन अहाँक बाबूजी अहाँसँ जल मँगने छलाह। अहाँ ताश खेलि रहल छलहुँ। ओ दू-तीन बेर कहलन्हि, मुदा अहाँ झझकारि लेलियन्हि। ओ बेचारे चुप भ' गेलाह। आब अहीं कहू, ई चूक भेल वा नहि ?''

गदाधर निरुत्तर रहि गेलाह। आब हुनका सोझाँ मात्र वैहटा विकल्प छलनि, पहिने कत'। कतेको गोटेक मुँहे सुनने रहथि जे नर्कमे बहुत तरहक यातना भेटैत छैक। लोक जतेक कुकृत्य करैत अछि, ओकर फल ओकरा नर्कहिमे भोग' पड़ैत छैक। छओ मासक अवधि तँ हुनको बितयबाक छलनि। सोचलनि जे पहिने ओही ठामसँ भ' आबी। सुखक बाद जे दुःख अबैत छैक से बड़ कष्टदायी होइत छैक आ दुःखक बाद सुखक अनुभूति अत्यन्त सुखद प्रतीत होइत छैक। नर्कमे घुमैत-घुमैत हुनक नजरि वंशलोचनजी पर पड़ि गेलनि। बेचारे बड़ अपस्याँत छलाह। चारि गोटे सिरिंज लगाक' हुनका देहक शोणित बहार क' रहल छलन्हि आ ओ बेचारे बाप-बाप क' रहल छलाह। वंशलोचन गाममे महाजनी करैत छलाह। हुनका गामक लोक महाजन कहैत छलन्हि। गाममे ककरो कोनो बेगरता होइक तँ ओकरा महाजने शांत करथि। कतेको मंदिर बनबौने छलाह आ पूजा-पाठ सेहो खूब करैत छलाह। जखन महाजनक प्राणान्त भेलन्हि, तँ धिया-पूता सब नीक भोज-भात कयने छलन्हि आ श्राद्ध सेहो वृषोत्सर्ग। ओहिमे चारिटा गाय दान कयल गेल आ साँढ़ सेहो दागल गेल। सौंसे गाममे महाजनक जय-जयकार भ' गेल छलनि। गदाधरकेँ महाजनक दुःख नहि देखल गेलनि। ओ पुनः यमराजक ओहि ठाम गेलाह आ पुछलथिन, ''श्रीमान्! हम किछु जिज्ञासा ल' क' आयल छी। जँ एकरा अन्यथा नहि ली तँ हम किछु पूछ' चाहैत छी।''

यमराज बजलाह, ''ओना तँ एहि ठाम ककरहु किछु पुछबाक प्रावधान नहि छैक । सभक कर्मक फल पहिनहिसँ निर्धारित छैक । ओहिमे कोनो अदला-बदलीक गुंजाइश नहि छैक । तेँ पुछलासँ कोनो लाभ नहिं ।''

गदाधर बजलाह, ''जी नहि श्रीमान् ! हम कोनो फेरबदलक दृष्टिसँ नहि पुछैत छी । बस मनमे किछु शंका अछि, ओकरहि समाधान चाहैत छी ।''

यमराज बजलाह, ''हम अहाँक शालीनतासँ अति प्रसन्न छी आ दोसर एखन कोनो मुलाजिमो नहि आयल अछि । तेँ पलखतिमे सेहो छी । ओना एहि ठाम दम लेबाक पलखति नहि होइत छैक । एकटाक निपटारा भेल नहि कि तीनटा हाजिर । तेँ अहाँकेँ जे किछु पुछबाक हो से जल्दी पुछि लिअ' ।''

गदाधर बजलाह, ''महाजनकेँ कोन अपराधक दंड भेटि रहल छन्हि । ओ तँ बड़ लोकक उपकार कयने छथि ।''

यमराज बजलाह, ''अहाँ ककर गप्प करैत छी, वंशलोचनाक । ओ ककरो उपकार नहि कयने अछि । ओ लोककेँ सूदि पर टाका दैत छलैक आ खून बोकरा क' टाका ओसूल करैत छलैक । ओकरा सनक कसाइ तँ केओ नहि अछि । की अहाँ ओकर कृत्य देख' चाहैत छी ?''

गदाधर बजलाह, ''कोना देखायब ?''

यमराज बजलाह, ''एहि ठाम सभक भिडियोग्राफी छैक । ककरो संग अनर्गल नहि कयल जाइत छैक । आखिर हमरो ऊपर तँ केओ ने केओ छथि ।''

यमराज वंशलोचनक कृत्य देखायब शुरू कयलथिन । तखन जे गदाधर देखलनि, से देखि दंग रहि गेलाह । महाजन चारिटा गुण्डा पोसने छल । ओ सभ लोककेँ नीक-बेजायमे बझाक' महाजनक ओहि ठाम अनैत छल । महाजन ओकरासँ सादा कागज पर अउँठा लगबाबैत छल आ

जे मन होइत छलैक से ओहि कागज पर लिखि लैत छल । ओहिमे बेसी निर्धन, लाचार आ बेबस लोक रहैत छल, जे चाहिओ क' महाजनक किछु नहि क' सकैत छलैक । जे केओ गोंटे महाजनसँ कर्ज लेने छलाह से अपना जिबैत उरिन नहि भेलाह । जे केओ महाजनक कर्ज सधा नहि पबैत छलाह, महाजनक गुण्डाक शिकार होइत छलाह । महाजन जतेक मंदिर बनबौने छलाह, ओहिमे किछु पुण्य अवश्य भेलनि, मुदा पुण्यसँ बेसी पापे अर्जित कयलनि । मंदिर-निर्माण चंदाक टाकासँ भेल । कतेको चंदाक टाका महाजनक पेटमे चलि गेल । आइ धरि महाजन ककरो हिसाब-किताब नहि देलथिन आ हिसाब मँगबाक साहस ककरा छलैक ? ओहि ठामक भक्त आ भगवान दुनू तँ महाजने छलाह । जे मजदूर ओहिमे काज कयलक, ककरो पूरा मजदूरी नहि भेटलैक । मंदिरक सबटा चढ़ौना महाजनेक ओहि ठाम चल जाइत छलैक आ बेचारा पंडितकेँ भोजनहुँ पर आफति । आब कहू एहि कृत्यकेँ पाप कहबैक की पुण्य ?

गदाधर बजलाह, ''श्रीमान् ! सुनैत छी जे मरबाक समयमे गोदान कयलासँ मृतात्मा सुलभतासँ वैतरणी घाट पार करैत मोक्ष प्राप्त करैत छथि । महाजनकेँ तँ बृषोत्सर्ग श्राद्ध कयल गेलनि आ भोजो-भात तँ नीके कहल जयतनि । सात गामक जयबार कयने छलाह । कौआ, कुकुर तक अघा गेल छल ।''

यमराज बजलाह, ''ओहि भोजकेँ कौओ, कुकुर नहि खयलक । भोजक जतेक सामग्री छलैक, सभटा गरीबक खूनसँ सानल छलैक । चूड़ामे दुर्गन्ध आ दहीमे पिलुआ सह-सह करैत छलैक । कतेक लोक दुखित पड़ि गेल आ कतेकोकेँ पानि चढ़ाबए पड़ल छलैक । एकर प्रतिफल पाप होयतैक की पुण्य ? जहाँ धरि वृषोत्सर्ग श्राद्धक बात अछि, तँ सभटा गाय बिसुखले छलैक । पन्द्रह दिनक भीतर सभटा गाय कसाइक घर पहुँचि गेल । जाहि गायसँ गोदान कराओल गेल ओ ततेक बूढ़ छलैक, जे तेसरे दिन मरि गेलैक । आब कहू, जखन गाये नहि रहल, तँ महाजनकेँ वैतरणी के पार कराओत ? साँढ़ जे दागल गेल, ओ छुट्टा भरि गाममे घुमि रहल अछि । कतेकोक जजात चरि गेल । कतेको नेनाकेँ

पटकि देलक । दर्जनो भरि बच्चा ओहि साँढ़क मारल अपना हाथ-पयरक इलाज अस्पतालमे करा रहल अछि । एकर प्रतिफल की भ' सकैत छैक ? आइ धरि महाजन एकोटा गरीबक क्षुधा शांत नहि करौलक अछि । कतेक विधवाक सतीत्व नष्ट कयलक । ओकर विपन्नताक गलत फायदा उठौलक । दोसराक स्त्रीकेँ जे माय सदृश नहि बूझैत अछि, ओकरहि लेल ने ई नर्क बनल छैक ।''

गदाधर पुछलथिन्ह, ''की ओकरा जीवनमे सभ दिन नर्के लिखल छैक ?''

यमराज बजलाह, ''नहि, एक दिनक स्वर्ग सेहो छैक ।''

गदाधर बजलाह, ''से किएक ?''

यमराज बजलाह, ''एक दिन महाजनक जेबीसँ दसटा टाका खसि पड़ल छलैक । ओ कोनो भिखमंगाकेँ भेटलैक । ओ भरि पेट अघाक' खयलक आ ओकरा खूब आर्शीवाद देलक । ओही पुण्ये महाजनकेँ एक दिनक स्वर्ग भेटलैक ।

गदाधर बजलाह, ''एहि ठाम जे एतेक लोक कार्यरत छथि, से कोन भोग भोगि रहल छथि ?''

यमराज बजलाह, ''ओ अपन पूर्व जन्मक बदला ओसूलि रहल छथि । जँ सच पूछी, तँ स्वर्ग-नर्क किछु नहि थीक । जे केओ कमजोरीक कारण, सज्जनताक कारण वा अन्य विवशतासँ अपन बदला, अपना जीवन कालमे, नहि सधा सकलाह, से मरणोपरान्त हमरा मदतिसँ एकरा पूर्ण करैत छथि । ई गोदान, वृषोत्सर्ग, भोज-भात सब देखाबटी अछि । एहि सबसँ किछु होम'वला नहि अछि । सबसँ पैघ धर्म थिक, माय-बापक सेवा आ ककरो कष्ट नहि देब । गोसाईं जी लिखैत छथि- 'पर हित सरिस धरम नहि भाई । पर पीरा सम नहि अधमाई ।।'

गदाधरकेँ महाजनक कष्ट देखि दया आबि गेलनि । ओ पुनः यमराजसँ पुछलथिन, ''की हिनकर यातना कम नहि कयल जा सकैत छन्हि ।''

यमराज बजलाह, ''हम सभ किछु नहि क' सकैत छी । हमहूँ सब तँ विधाताक सेवक छियनि । हुनके आदेशक पालन करैत छी । जकर जे कयल कर्म छैक, ओही आधार पर फल दैत छियैक । ई अधिकार केवल महादेवकेँ छैन्हि । ओ कौखन ककरो प्रारब्धकेँ बदलि सकैत छथि ।''

गदाधर पुछलथिन, ''से कोना ?''

यमराज बजलाह, ''तपस्याक बलेँ ।''

गदाधर बजलाह, ''मुदा तपस्या नर्कमे रहि कोना सम्भव अछि ?''

यमराज बजलाह, ''कयलासँ की नहि होइत छैक ? ओ यातना सहैत ''ॐ नमः शिवाय'' केर जाप करैत रहताह । एहिसँ दूटा लाभ होयतन्हि । एक तँ यातनाक दुःख बिसरि जयताह, आ दोसर जखन महादेव प्रसन्न भ' जयथिन्ह, तँ एहि ठामसँ मुक्त भ' जयताह । करुणावस्थामे जे हुनकर नाम जपैत अछि, ओकरा पर जल्दीये प्रसन्न होइत छथि । हुनकर नामो तँ अढरनढरन छन्हि ।''

गदाधर पुछलथिन, ''जँ हमहूँ 'ॐ नमः शिवाय' केर जाप करी, तँ हमरहु नर्कक बास कम भ' सकैत अछि ?''

यमराज बजलाह, ''अवश्य भ' सकैत अछि ।''

गदाधर महाजनक भेट कयलनि आ हाल-चाल पुछलथिन । महाजन तँ गदाधरकेँ देखितहि लजा गेलाह । हुनका मन पड़ि गेलन्हि जे गदाधरक कतेक अपमान कयने छलाह । गदाधर कहने छलथिन्ह, एतेक पाप जुनि करू । मुदा से के बूझैत अछि ? दुनियाँ तँ एतेक होशियार भ' गेल अछि, जे ककरोसँ बेसी बूझनिहार केओ अछिये नहि । महाजन लजाइत बाजल, ''बौआ, ई कलियुग थिकैक । जतेक धर्म-कर्म कयलहुँ, सब बेकार । किछु काज नहि देलक । बुढ़बा लोक सभ कहैत छलथिन, 'कलियुगक उपकार हत्या बरोबरि' ।"

गदाधर नहि बाजल जे हम अहाँक भी.सी.डी. देखि क' आबि

रहल छी । ओ बाजल, "महाजन ! आब ई सभ छोड़ू । आब अहाँ केवल 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र केर जाप करू । केवल महादेवेटा अहाँक कल्याण क' सकैत छथि ।"

महाजन अपना जापमे लागि गेलाह आ गदाधर यमराजसँ कहलथिन, "श्रीमान् हम पहिने स्वर्गक सुख भोग' चाहैत छी ।"

यमराज बजलाह, "जेहन अहाँक इच्छा ।"

गदाधरकेँ स्वर्ग पठा देल गेलनि । ओहो 'ॐ नमः शिवाय' केर जाप शुरू क' देलनि । किछु दिनक पश्चात् गदाधर देखलनि जे महाजन सेहो स्वर्ग आबि गेलाह । हुनका नर्कसँ छुट्टी भेटि गेल छलनि ।



संकेत

एकटा कवि सम्मेलनमे राँची गेल छलहुँ । ओहि ठाम हमर एक-दूटा परिचित सेहो छलाह । एकटा परिचित तँ करीब दस बजे ट्रेन पकड़बाक लेल स्टेशन चल अयलाह । एक दिस अतिथि केर भोजन-भात आ दोसर दिस कवि सम्मेलन चलि रहल छलैक । रातिक बारह बाजि रहल छलैक । अधिकांश कविगण अपन काव्य पाठ क' चुकल छलाह । मात्र चारि वा पाँच कवि शेष छलाह ।

अचानक भगदड़ भ' गेल । सब केओ भागि रहल छल । सभटा व्यवस्था छिन्न-भिन्न भ' गेलैक । हमर तँ बुझू सर्वस्व लुटि गेल । चश्मा टुटि गेल, कविताक डायरी हेरा गेल आ किछु नव रचना जे मात्र एखन पन्ने पर धयल छल, अलोपित भ' गेल । चश्मा तँ पुनः बनि जायत, मुदा डायरी आ ओ पन्ना कत' भेटत ।

सम्मेलन स्थल पर घुप अन्हार भ' गेलैक । के कत' गेल, कोनो अता-पता नहि भेटल । हमहूँ कहुना क' बाहर आबि बौआइत-टौआइत एकटा परिचितक ओहि ठाम पहुँचलहुँ । हुनका अपन व्यथा कहल । हमर डायरी हुनके बच्चाकेँ हाथ लागल छलनि । से तँ हमरा भेटि गेल, मुदा ओ पन्ना नहि भेटल । तखन तँ जएह भेटल, सैह बहुत ।

ओ परिचित एकहु बेर ठहरबाक वा भोजन करबाक आग्रह नहि कयलनि । संभवतः ओ इहो बुझने होयताह, जे ई तँ अतिथि छथि । भोजन आ ठहरबाक इन्तिजाम तँ समिति कयनहि होयतनि आ से कयनहुँ छल । दोसर गप्प जे ओहो तँ ओतहि भोजन कयने रहथि । घरमे तँ भानस भेलो नहि छलनि । तखन आग्रहो करितथि तँ कोना ?

हमहूँ ओहि ठामसँ विदा भेलहुँ । कतहु बहरयबाक बाट नहि भेटि रहल छल । चारू कात झील जकाँ बुझा रहल छल । लगैत छल सम्मेलन कोनो टापू पर भेल हो । जेम्हरे देखी जले-जल देखाइ पड़ैत छल । आ ने केओ बाट देखौनिहार भेटए । कहुना बौआ-टौआ क' भोर कयलहुँ ।

भोरमे एकटा चाहवलासँ बाटक विषयमे पुछलहुँ । ओ बाट देखौलक, तखन आगू बढ़लहुँ । कनेक आगू बढ़ले छलहुँ कि एक गोटे भेट भ' गेलाह । ओ पुछलनि, "सर ! एम्हर कोना ?"

"हम चकित रहि गेलहुँ आ अख्यास' लगलहुँ जे ई के भ' सकैत छथि ? डूबैत के तिनकाक सहारा । हम सोचिये रहल छलहुँ कि ओ पुनः पुछलनि, ''अपने हमरा नहि चिन्हल की ?''

हम कहलियन्हि, ''जी, देखने तँ छी, मुदा कत' से मन नहि पड़ैत अछि ।''

ओ बजलाह, ''अपनेसँ शारदा संगीत सदन, भागलपुरमे भेट अछि ।''

हमरा तुरंत ध्यानमे आबि गेल ।

"के सुमनजी ?"

ओ बजलाह, "जी, हम ओएह सुमन छी । बिना सुगंधक सुमन ।"

सुमनजी देहसँ दिव्यांग छथि, मुदा मानसिक रूपेँ एकदम स्वस्थ । निर्मल आ निर्विकार छथि । परिवारमे कनियाँ, दूटा बेटी आ एकटा बेटा छन्हि । सब दिव्यांगे मुदा एतेक मेधावी आ संस्कारी, जकर वर्णन नहि हो । ओ हमरा ओहि दिन रोकि लेलन्हि । कतबो प्रयास कयलाक बादो

हुनक स्नेहपाशसँ हम अपनाकेँ मुक्त नहि करा पओलहुँ । हुनका लग रहलासँ हमरा आभास भेल, दुनियाँ कतेक विशाल छैक आ एहिमे कतेक प्रकारक लोक रहैत छथि । मानवता की थीक ? मानवताक सही चित्र हमरा सोझाँ सुमनजी प्रस्तुत कयलनि ।

हम जाहि विद्यालयमे संगीत शिक्षा ग्रहण करैत छलहुँ, ओहीमे सुमनजी सेहो छलाह । कहिओ काल गुरुजीक विलम्ब भेला पर हम विद्यालय केर संचालन करैत छलहुँ । ई गुरुजीक आदेश छलनि । सुमनजी हमरासँ जूनियर छलाह । पता नहि हुनका हम संगीत सिखौने छलहुँ वा नहि, मुदा हमरा ओ गुरुजीसँ कनेको कम आदर नहि दैत छलाह । ओ बजलाह, ''सर ! ई तँ हमरहि भागे अपने एहि ठाम आबि गेलहुँ । हम तँ अहाँसँ भेट करबाक लेल कतेक अहुरिया काटैत छलहुँ । शारीरिक रूपें दुरुस्त नहि रहबाक कारणे एकसर कतहु जाइयो नहि सकैत छी । अपनेक एकटा शब्द हमरा लेल गुरु मंत्रसँ बढ़िक' भ' गेल । जखन हम निराश भ' क' विद्यालयसँ आपस अबैत छलहुँ, तँ अपने बाट छेकि क' बाजल छलहुँ, 'निराश जुनि होउ । कयलासँ की नहि होइत छैक । केओ गोटे क्रोनहु गुण मायक पेटसँ सीखि क' नहि आयल अछि । तखन एहि लेल लगन होयबाक चाही, आ अहाँमे ओ लगन हम देखि रहल छी ।' ओएह अपनेक ओ शब्द हमरा एतेक उच्च्व शिखर पर चढ़ौलक । आइ हम समाहरणालय मे बड़ा बाबू छी । जतेक कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत अछि, से बिना हमर स्वीकृतिक अन्तिम नहि मानल जाइत अछि । सब कार्यक्रमक मंच संचालन हमहीं करैत छी । हमरा अहाँक भेंट तँ मंचहि पर होइत, मुदा समाहरणालयमे एकटा आवश्यक कार्यक्रम भ' गेलैक, आ हमरा ओहिमे जाय पड़ल ।"

हम हुनका कनियाँकेँ देखि, जे हाथमे चाहक कप ल' क' ठाढ़ि छलीह, बजलहुँ, ''मुदा ई तँ गेल छलीह । हिनका तँ देखने छलियनि । बहुत सुन्नर कविता पाठ कयलनि । जेहने स्वर, तेहने साहित्य, एहन संगम विरले भेटैत छैक ।"

सुमनजी बजलाह, ''हँ, संकेत ई गेल छलीह, मुदा दुनू गोटे तँ

एक-दोसराक लेल अपरिचिते छलहुँ ने ।''

हम जखन विदा भेलहुँ तँ मनमे बड़ कचोट भेल । खाली हाथ अयलहुँ । बच्चा सभक लेल किछु नहि अनलहुँ । मुदा इहो तँ अप्रत्याशिते भेट छल । तेँ किछु ल' क' अयबाक प्रश्ने नहि उठैत छल । हम एक सय टाका बहार क' हुनका बच्चाक हाथमे देबाक प्रयास कयलहुँ, मुदा ओ नहि लेलक ।

सुमनजी बजलाह, ''सर ! ओ नहि लेत । हम यैहटा तँ अपना बच्चाकेँ शिक्षा आ संस्कार द' पओलहुँ अछि । एक बेर डी.एम. साहेब कोनहुँ कार्यक्रममे एकरा पुरस्कार देलथिन ।

ई बाजल, 'श्रीमान् ! पुरस्कार सही हाथमे जयबाक चाही ।'

ओ बजलाह, 'मतलब ?'

ई बाजल, 'एकर सही अधिकारी हमर माँ छथि । हम हुनकहिसँ ई ज्ञान पाओल अछि ।'

डी.एम. साहेबकेँ ओकरा माँकेँ बजा क' पुरस्कार देमए पड़लन्हि । ओहो अति प्रसन्न भेलाह आ मंचसँ बजलाह, 'जे बच्चा एहन अछि, ओकर माय-बाप केहन होयत, कहि नहि सकैत छी ।''

हम पुछलियन्हि, ''एकटा गप्प कहू त', अहाँ एहि ठाम धरि कोना पहुँचलहुँ ।''

सुमनजी बजलाह, ''इहो एकटा संयोगेक गप्प थीक । हम राँचीमे यत्र-तत्र बौआइत छलहुँ । मात्र ट्यूशनसँ अपन गुजर-बसर करैत छलहुँ । एक दिन टाउन हॉलमे संगीतक कार्यक्रम छलैक । हम ओहि कार्यक्रमक श्रोता बनबाक लेल बहुत हाथ-पयर मारलहुँ, मुदा सब बेकार । ओहिमे प्रवेशक जखन कोनो जोगार नहि भेल, तखन हम समारोह स्थलसँ कनेक हटिक' अपन बाँसुरी बजा रहल छलहुँ आ राग छलैक वसन्त बहार ।

ओ आवाज सुनि एक गोटे गाड़ी रोकि नीचाँ उतरलाह आ पुछलनि, ''अहाँ तँ बड़ सुन्नर बाँसुरी बजा रहल छी । अहाँ के थिकहुँ ?''

हम तँ अपंग लोक छी श्रीमान् आ नाम अछि सुमन । हमर बाँसुरीक आवाज अपनेकेँ नीक लागल, एहि लेल धन्यवाद ।''

ओ पुछलनि, ''अहाँकेँ पता अछि, एहि ठाम संगीतक कार्यक्रम भ' रहल छैक ।''

''जी श्रीमान् !'' हम कहलियन्हि ।

ओ बजलाह, ''अहाँ ओहिमे किएक नहि गेलहुँ ?''

हम कहलियन्हि, ''श्रीमान्, ओहिमे जयबाक लेल ओकाति आ भेषक आवश्यकता होइत छैक ।''

ओ पुनः पुछलन्हि, ''की, अहाँ ओहिमे जाय चाहैत छी ?''

''अवश्य श्रीमान्'', हम कहलियन्हि ।

ओ तुरंत हमरा अपना गाड़ीमे बैसा लेलनि आ अपनहि संगे समारोहमे अनलनि । ओ छलाह भार्गव साहेब, ओहि ठामक जिला समाहर्त्ता । संगहि ओहि कार्यक्रमक उद्घाटन कर्त्ता । कार्यक्रम खतम भेल । समाहर्त्ता महोदय स्वयं माइक पर बजलाह, ''कार्यक्रम एखन पूर्ण रूपें खतम नहि भेल अछि । अपनेलोकनिक समक्ष हम एकटा बाँसुरी वादककेँ प्रस्तुत कर' चाहैत छी, जे देहसँ लाचार, मुदा स्वरसँ काफी सशक्त छथि । हुनक नाम अछि सुमन जी ।''

हम मंच पर गेलहुँ । मंच पर जयबासँ पूर्व भार्गव साहेबकेँ पयर छुबि गोड़ लगलियन्हि । पयर छुबितहि ओ गद्‌गद् कंठसँ आशीर्वाद देलनि । हमर भगवान तँ ओएह छलाह, जे हमरा मनक व्यथाकेँ बुझलन्हि । हमर वादन सभकेँ नीक लगलनि । परिणाम भेल, दोसर दिन समाहर्त्ता महोदय अपनहि कार्यालयमे हमरा लिपिक केर पद पर नियुक्त क' लेलन्हि । जतेक कोनो सांस्कृतिक आयोजन होइत छलैक, हम ओकर प्रभारी बनि गेलहुँ । दू वर्षक बाद भार्गव साहेब केर बदली भ' गेलन्हि । हुनक विदाइ समारोह भेल । ओहिमे हमरो अवसर भेटल । हम करुण रसमे अपन बाँसुरी वादन प्रस्तुत कयलहुँ । से सुनि सभक आँखि सजल

भ' उठल आ भार्गव साहेब तँ एतेक ने भाव-विभोर भ' गेलाह, जुनि पुछू। ओ हमरा अपना हृदयसँ लगा लेलनि । एहि तरहेँ जतेक समाहर्त्ता अबैत गेलाह, ओ हमरा मानैत रहलाह । एकर मुख्य श्रेय संगीतकेँ जाइत अछि ।

किछु दिनक बाद हमरा जीवनमे कमला अयलीह । कमला प्रथम श्रेणीसँ आइ.ए. पास छलीह । ओहो दिव्यांगे छथि आ दिव्यांग कोटामे हुनकर बहाली भेल छलनि । डी.सी. साहेब अपनहि पहल क' क' हमरा दुनूकेँ प्रणय सूत्रमे बन्हलनि । एहि तरहेँ हम दुनू प्राणी घरसँ कार्यालय धरि एकहि संग रहि गेलहुँ । हम पूर्व डी.सी. भार्गव साहेबक बड़ आभारी छी । हमरा तँ बुझाइत अछि, जँ धरती पर भगवान छथि, तँ ओ भार्गवे साहेबक रूपमे होयताह ।''

हमहूँ विचार कयलहुँ, जे हमर एकटा गप्प हिनका सुमनसँ सुमनजी बना देलक । पता नहि कखन ककरा कोन गप्पक कतेक असरि होइत छैक । हम तँ मात्र संकेत कयने छलियन्हि । ओ एकरा गंभीरतासँ लेलनि । ओना कतेको लोक एहन विचारकेँ एहि कानसँ सुनैत अछि आ ओहि कानसँ निकालि दैत अछि । हम सुमनजीकेँ एतेक दुर्गम बाट तय करबाक लेल धन्यवाद दैत विदा भेलहुँ ।

सुमनजी हमर पयर छूबाक प्रयास कयलनि, मुदा हम हुनका उठाक' अपना हृदयसँ लगा लेलियनि आ पुनः अयबाक अश्वासन देलियनि ।

तावत् ओतहि आयोजकलोकनि सेहो पहुँचि गेलाह आ असुविधाक लेल खेद व्यक्त कयलनि । हमहूँ सान्त्वना देलियन्हि, ''कोनो गप्प नहि, एहिना होइत छैक ।''

ओ लोकनि हमरा हाथमे एकटा लिफाफ थम्हा देलनि आ बजलाह, ''एहि अकिंचन सेवाकेँ स्वीकार कयल जाओ ।'' हमहूँ ओकरा खोलि क' नहि देखल । सम्भवतः ओ हमर विदाइ छल आ गाड़ी पर बैसि स्टेशन विदा भेलहुँ ।

●

अरजल भोग

चंदाक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छलन्हि । मुदा केओ सांत्वना देनिहार नहि । चंदा आइसँ पन्द्रह वर्ष पूर्व विधवा भ' गेलीह । संतानक नाम पर दू टा बेटा आ एकटा बेटी छन्हि । पैतृक सम्पत्ति ओतेक बेसी नहि । तखन जेठका बेटाक कमाइ पर आश्रमक गाड़ी घीचि रहल छथि । चारू गोटे जखन बैसैत छलीह, तँ अपनहिमे खूब कुकुरमारि करैत छलीह । एकरा उदण्डता बुझू वा अपरिपक्वता । किछु दिनक बाद छोटका बेटा आ छोटकी बेटीक ओएह स्वभाव बनि गेलन्हि । मुदा चंदाक लेखे धनि सन । ओ सबकेँ ल' क' बाहरे रहैत छलीह । बड़का बेटा सुमित विवाहक योग्य भ' गेलनि, मुदा विवाह नहि होइत छलनि । सम्भवतः गाममे नहि रहबाक कारणे वा परिवारक रंग-ढंग देखि ।

एक दिन चंदा कंचनसँ किछु गप्प-सप्प क' रहल छलीह । कंचनकेँ छोड़ि चंदाकेँ ककरोसँ नीक सम्बन्धो तँ नहि छलनि । कोनहुँ सामग्री घरमे सड़ा क' फेकि दैत छलीह, मुदा हाथ उठा क' ककरो नहि दैत छलीह । एकरा लेल कंचन सेहो कतेको दिन टोकने होयथिन, मुदा ओ गप्पकेँ टारि दैत छलीह । कहैत छलीह, हमरा किछु मन नहि रहैत अछि । कोनो वस्तु बगलमे रहत, मुदा ओहि लेल सौंसे घरमे ताकि अबैत छी । चंदा पुनः बजलीह, ''कंचन ! जँ नीक कनियाँ भेटैत, तँ सुमितक विवाह करा दितियैक ।''

कंचन बजलीह, ''हमर एकटा सम्बन्धी छथि । हुनक कन्या बड़ सुशील आ पढ़ल-लिखलि छथिन्ह. मुदा ओ विशेष तिलक नहि द' पओताह । एखन ओ बड़ लचरल छथि ।"

चंदा बजलीह, ''ठीक छैक, हमरा कनियाँ देखाउ । पसिन्न भ' जायत तँ कुटमैती क' लेब ।''

कंचन बजलीह, ''ओना कोना कनियाँ देखाओत ? पहिने ओ वर देखताह । लेन-देन तय करब । तखन ने कनियाँ देखाओत ।''

चंदा बजलीह, ''हमरा कनियाँ पसिन्न भ' जायत, तँ हम तिलक-दहेज नहि देखब । जैह भेटत से ल' लेब ।''

कंचन बजलीह, ''एहन नहि भ' सकैत अछि । पहिने तिलकक गप्प पर विचार क' लिअ' तखन कनियाँ देखब । पसिन्न होयत तँ कुटमैती करब, नहि पसिन्न होयत तँ नहि करब । कतेको ठाम एहन भेलैक अछि जे कनियाँ देखलाक बाद मोल-जोल बढ़ा देल गेलैक अछि आ सम्बन्ध टुटि गेलैक अछि ।''

चंदा बजलीह, ''ठीक छै, हमरा दू लाख टाका आ एकटा मोटर साइकिल चाही । इएह हमर माँग अछि ।''

कंचन बजलीह, ''हम तँ पहिनहि कहलहुँ जे ओ व्यक्ति कनियाँ नीक देत, मुदा एतेक टाका कहिओ नहि द' सकैत अछि ।''

चंदा बजलीह, ''ओ कतेक द' सकैत छथि ?''

कंचन कहलथिन्ह, ''ओ सब मिला-जुला क' मात्र डेढ़ लाख टाका द' सकैत छथि । एहिसँ बेसी किछु नहि द' सकताह । से जँ मंजूर हो तँ बाजू, आगू गप्प चलाबी ।''

चंदा कनेक काल सोचि क' बजलीह, ''ठीक छैक, मोटर साइकिलकेँ हटा दिऔक । टाका तँ दू लाख रह' दिऔक ।''

कंचन बजलीह, ''हम बुझैत छलहुँ, अहाँक मन धीरे-धीरे बढ़ि

रहल अछि । तेँ हम पहिने कहने छलहुँ, बिना गप्प तय कयने कन्या नहि देखायब ।''

चंदा पुछलन्हि, ''की, अहाँ डेढ़सँ आगाँ नहि जा सकैत छी ?''

कंचन बजलीह, ''जँ केवल इएहटा रहैत तँ अवश्य बढ़ितहुँ, मुदा सगुन-बरियाती सेहो ने अछि । एतबहिमे काँटा तीनक ऊपर चलि जायत ।''

चंदा बजलीह, ''ठीक छै, हमरा मंजूर अछि, कनियाँ देखाउ ।''

दोसरे दिन आभाक बाबूजी घुनेशजीकेँ टेलिफोन कयल गेलनि । सभ केओ हनुमानजीक मंदिर पर जमा भेलाह । कन्याक निरीक्षणक सबटा औपचारिकता कयल गेल । ओकर बाद सभ केओ अपन-अपन घर गेलाह । निर्धारित समय पर विवाह सम्पन्न भेल । घुनेशजीकेँ आभाक विवाहमे करीब चारि लाख टाका खर्च भेलनि । बरियातीक स्वागत-सत्कार अपूर्व ढंगसँ कयने छलाह । एहन स्वागत-सत्कारतँ हुनकर ज्येष्ठ भ्राता, जे लखपति कहबैत छथि, सेहो आइ धरि नहि कयने छलाह । अतिथि सत्कार जँ सिखबाक हो तँ घुनेशजीसँ सीखल जा सकैत अछि । सब किछु तँ लोके करैत अछि । के केहन अछि, से ककरहु माथ पर नहि लिखल रहैत छैक । घुनेशोजीक संग किछु एहने भेलन्हि । कुटुम्ब नीक नहि भेलथिन । यदा-कदा फरमाइस पर फरमाइस अबैत रहैत छलनि आ घुनेशजी ओकरा पूरा करबाक प्रयत्न करैत रहैत छलाह । एखन धरि विवाहक कर्जसँ मुक्त नहि भेल छथि आ शेष दूटा बेटी आर छन्हि । ई तँ भेल आभाक नैहरक हाल ।

आब ओकरा सासुरक हाल देखू । ओहि ठाम सासुरमे आभाक कोनो मान-दान नहि होइत छलनि । हुनक स्थिति बंधुओ मजदूरसँ बदतर छलनि । सुमित सेहो हुनक संग नहि दैत छलथिन । खाहे स्वभाववश वा मायक डरें कहि नहि सकैत छी । चंदाक बेटी आ छोटका बेटा नंगटे नचैत रहैत छलनि आ आभाकेँ सेहो सदिखन नचबैत रहैत छलनि । बेचारी आभा पाँच बजे भोरसँ ग्यारह बजे राति धरि खटैत छलीह, सभक भोजनक बाद भोजन करैत छलीह । हुनका भोजनक बेर दालि-तरकारी कहिओ

बचैत छलनि, तँ कहिओ नहियेँ । चंदा अपना हिसाबसँ बनयबाक लेल दैत छलीह । कहिओ ई नहि देखैत छलीह जे आभा खाइत छथि वा नहि । एहन दुर्दशा तँ एकटा सामान्य मजदूरोक नहि होइछ । एतेक भेलाक बादो आभासँ जखन टेलीफोन पर गप्प होइत छलैक, तँ ओ किछु नहि बजैत छलीह । अपना परिवारक दोषकेँ झँपबाक प्रयास करैत छलीह । मुदा किछु एहनो गप्प होइत छैक जे बिना कहनहुँ लोक गप्पक क्रममे बुझिये जाइत अछि । जखन केओ नैहरसँ आभाक भेंट करबाक लेल जाइत छलैक, तँ ओकरा प्रति परिवारक लोकक जे व्यवहार होइत छलैक, से परोक्ष रूपेँ सब किछु व्यक्त क' दैत छलैक ।

एक दिनक गप्प अछि । सुमित ऑफिससँ आयले छलाह । आभा हुनका लेल चारिटा बिस्कुट, एक गिलास जल आ एक कप चाह ल' क' हुनक कक्षमे गेलीह । तुरंत ओहि कक्षमे हुनक छोट भाय कीचक पहुँचल आ आभाकेँ ठेलिक' बहार करैत बाजल, ''अहाँ जँ आइसँ भौजीकेँ टोकबनि, तँ हम जहर खा लेब ।''

सुमित तँ आभाकेँ नहि टोकबाक लेल विवश भ' गेलाह, मुदा एहि प्रकरण पर चंदाक कोनो प्रतिक्रिया नहि भेलनि । खाहे छोटका बेटाक डरसँ वा घटना पूर्व नियोजित होयबाक कारणे । ई प्रकरण कतेको बेर भेलैक, मुदा आभा अपना मुँहसँ कहिओ किछु व्यक्त नहि कयलथिन । आ ने चंदा कहिओ एहि पर अपन प्रतिक्रिया देलथिन । आब प्रश्न उठैत अछि, जखन आभा नहि कहलन्हि, तँ अहाँ सब कोना बुझलियैक ?

चंदाक कथनानुसार दुनू समधिनमे गप्प भेलनि । ओहिसँ विदित भेल जे जखन आभा मायसँ गप्प करैत छलीह, तँ हुनक फोन टेप कयल जाइत छलनि । ई फोन टेप करब सामान्य स्थितिमे नहि भ' सकैत अछि । एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे कतहु किछु गड़बड़ी छैक । एहि आशंकासँ जे गप्प खुलि नहि जाय, फोन टेप कयल जाइत छलैक ।

किछु दिनक बाद चंदाक बेटीक विवाह भेलनि । बेटी अपना सासुरमे डंका बजा रहल छन्हि आ सभक नाकमे दम कयने छन्हि ।

समधि-समधिनसँ टेलीफोन पर गारा-गारी होइत रहैत छन्हि । मुदा की करतीह ? ककरहु स्वभाव तँ बदलल नहि जा सकैत छैक । करची जा धरि काँच रहैत छैक, ताधरि ओकरा लिबाओल जा सकैत छैक । पाकि गेलाक बाद लिबायब सम्भव नहि अछि ।

कालान्तरमे छोटका बेटा कीचकक सेहो विवाह भेलनि । दहेज सेहो नीक भेटलनि, मुदा कनियाँ अबितहि दुनू भैयारीमे बाँट-बखरा करबा देलकन्हि । एकर कारण तँ बहुत छलैक, मुदा मुख्य कारण छलैक कीचकक कमाइ । कीचक सुमितसँ बेसी उपार्जन करैत छलाह । चंदा सेहो कीचकेक संग रहब स्वीकार कयलनि । आभा हुनका सबकेँ फुटलीओ आँखिये नहि सोहाइत छलथिन ।

आभाकेँ दूटा बच्चा भेलनि । एकटा बेटा आ एकटा बेटी । दुनू खूब सुन्नर । आब आभाक दिन-दुनियाँ बदलि गेलनि । सुमितक सेहो भ्रातृ प्रेम आ मातृ प्रेमवला निशाँ उतरि गेलनि । ओ आभाकेँ खूब मान' लगलाह । ओम्हर कीचकक कनियाँ घरमे अपन जुति चलाब' लगलीह । चंदा जखन किछु बजबाक प्रयास करैत छलीह, तँ दुनूमे महाभारत ठनि जाइत छलनि आ कीचक सेहो चंदेकेँ नीक-बेजाय सुना दैत छलनि । हुनक स्थिति सांप छुछुन्नरि वला भ' गेलनि । हुनका अपन करनीक फल भेटि रहल छलनि । अरोस-परोसक लोक बजैत अछि, ओ अपन अरजल जथा भोगि रहल छथि ।

●

जानि क' बेसाहब

एक दिन टी.भी. देखैत छलहुँ । कार्यक्रम छलैक "कौन बनेगा करोड़पति" । कार्यक्रमक संचालन क' रहल छलाह सिने कलाकार अमिताभ बच्चनजी । ओहिमे एकटा प्रश्न आयल "कोहिमा किस देश में है" । ओकर विकल्पमे भारत सेहो छलैक । मुदा प्रतिभागी बजलीह, "सर ! ओपिनियन पोल" । अर्थात् जनताक राय । तुरंत जनतासँ राय प्राप्त कयल गेल । शत-प्रतिशत जनताक राय भेल भारत ।

बच्चन जी बजलाह, "ये तो सभी जानते हैं ।"

ओ बालिका बजलीह, "हाँ सर ! जानते तो सभी हैं, पर मानते नहीं ।"

ओहि उत्तरकेँ सभ केओ हँसि क' उड़ा देलनि, मुदा हमरा ओहि बालिकाक उत्तर एकदम सटीक आ भावपूर्ण लागल । दोसर अर्थमे एकरा व्यंग्यात्मक सेहो कहि सकैत छी । कोनो गप्पकेँ घुमाक' वा रोचक बनाक' प्रस्तुते करब ने व्यंग्य थीक । जेना कोनहु दुर्जन लोककेँ कहबैक, "अहाँ बड़ प्रतिभाशाली लोक छी । अहाँक प्रतिभा अतुलनीय अछि ।" सहीमे ओकरामे जे दुर्गुण छैक, तकर तुलना दोसरसँ नहि कयल जा सकैत छैक । ओ व्यक्ति एकरा अपन प्रशंसा बुझि गौरवे आन्हर भ' जाइत अछि ।

आब ओहि बालिकाक सारगर्भित उत्तर पर आउ । हम सभ जनैत छी, दोसराक माय-बहिनकेँ अपन माय-बहिन बुझबाक चाही । मुदा की एकरा मानैत छी ? जँ एकरा मानितहुँ, तँ एतेक अनाचार, दुराचार, व्याभिचार किएक होइत ? किएक भारतीय दण्ड विधानकेँ बदलबाक प्रयोजन होइत ? किएक एतेक निगरानीक आवश्यकता पड़ैत ? जखन कि सभ केओ जनैत छथि, एहिसँ बाँचब कठिन अछि । समाजमे बदनामी सेहो होइत छैक । मुदा मानैत केओ नहि छथि । सब केओ जनैत छथि, सत्य बाजब उचित अछि आ झूठ बाजब, चोरी करब, दोसराक धनक लोभ, कोनहुँ निरापराधकेँ दंडित करब, पापक कारण होइत अछि । मुदा एकरा कतेक लोक मानैत छथि ? लोक ई बुझैत अछि, जे हम जे क' रहलहुँ अछि, से हमरा छोड़ि दोसर केओ नहि देखैत अछि आ ने बुझैत अछि । वा हम जे करब सएह सही, बाँकी लोक जे करत से गलत ।

ई तँ सर्वविदित अछि, जे रावणक जन्म ब्राह्मण कुलमे भेल छलैक । ओकर पिता महर्षि विश्वश्रवा आ माय केकसी छलथिन्ह । केकसी राक्षसी प्रवृत्ति केर पोषक छलीह । रावण पिताक संस्कारसँ महान पंडित भेलाह, तपस्वी भेलाह आ उच्च मनोबल सेहो पओलन्हि । दोसर दिस माँक प्रभावेँ राक्षसी प्रवृत्ति, दोसरकेँ कष्ट देबाक प्रवृत्ति, अनाचार-दुराचारमे लिप्त रहबाक प्रवृत्ति पओलन्हि । रावण एतेक शक्तिशाली छलाह जे तीनू लोकमे हुनका सोझाँ केओ नहि ठाढ़ भ' सकैत छलैक । ओकरा चलबासँ वसुंधरा थरथरा उठैत छलीह, बजबासँ चारू दिशा काँपि उठैत छलैक । जखन ओकरो अंत भऽ गेलैक तखन हमरा सभक कोन गति । मुदा एकरा केओ नहि मानैत छथि । ई तँ सब केओ जनैत अछि, जे एहि ठामसँ केओ किछु नहि ल' जा सकैत अछि । सब खाली हाथ जाइत अछि । मुदा एकरा मानैत कहाँ केओ अछि ? जँ मानैत तँ एतेक बइमानी-शैतानी क' धनोपार्जन किएक करैत ? एक दोसरसँ घृणा किएक करैत ? ऊँच-नीचक भेद-भाव किएक रहैत ? एहि सम्बन्धमे एकटा कथा सुनल अछि–

एकटा सेठ जी छलाह । ओ गाममे साहुकारी करैत छलाह । लोक

केँ कर्जा-वर्जा दैत छलाह । मुदा दैत छलाह एक तँ ओसूल करथि दस । एहि तरहें समूचा गाममे हुनक साम्राज्य चलैत छल । बिना हुनका आदेशें एकटा पत्ता नहि हिलैत छलैक । गामक कमजोर वर्गक लोक हुनका भगवाने बुझैत छल ।

एक दिन ओहि गाममे एकटा सिद्ध महात्मा अयलाह । हुनक उपदेशसँ लोक बड़ प्रभावित भेल । सभ ठाम ओहि महात्माक चर्चा होमए लगलनि । सेठजी सेहो हुनकर चर्चा सुनलनि । हुनकर इच्छा महात्मासँ भेंट करबाक भेलनि । ओ महात्माक आश्रम गेलाह । ओहि ठाम बहुत भीड़ छलैक । ओ ओहिठाम महात्मासँ किछु पूछब उचित नहि बुझलन्हि आ हुनका विनयपूर्वक अपना ओहि ठाम अयबाक अनुरोध कयलथिन ।

हुनक आग्रह देखि महात्मा मंद-मंद मुस्कान बिखेरैत बजलाह, "हम तँ कतहु ककरो घर नहि जाइत छी । मुदा अहाँक ओहिठाम हम अवश्य आयब ।"

महात्मा अपना मनमे सोचैत छथि, 'हम तँ आयलो अहींक लेल छी । जँ अहाँक ओहि ठाम नहि जायब, तँ अहाँक कल्याण कोना होयत ।

सेठजी अपना घर चल गेलाह आ महात्माजीक आगमनक प्रतीक्षा कर' लगलाह । हुनक स्वागतक लेल रंग-बिरंगक पकमान आदिक इन्तजाम कर' लगलाह । हुनक स्वागतक लेल पुरजोर तैयारी कयलनि ।

दोसर दिन नियत समय पर महात्माजी सेठक ओहि ठाम पहुँचलाह । सेठजी खूब आदर-भाव देखौलथिन । हुनका भोजनक आग्रह कयलथिन । कतेको तरहक पकमान भोजनक थारीमे सजौलनि, मुदा महात्माजी भोजनक थारी दिस आँखि उठाक' तकबो नहि कयलथिन ।

ओ बजलाह, "सेठजी ! हमर एकटा नियम अछि । पूजाक बाद घर मे जे किछु उपलब्ध रहैत अछि, भगवानकेँ भोग लगाक' भोजन करैत छी । ओकर बाद कतहु किछु नहि खाइत छी । एहि नियमक पालन नब्बे वर्षसँ क' रहल छी । आइ एकरा कोना तोड़ि दिअ' । तें अपने एकरा अन्यथा नहि लेल जाओ । हँ, जाहि उद्देश्यसँ बजौने छी, से कहल जाओ" ।

सेठजीक मन तँ अपरतीव सन भ' गेलनि । ओ तँ सोचने छलाह जे महात्माजी खूब प्रेमसँ भोजन करताह आ व्यंजनक स्वादक बखान करताह । हमर खूब प्रशंसा करताह, मुदा से सब किछु नहि भेलनि । तखन पुनः सोचलनि, जे ई ओहि भोजनक महत्व की बुझताह ? ई तँ एहन भोजन कहिओ देखनहुँ नहि होयताह । जे भीख माँगि क' खायत से हमरा ओहि ठामक स्वाद कत' पाओत ।

महात्माजी सेठक मनोदशा देखि मंद-मंद मुस्किआ रहल छलाह । सेठजी बजलाह, "हे महात्मन् ! हमर भूत, भविष्य आ वर्त्तमानक विषयमे कहल जाओ" ।

महात्माजी बजलाह, "सेठजी, भूत आ वर्त्तमान तँ अपने जनितहि छी । हमरासँ भविष्यक विषयमे पुछू तँ उचित होयत ।"

सेठजी बजलाह, "तखन भविष्येक विषयमे कहल जाओ ।"

महात्माजी बजलाह, "अपने भूतमे जे किछु कयलहुँ आ वर्त्तमानमे जे किछु कर' जा रहल छी ओकर फल तँ भविष्येमे ने भोगब । तें अहाँक भविष्य नीक नहि बुझा रहल अछि ।"

सेठजी बजलाह, "हे महात्मा ! हमर उद्धार कोना होयत तकर उपाय कहल जाओ ।"

महात्माजी बजलाह, "सेठजी, मरणोपरान्त अपने जखन यमलोक जायब, तँ संगमे एकटा सूइ लेने चलब । ओहि सूइसँ हम अहाँक लेल स्वर्गक बाट बना देब ।"

सेठजी कहलथिन्ह, "हे कृपानिधान ! ई तँ सम्भव नहि अछि ।"

महात्माजी बजलाह, "से किएक ?"

सेठजी बजलाह, "मरणोपरान्त तँ हमरा लोक आगिमे जरा देत । हमर देह जरिक' खाक भ' जायत । मात्र हमर आत्माटा ऊपर जायत जे गीताक उपदेशमे कहल गेल अछि । तखन हम सूइ ल' क' कोना जायब ? सब किछु तँ एही ठाम रहि जायत ।"

महात्माजी बजलाह, "ई सत्य अहाँ जनैत छी ?"

सेठजी बजलाह, "जी ! खूब नीक जकाँ ।"

महात्माजी बजलाह, "तखन तँ अपने इहो जनैत होयब, जे मनुष्यक केवल कयल कृत्यहिटा संग जाइत छैक किएक तँ ओकरा ल' जयबाक लेल कोनहुँ सहाराक आवश्यकता नहि होइत छैक । अन्य वस्तुक लेल तँ कोनो ने कोनो सहारा चाही, जे मृत्युपरान्त सम्भव नहि अछि ।"

सेठजी बजलाह, "सेहो जनैत छी ।"

महात्माजी बजलाह, "सभ किछु जनैत छी । तखन मानैत किएक नहि छी ? किएक जानिक' एहि दुःखकें बेसाहि रहल छी ।"

सेठजी बजलाह, "मानैत तँ छीहे ।"

महात्माजी बजलाह, "नहि ने मानैत छी । जँ मानितहुँ, तँ एतेक पाप बटोरि क' नहि ने रखितहुँ । अहाँक धनमे कतेक लोकक आह, विवशता भरल अछि । जँ समय रहैत नहि चेतब, तँ इएह पाप अहाँक संग जायत । तदनुसार अहाँक कर्म निर्धारित कयल जायत ।"

एतेक सुनैत देरी सेठजी महात्माजीक चरणसँ लेपटाय गेलाह आ अपना उद्धारक बाट प्रशस्त करबाक लेल अनुनय-विनय कर' लगलाह ।

महात्माजी कहलथिन, "सभसँ पहिने जकर जे वस्तु हड़पने छियैक से आपस क' दिऔक । पुनः जे अत्यन्त गरीब अछि, ओकरा बीच धनक बँटबारा करू आ अपने प्रभुक शरणमे लागि जाउ । शायद, प्रभु कृपा क' देथि किएक तँ ओ दीनदयाल छथि, करुणानिधान छथि, आ दुःखभंजन सेहो छथि ।"

महात्मा तँ चलि गेलाह मुदा सेठजी गुन-धुन कर' लगलाह ।

●



नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

जन्म	:	2 जनवरी, 1950
जन्म स्थान	:	भैरव बलिया (मातृक)
पिता	:	स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र सरल-चित्त, साधु-स्वभाव उदारमना एवं धर्मपरायण
माता	:	स्व. श्रीमती गोसाउनि देवी करुणामयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा
पत्राचारक पता	:	ग्राम एवं पत्रा. उफरदाहा, थाना- बहेड़ा, जिला- दरभंगा (बिहार)
शिक्षा	:	स्नातक कला, संगीत प्रभाकर।
वृत्ति	:	लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (अवकाश प्राप्त)।
रुचि	:	गीतकार, सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य कथा आ कविताक माध्यमे (मैथिलीमे)
प्रकाशित पोथी	:	विधात्री - (गीत एवं कविता संग्रह) गामघर - (कथा संग्रह) सुजाता - (उपन्यास) महारानी कैकेयी - (व्याख्यात्मक निबंध) गुदड़ीक लाल - (उपन्यास) अनठिया कुकुर - (उपन्यास) सुन्दर काण्ड - (सम्पादन-संपादक)
उपाधि	:	'कवि शिरोमणि' (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार) 'अंग प्रदेश-साहित्य-साधना सम्मान' राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर। 'मैथिली पराग' (उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुलतानगंज, भागलपुर। वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान-2010 (मिथिला परिषद्, भागलपुर।
सम्पर्क	:	08986261756